[२] अव्वल मुक्ख करके सतगुर
प्रीत करना चाहिये जिसका ऐसा
है उसको सब एक दिन प्राप्त है –
जो नाम और सत लोक के खोज
लगा है और सतगुर से प्रीत नहीं है
खाली रहेगा – मुक्ख प्रीत सत
को है वह सब से जुदा कर देगी ।

[३] अपनी हालत को अपने
... देखते चलना चहिये कि
... आदिक यह सब हमारे व
कि नहीं अगर नहीं हैं तो अपने
अभ्यास में लगे रहना और किस
बाद बिबाद न करना – इस बच
सदा याद रखना चाहिये ।

[४] सतगुर फर्माते हैं – कि मेरा
सेवकों का संग परमार्थ का है
जो कोई मन के बिकारों में बर्ते
उनका संगी नहीं हो सक्ता ।

[५] कर्म उपासना ज्ञान बिज्ञान

[११] मालिक तुम्हारे में एसे है जैसे फूल में खुशबू फूल दीखता है पर खुशबू नहीं देखती – जिनके नासका इंद्री है वह फूल में खुशबू को पहिचान सक्ते हैं- एसेही जिनको गुर ज्ञान है वह मालिक को अन्तर में जानते हैं ॥

[१२] तुम लोग जो भजन करते हो सो तुम्हारा भजन ऐसा है जैसे कोल्हू का बैल कि दिन भर चला और रहा घर में पर अहंकार होगया कि मैं बाराह कोस चला ऐसे ही तुम्हारे में यह मनरूपी बैल है कि भजन में बैठता है पर चढ़ता नहीं इस से अहंकार बढ़ता है कि मैंने दो घंटे भजन किया पर रस नहीं आता है जो रस आवै तो अहंकार क्यों होवै सो जब तक त्रिकुटी के परे नहीं जाओगे निर्मल रस नहीं आवेगा ॥

[१३] कुल जीव अधिकारी भक्ती के हैं सो पूरा अधिकार तो भक्ती का भी नहीं है — पर भक्ती में बिगाड़ नहीं है और मालिक को भक्ती प्यारी है । और कुछ प्यारा नहीं है — और भक्ती सतगुर की मंजूर है और किसी की भकती से वह राज़ी नहीं है ॥

[१४] ऊंट वाले के हाथ में एक ऊंट की नकेल होती है — एक के बाद एक हज़ारहा चले आते हैं — इसी तरह गुरमुख तौ एक ही होता हैं उस के प्रताप से बहुत से जीवपार होजाते हैं॥

[१५] सतसंग पारस है — इस में जो सच्चा होकर लगा वह कंचन होगया । जैसे पारस के परसे लोहा कचंन होता है — और जो अन्तर रहा याने कपट रही तो वह लोहेका लोहा रहा और सतसंग तो पारस ही है ॥

[१६] जो लोग सतसंगी वक़्त सेवा के आपसमें क्रोध में भर जाते हैं उनको मुनासिब नहीं है — यह आदत संसारी जीवों की है — कि जब उन के किसी काम में विघन पड़ा तो वह क्रोध में भर आये जो ऐसी ही आदत सतसंगी की भी हुई तो वह और संसारी एक हुये कुछ फ़र्क़ नहीं रहा सतसंगी को छिमा होनी मुनासिब है — यह क्रोध काल का चक्कर है उस को मत धसने दो — जिस वक़्त कोई हट ज़बर करे उस वक़्त क्षमा करनी चाहिये ॥

[१७] सुन्ना और समझना सहज है क्योंकि वाहर से सुन लिया और समझ भी लिया और अन्तर में नहीं धसा — तो वह सुन्ना और समझना ब्रथा है और अन्तर में जो धसेगा तो उसका

बरताव भी उस के अनुसार होगा - जो अन्तर में होगी वही बाहर निकलेगी - यह नेम है सो जो सतसंगी हैं उन को हर वक़्त विचार रखना ज़रूर है - और सतसंगी को हर वक़्त विचार रखना ज़रूर है और (बिना सतगुर स्वामी को सिर पर रक्खे हर वक़्त विचार का ठहरना बनता ही नहीं है याने बिना हिमायती के यह मन बैरी विचार कब आनेदेता है - इस से तुमको मुनासिब है कि हर वक़्त सतगुर स्वामी और शब्द को अपने सिर पर रक्खे रहो इस को कभी मत बिसारो ॥)

[१८] जैसे सब की चाह संसारी पदार्थों में जन्म जन्म से चली आती है ऐसे ही परमारथ की भी होवे तब कुछ काम इस जीव का बने ॥

[१९] यह संसार जो कि उजाड़ है

इसको असली समझ रक्खा है और उसके पदार्थ जो कि नाशमान हैं उन को सत्त जानते हैं और जो इस में सत्त है उस की खबर भी नहीं है तो क्योंकर इस जीव का गुज़ारा होवे और कैसे सतसंग में लगे ॥

[२०] जीव को संतों के संग का अधिकार ही नहीं है — कुछ काल सत संग करै तो अधिकारी यहां के बैठने का होवे और बहुतेरा समझाओ पर अपनी बुद्धी की चतुराई पेश किये बिना मानताही नहीं है — और यहां बुद्धी का काम नहीं है — यह मारग तो प्रेम का है — सो प्रेम बिना सत संग कैसे आवे और सतसंग में काल लगने नहीं देता है — फिर जीव भी लाचार है इसका दख़ल नहीं है ॥

[२१] संतों से ऐसी प्रीत करनी

चाहिये जैसे जल मछली की प्रीत है ऐसी प्रीत जिसने संतों से करी तो वह उनका प्यारा हुआ और वही जगत से न्यारा हुआ ॥

[२२] मन को और गुरू को सनमुख खड़ा करै उस वक़्त जो गुरू का हुकम माना तो मनको मारा और जो मन के कहने में चला तो गुरू से बेमुख हुआ सो जिस को दर्द है वह तो गुरू को ही मुक्ख रक्खेगा और जिस को खौफ़ नहीं है वह मन की लहरों में बहेगा ॥

[२३] संतों की बानी का पाठ करने और याद करने से कुछ नहीं होगा जब तक कमाई न होगी इस वास्ते जो बचन सुनो उसकी कमाई करो नहीं तो सुनना और समझना बे फ़ायदह है ॥

[२४] जैसे आज कल के जीवों की

प्रीत बर्त और तीर्थ में है – उस्का चौथा हिस्सा भी सतगुर के चरनों में नहीं इस सबब से इन के अन्तर में कुछ नहीं धसता है – सुनें तो ऊपरसे और दर्शन करें तो ऊपर से – नाम लें तो ऊपर से – जो सतगुर पूरे मिलें तो सब द्वारों से जिनका ज़िकर ऊपर लिखा है अन्दर में धसावें बिना सत गुर के किसी की ताक़त नहीं जो अंतर में धसावे ॥

[२५] जब तक अपने वक़्त के पूरे गुरू की टेक न बांधोगे कभी चौरासी से नहीं बचोगे – जो पिछले संतों के घर के हो और संतों की टेक रखते हो और अपने वक़्त के पूरे सतगुर पर भाव नहीं है – और उनका बचन नहीं मानते हो तो भी चौरासी से नहीं बचोगे क्योंकि पिछले जो संत होगये हैं उनका

भी यही हुकम है कि वक्त के पूरे सत गुर की सरन लो तो कारज होगा।

[२६] इस मन मस्त को वही बस करेगा जिसको सच्ची चाह मालिक के मिलनेकी है जैसे मस्त हाथी जंगल में फिरता है और जिधर चाहै उधर चला जाता है कोई नहीं रोकता है और जब हाथीवान का अंकुस उसके ऊपर लगा तब वही मस्त हाथी बादशाह की सवारी में आया और सुख से रहने लगा इसी तरह जो गुरमुख हैं वही महल में दखल पावेंगे और जो निगुरे हैं वह चौरासी जावेंगे इससे जहां तक हो सके गुर मुखता करने में मेहनत करनी चहिये — और गुरू पूरे होने चाहिये ॥

[२७] जो कुछ हम कहते हैं और सुनाते हैं बमूजिब जीवों के अधिकार के

है इस वक़्त कोई पूरा अधिकारी नज़र नहीं पड़ता है जो बड़े परमार्थी कहलाते हैं वह सैकड़ों चेले करते हैं – और चाहे गिरहस्ती होय चाहे भेख – बिचार माला पढ़ाकर ज्ञानी बना देते हैं – सो ऐसे गुरू और चेले दोनों भर्म में पड़े हैं उनको सिवाय अहंकार के और कुछ हासिल न होगा – और जो गुर नानक के घर में हैं उनका यह हाल है कि ग्रन्थ साहब को पोट बांधकर रख लिया है और आरती उतारते हैं और डंडवतें करते हैं और बहुत रोज़ तक ऐसा किया पर ग्रन्थ में से यह आवाज़ नहीं आई कि नाम चित्त आवे और सुखी रहो और यह नहीं ख़्याल करते हैं कि ग्रन्थ साहब में सतगुर संत की महिमां है उनका भी खोज करना चाहिये या नहीं और जो बचन गुरू ने इस वक़्त के वास्ते फ़र्माया है उसको नहीं मानते

ज़रा पहिले विचारो कि जब गुरू नानक प्रघट हुये थे तब ग्रंथ कहां था और उन्होंने अपने ही बचन से जीवों को समझाया होगा इससे यह ज़ाहर है कि ग्रंथ की ताक़त नहीं है कि संत बना देवे और संत ग्रंथ के आसरे नहीं हैं और संतों को ताक़त है कि संत बना देवें और जब चाहें तब ग्रंथ रचलेवें और बहुत से ऐसे हैं कि जिन्होंने सौ सौबार पाठ किया — पर यह ख्याल में न आया कि ग्रंथ में क्या बचन लिखा है ऐसे पाठ करने से कुछ काम न होगा संत सतगुर का खोजना लाज़िम है कि जो सब भर्म को मिटावें — सिवाय इसके चौरासी से बचनेका और कोई उपाव नहीं है ॥

[२८] संतों का सतसंग ऐसा कल्पतरु है कि सब बासना दूर कर देता है पर

आज तक किसी को मिला नहीं-इस लिये सतसंग निज कल्पतर है इससे बारम्बार सतसंग करना चहिये - बहु त न बनसके तो थोड़ा करै पर सचौटी के साथ करै कपट से न करै कि उस में कुछ फ़ायदह नहीं है ॥

[२९] जैसे हीरा मोतीको बींधता है पत्थर को नहीं बींधता है - इसी तरह संतों का बचन अधिकारीको असर करता है अनअधिकारी को फ़ायदह नहीं करता पर जो अनअधिकारी भी बराबर सतसंग करता रहेगा तो एक रोज़ लायक़ सत संग के होजावेगा - पर दिक़्क़त यह है कि उस से सतसंग में ठहरा नहीं जावेगा ॥

[३०] प्रथम धुंधूकार था उस में पुर्ष सुन्न समाध में थे जब तक कुछ रचना नहीं हुई थी - फिर जब मौज हुई -

तब शब्द प्रघट हुआ – और उस से सब रचना हुई पहिले सत्तलोक और फिर सत्तपुर्ष की कला से तीनलोक और सब बिस्तार हुआ ॥

[३१] वह जो पारब्रह्म परमातमा है – सो सब जीवों के पास मौजूद है – पर संसार रूपी भौसागर से किसी को निकाल नहीं सक्ता है – बजाय निकालने के और रोज़ बरोज़ फसाता जाता है और जब वही पारब्रह्म परमात्मा सतगुर रूप रखकर उपदेश करता है – तो वह संसार के बंधनोंसे इस जीव को छुड़ा सक्ता है – पर लोग ऐसे अन्धे हैं कि इस स्वरूप को जो उद्धार करने वाला है नहीं पकड़ते और ग़ायब का ध्यान करते हैं – सो वह ध्यान उनका क़बूल नहीं होता – क्योंकि मालिक ने यह क़ायदह मुक़र्रर करदिया है कि जो सतगुर द्वारे मुझसे मिलेगा उससे

में मिलूंगा – निगुरे को मेरे दरबार में दख़ल नहीं है अब जो कोई यह कहे कि जीव संतों का बचन क्यों नहीं मानते हैं – सो सबब उस्का यह है कि ख़ौफ़ और शौक़ नहीं है जिसको मालिक का ख़ौफ़ होगा उसको शौक़ मिलने का भी होगा पहिले ख़ौफ़ होना चाहिये ॥

[३२] आज कल के गुरू चेला तौ कर लेते हैं और पत्थर पानी में जीव को लगा देतेहैं – चाहिये तौ यह था कि अपने से प्रीत कराते सो वह क्या करें उन्होंने आप गुरू से प्रीत करी होती तौ वह भी अपनी प्रीत कराते ऐसे जो गुरू हैं उनका नाम गुरू नहीं होसक्ता है ॥

[३३] जिस्को दर्द परमार्थ का और डर चौरासी का है उस्को मुनासिब यह

है कि पहिले पूरे गुरू को पकड़े क्योंकि जब तक गुरू से प्रीत न होगी अंता करन शुद्ध नहीं होगा और जब तक अंताकरन शुद्ध नहीं होगा तबतक नाम फ़ायदह नहीं करेगा जैसे किसान जब बीज डालता है – तो पहिले खेत को कमा लेता है जो बे कमाये हुये बीज डाल दे तो कुछ नहीं पैदा होता – इसी तरह हिर्दय रूपी ज़मीन की कमाई के वास्ते गुरू का प्रेम है जब तक गुरू का प्रेम नहीं होगा नाम फ़ायदह नहीं करेगा और आज काल के लोगों का यह दस्तूर है कि नाम का सुमिरन घर बैठे किया करते हैं – और गुरू से कुछ मतलब नहीं – सो ऐसे लोग दोनों से ख़ाली रहेंगे – न गुरू ही मिला और न नाम ही मिले – क्योंकि नाम गुरू के इख़्तियार में है सो गुरू से प्रीत नहीं करी फिर नाम कैसे मिले ॥

[३४] ब्रह्मा से आदि लेकर जितने देवता हैं - और राम और कृष्ण से आदि लेकर जितने अवतार हुये हैं इन सब का दरजह संतों से नीचा है और संतों का दरजह सब से ऊंचा है यह सब कामदार और वज़ीर हैं और संत बादशाह हैं वज़ीर और कामदारों से बादशाह हमेशह बड़ा है॥

[३५] सतसंग मुक्त है - इसमें पड़े रहने से बहुत से फ़ायदे होते हैं - यहां तक कि जैसे पत्थर जो पानी में पड़ा रहता है तो सीतल रहता है - अगरचे अंतर में उस्के सीतलता असर नहीं करती है पर फिर भी जल के बाहर के पत्थरों से बहतर है ऐसे जो जीव बाहर से सतसंग में आ बैठते हैं और अंतर में उनके नहीं धस्ता है तो कुछ हर्ज नहीं है संसारी जीवों से फिर भी

बेहतर हैं – अहिसतह अहिसतह अं
तर में भी असर होने लगेगा ॥

[३६] जब तक स्वासा है गुर भक्ती
करे जाना चाहिये गुर भक्ती कुल मा
लिक की भक्ती तो है और उनसे कुछ
न मांगे उनको इख़्तियार है जब वह
अधिकारी देखेंगे जो चाहेंगे सो बख़्
श देंगे ॥

[३७] सतगुर को दीनता पसन्द है जो
दीनता सच्ची है तो न मन की चंचलता
का फ़िक्र करै और न रस्ते के तोशे
का सोच करै एक सतगुर की सरन
दृढ़ करै और उनकी ओट लेवे बेड़ा
पार है ॥

[३८] जिनके जड़ चेतन की गांठ बंधी
है वह काम क्रोध लोभ मोह अहंकार
में बरतते हैं – कभी सील छिमा संतो

ख का बरताव होजाता है सोभी ऊपरी अंतर में तो वही रस लेते हैं – और जिनकी जड़ चेतन की गांठ खुली हुई है उनके कभी काम क्रोध लोभ मोह अहंकार पास भी नहीं आते हैं ॥

[३९] मालिक सब के साथ हरवक्त मौजूद रहता है – अच्छा और बुरा जो कोई काम करता है सब की बरदाश्त करता है जब उस्की मर्ज़ी होगी तब उससे वह काम नहीं करावेगा और किसी के कहने से कोई नहीं मानेगा नाहक़ क्यों किसी को दुखाना जिस्को अपने ऊपर सर्धा और प्रतीत होवे उसके समझाने में दोष नहीं है और वही मानेगा ॥

[४०] कर्मी-और शास्त्री- और ज्ञानी कभी संतों के बचन को नहीं मानेंगे यह संसारी चाह वाले और बुद्धि के बिलास वाले हैं उन को संतों के सतसंग में

आना भी मुनासिब नहीं है – और निर्मले-सन्यासी—ज्ञानी—वेदांती—निहंग-और मूरत तीर्थ व्रत वाले और जो जो वेद शास्त्र पुरान कुरान के कीड़ी हैं और परमारथ का दर्द नहीं रखते वे सब इसी तरह के लोगों में से हैं इनसे संतों को सिवाय तकलीफ़ के और कुछ हासिल न होगा क्योंकि इन को खोज सतगुर का नहीं है सिर्फ़ टेकी हैं ॥

[४१] इस कलयुग में तीन बातों से जीव का उद्धार होगा – एक सतगुर पूरे की सरन – दूसरे साध संग और तीसरे नाम का सुमिरन और सरवन-और बाकी सब झगड़े की बातें हैं – इस वक़्त में सिवाय इन तीन बातों के और कामों में जीव का अकाज होता है ॥

[४२] यह जीव संसार में वास्ते तमा शा देखने के भेजा गया था – पर यहां आन कर मालिक को भूल गया – और तमाशे में लग रहा – जैसे लड़का बाप की उंगली पकड़े हुये मेला देखने को बाज़ार में निकला था सो उंगली छोड़ दी और मेले में लग गया – सो न मेले का आनंद रहा – और न बाप मिल ता है – मारा मारा फिरता है – इसी तरह से जो अपने वक़्त के सतगुरकी उंगली पकड़े हुये हैं उन को दुनियां में भी आनंद है और उनका परमारथ भी बना हुआ है – और जिनको वक़्त के सतगुर की भक्ती नहीं है – वह यहां भी दर ब दर मारेमारे फिरते हैं और अंत को चौरासी में जावेंगे ॥

[४३] जो शब्द का रस चाहे तो मुना सिब है कि एक वक़्त खाना खावे

और जो हर रोज़ दो या तीन बार खाना खावेगा उसको शब्द का रस हरगिज़ नहीं आवेगा ॥

[४४] जिन्दगी वही सुफल है जो सतगुर सेवा और मालिक के भजन में लगे और धन वही सुफल है जो संत सतगुर और साध की सेवा में ख़र्च होवे — और लड़के बाले और कुटम्बी इसके वही हैं जो परमारथ में संग देवें ॥

[४५] जो सतगुर की प्रीत और उनका निश्चा करेगा उस को शब्द भी मिलेगा और जिसको सतगुर की प्रतीत नहीं है वह शब्द में भी ख़ाली रहेगा ॥

[४६] काम क्रोध लोभ मोह अहंकार की जड़—और आसा त्रिष्णा की मैल अंताकरन में है सो यह मैल सतगुर की प्रीत से जावेगी ॥

और प्रेम आवेगा जब प्रेम आया तब ही काम पूरा हुआ ॥

[४७] सेवक का धरम यह है कि सिवाय सतगुर के और सब की सरन तोड़ देवे और सतगुर को ही मुक्ख करके पकड़े—और जो सेवक ऐसा नहीं करेगा तो सतगुर अपनी दया से आप पकड़ेंगे पर उसको ज़रा तकलीफ़ होगी ॥

[४८] चेतन की सेवा से चेतन को पावेगा—और जड़ की सेवा से जड़ को पावेगा—सो सिवाय सतगुर के और सब जड़ हैं— एक संत सतगुर ही इस संसार में चेतन हैं—इस वास्ते उनकी सेवा सब जीवों को जो अपना भला चाहते हैं और चेतन से मिला चाहते हैं करना चाहिये ॥

[४९] पहिले गुरमुखता होनी चाहिये बाद इसके नाम मिलेगा और जब तक

गुरु मुखता नहीं होगी नाम कभी नहीं मिलेगा—इस वास्ते सब को चाहिये कि गुरमुख होने में मेहनत करें ॥

[५०[संसारी जो अपनी तमाम उमर संसार में खोदेते हैं—अंत काल इकेले जाते हैं - मरघट तक उनके सब संग रहते हैं - अंतकाल का कोई संगी नहीं है - और जो सतसंगी हैं उन के सतगुर सदा संग रहते हैं - और यह बात जाहर है - कि इकेले तकलीफ़ होती है - याने बिना दो के संसार में भी - और अंत को भी तकलीफ़ रहती है - यहां तो स्त्री और पुत्र इन के संग आराम रहता है - और अंत को गुरू सहाय होते हैं - इस देहधरे का यही फल है - कि सतगुर का संग बार म्बार करे कि अंत को फिर तकलीफ़ न होवे जो बाहर से न बने तो उनको अपने अंतर में सदा संग रक्खे ॥

[५१] जैसे वाचक ज्ञानी बिना प्रेम के खाली फिरते हैं—ऐसे ही सतगुरु भक्त भी बिना प्रेम के खाली रहता है जब तक प्रेम नहीं आवैगा—तब तक कुछ प्राप्ती नहीं होगी—पर इतना फ़र्क़ है कि वाचक ज्ञानी ने तो प्रेम की जड़ ही काट दी—उसको कभी कुछ हासिल नहीं होगा—और सतगुरु भक्त को एक रोज़ प्रेम की बख़्शिश ज़रूर होगी ॥

[५२] नाम याने शब्द बड़ा पदार्थ है—पर किसी को इसकी क़दर नहीं है—क्योंकि नाम की यह महिमा है कि सोते पुर्ष को जगाओ याने पुकारो तो वह जाग पड़ता है और जो जागता पुर्ष है—उसको नाम लेकर पुकारो तो क्यों नहीं सुनेगा—पर वह तुम्हारी पकाई और सचाई देखता है—और

जब तुम्हारी आंखों को देखने के लायक़ और हृदय को अपने बैठने के लायक़ करले तब प्रघट होवै इतने में जो घबरा जावै और छोड़ देवै — तौ वह भी चुप हो रहता है — और जिसने यह समझ लिया कि जब तक स्वांस आता जाता है — तब तक नाम को नहीं छोड़ूंगा उसको फिर वह ज़रूर मिलता है ॥

[५३] जिसको सतगुर मिले और उन्हों ने अपनी कृपा से नाम और उसका भेद बख्शा — तौ उसको चाहिये कि उसकी कमाई करै — और सतगुर की प्रीत और परतीत बढ़ाता जावै — और जो न होसकै — तौ अपने मन में पछतावै और जतन करता रहै — और किसी के समझाने का इरादह न करै समझाने वाला अपना फ़िकर आप कर लेगा — इसको चाहिये कि यह अपना फ़िकर करै ॥

[५४] इस कलयुग में संतों ने बजाय पुराने तीर्थों के और वर्तों के यह तीर्थ और वर्त मुक़र्रर किये हैं—याने सतगुर की आज्ञा में बर्तना तो बर्त—और सतगुर और साध का संग तीर्थ – इस से जीव को फ़ायदह होगा – और पुराने तीर्थ वरत करने से सिवाय अहंकार के और कुछ हासिल नहीं होगा

[५५] यह मन व तौर मस्त हाथी के है जिधर चाहता है उधर चला जाता है और जीव को संग लिये फिरता है जंगल के हाथी के लिये तो हाथीवान दुरस्त करने को ज़रूर है – और इस मन रूपी हाथी को सतगुर ज़रूर हैं – जबतक सतगुर का आंकुस इस पर न होगा – तब तक इसकी मस्ती नही उतरेगी – इस जीव को जो परमपद की चाहहै – तो सतगुर करना ज़रूर है बिना सतगुर कभी परम पद हासिल न होगा

इस बचन को सच्चा मानो नहीं तो चौरासी जाओगे ॥

[५६] संत सतगुरु का मत सर्गुन और निर्गुन दोनो से न्यारा है – और जो रचना सत्तलोक में है वह भी सत्त – और उस का रचने वाला सत्तपुर्ष भी सत्त है ॥

[५७] जो संत या फ़क़ीर हैं – वह ज़ाते ख़ुदा याने स्वरूप मालिक के हैं जो उनकी ख़िदमत करेगा – और उनकी मुहब्बत और प्रतीत करेगा वह भी ज़ाते ख़ुदा होजावेगा ॥

[५८] गुरमुख होना मुशकिल है – शब्द का खुलना मुशकिल नहीं है – सो सतगुर की मौज से होगा – बिना उनकी दाया के कुछ नहीं हो सकता ॥

[५९] दसवां द्वार जो इस सरीर में

गुप्त है सो इस कलयुग में संतों ने उ
सके खुलने का उपाव शब्द के रस्ते से
रक्खा है — और सब मत वालों का
दसवां द्वार और रीत से खुलना गुप्त
होगया ॥

[६०] दोनो काम नहीं बन सक्ते —
भक्ति गुरू की करोगे तो अक़ल से
तोड़नी पड़ेगी — और अक़ल से रक्खो
गे तो भक्ती में कसर पड़ेगी — सो इस
बात का नेम नहीं है जिनके अच्छे
संस्कार हैं — और सतगुरू की कृपा
है — उनके दोनो काम बखूबी बनते
चले जावेंगे — कुछ दिक़्क़त नहीं पड़ेगी
— और जिन के संस्कार निकृष्ट हैं उन
से एक ही काम बनेगा ॥

[६१] जिनको मालूम ज़ाहरा की चाह
है और उन को उसने मेरी संत मि

न जावें – तो मुनासिब है कि तन मन धन सब उन को अरपन कर दे और उन से ज़रा दरेग़ न करे ॥

[६२] नाम रसायन के बराबर कोई रसायन नहीं है – जिसने यह रसायन बनाली – उस के पास सब रसायन हाथ बांधे खड़ी हैं – जब खाविंद क़बज़े में आगया – तब जोरू कहां जा सक्ती है ॥

[६३] मुक्त में बड़े भेद हैं – कोई तीर्थ और बर्त करना इसीमें मुक्त समझते हैं – कोई जप तप को मुक्त रूप जानते हैं – कोईत्याग में मुक्त मानते हैं – सो यह सब ग़लती में पड़े हैं – संत यह कहते हैं – कि जब तक सुरत अपने निज मुक़ाम को न पावेगी – तब तक मुक्त का होना सही नहीहै ॥

[६४] वेद से आदि लेकर जितने शास्त्र हैं और षट दर्शन और-चंद्रायन-से आदि लेकर जितने ब्रत हैं और-जितना-पसारा इस लोक का है – सब नाश होंगे एक संत और सेवक बचेंगे इस से लाज़िम है कि संसारी प्रीतों को कम करें और संतों से प्रीत बढ़ावें उन की प्रीत सुख की दाता है- और धन और मान और स्त्री और पुत्र की प्रीत दुख की दाता है ॥

[६५] पंडित और भेष से जीव का उद्धार नहीं होगा जब तक संत दयाल न मिलेंगे और किसी से इस जीव का उद्धार नहीं होगा – सो जहां तक बन सके संत दयाल का खोज करके उनकी सरन पड़े तो एक ही जन्म में उद्धार है ॥

[६६] जो संत ग्रहस्त में रहते हैं उन से बहुत से जीव पार होते हैं – और

जो भेष में होते हैं—उन से उद्धार किसी का नहीं होता पर जो संत दयाल हैं वह ग्रहस्त ही में रहते हैं ॥

[६७] मालक ने यह फ़र्माया है कि साध मेरी देह हैं जो मेरी सेवा करना चाहैं तो मेरे साधुओं की सेवा करें—और लोग बावले पानी और पत्थर पूजते हैं गुरु भक्ती और सतसंग और साध सेवा जो मुख्ख है सो कोई नहीं करता है ॥

[६८] इस वक्त के जीवों के वास्ते पहिले गुरु भक्ती और सतसंग चाहिये इस के बिना काम नहीं होगा ॥

[६९] सतसंग में आ बैठने से कर्म नहीं कटते हैं—सतसंग का जो कर्म है उस के करने से कर्म कटते हैं ॥

[७०] हर कोई नामका सुमिरन करता

है—और कुछ भी अंग उस का नहीं बदलता सबब इसका यह है कि पोथियों का लिखा नाम जपता है—किसी साध का बताया हुआ नाम जपे—तो खबर नाम के रस की पड़े—क्योंकि संतों ने अपने हृदय रूपी ज़मीन को कमा कर नाम रूपी दरख़्त लगाया है और उसका फल खाते हैं – जो कोई खोजी प्रेमी नाम का उनके पास जावे उसको नाम का फल देते हैं ॥

[७१] जिनको सतगुर नादी मिले हैं उन्होंने अनहद शब्द सुना है – और किसी को यह मारग हासिल नहीं है- इस वक़्त में वही भागवान है – जिसको इस मारग की प्रतीत आगई और इस की कमाई में लग गया ॥

[७२] जो सतसंग करे – और बचन भी सुने – तो मनन भी करना चाहिये

ताकि सिंहासन की सीढ़ी पर आ जावै – और जो मनन नहीं करेगा तो हरगिज़ कुछ फ़ायदह नहीं होगा – जैसे का तैसा बना रहेगा ॥

[७३] जिसको सतगुरु लाडें – उस की सतसंगियों को सिफ़ारिश करनी मुनासब है – और जिसका वे आदर करें उस की उन को भी ख़ातिर करनी चाहिये ॥

[७४] जो कोई बिना भाव के साध को खिलाता है तो उसका तो फ़ायदह है पर साध का नुक़सान है ॥

[७५] ज़ाहर में पूजा करने के वास्ते तो संतों की अकाल मूरत है – और गुप्त में जिसका संत ध्यान करते हैं वह भी अकाल पुर्ष है—पर संसार जड़ को छोड़ कर डालियों को पूजता

है सो जड़ भी हाथ नहीं आती और डा-
लियांभी सूख जाती हैं-मतलब डालियां
पुजवाने से यह था कि एक रोज़ जड़
तक आजावेगा—पर जीवों ने डालि-
यों का ऐसा पकड़ा—कि छुड़ाये
नहीं छोड़ते हैं—याने पंडितों के बह-
काने से अनेक तरह की पुजा कर रहे
हैं— और करने लगते हैं सबब इस-
का यह है कि इस जीव के संग काल
का वकील याने मन मैाजूद है —
जा कोई काल का मत इसको समझाता
है—तो मन भी मदद करता है—-
क्योंकि काल की हद्द से बाहर नहीं जाता
है— और जब दयाल का मत संत
उपदेश करते हैं—तब काल का वकील
मन इसको बहका देता है और संतों के
बचनका निश्चा नहीं आने देता है ॥
[७६] चाह की जड़ काटनी चाहिये
क्योंकि जिस बात की यह चाह करता

है और वह पूरी नहीं होती—तो बहुत तकलीफ़ पाता है—जो काम करै उस-की मौज पर करै अपना अहंकार न करै—पर इस बचन की बारीकी को समझना चाहिये—नहीं तो करनी से ढीला पड़ जावेगा—यह बात पूरी जब हासिल होगी जब मालक का दर्शन उसको प्रत्यक्ष होगा—बिना दर्शन यह हालत नहीं आवेगी—यह गति संतों की है कि सब में उसको प्रेरक देखते हैं — जक्त का तमाशा संतों को खूब दीखता है—दूसरे की ताक़त नहीं है ॥

[७७] जिन लोगों को गुरू नानक या किसी और संत की टेक है और उनका बचन मानते हैं उनको गुरू और संत के घर का जानकर के और उन्हीं से सतगुर यह कहते हैं कि गुरू नानक या

ओर संत को अपना पिता समझो—ओर उनका बचन मानो—पिता का काम पालन पोषन करने का है—जैसे कि पुत्री को पिता पालता है—ओर सब तरहसे उस की खबर लेता हैं—पर जब उस को पुत्र की [illegible] होती है—तब उस को पति के हवाले करता है—पिता के घर में पुत्र नहीं होसक्ता है—इसी तरह से गुरू नानक ओर संत कहते हैं—कि सतगुर खोजो—जो प्रामी सच्च खंड ओर सत्यनाम को चाहते हैं—यह कहीं नहीं कहा कि ग्रन्थ ओर पोथी की टेक बांधो—तो तुम को सच्च खंड मिलेगा—इस जन्म में तो संतों के घर के ओर उनके टेकी कहलाये ओर जो उनका बचन न माना याने सतगुर वक्त का खोज न किया तो चौरासी में जाओगे इतना सम-

आना संतों के घर के जीवों का है और जो पंडितों के किंकर हुये—वह संतों के घर के न रहे— उन से कुछ कहना नहीं चाहिये—वे मानें चाहे न मानें ॥

[७८] जो दुनियादार हैं उन की आसक्ती—स्त्री और धन में है और उसी में उनको रस आता है इसी से वह संसारी कहलाते हैं—और जिनको अपने सतगुर के दर्शन और बचन में आसक्ती है और रस मिलता है उनका नाम गुरमुख है—सतगुर की प्रीत करने वाले कम हैं—और दुनियादार बहुत हैं—पर जो सतगुर के सनमुख आये हैं—तो वह उनको एक रोज़ गुरमुख बना कर छोड़ें गे ॥

[७९] बाज़े जीव सतगुर से कहते हैं कि जो तुम सतगुर पूरे हो—तो हम

एक तिनका तोड़ दें—तुम जोड़ दो सो सतगुर फ़र्माते हैं—कि जिस को तुम ने ब्रह्म माना है—उस से तिनका टूटा हुआ जुड़वाओ—जो वह जोड़ देगा—तो हम भी जोड़ देंगे—क्योंकि सतगुर और ब्रह्म एक हैं—पर ब्रह्म की ताक़त नहीं है कि टूटा हुआ तिनका जोड़ देवै—या मुर्दे को जिला देवै और जो सतगुर से प्रीत करेगा और सर्धा लावेगा—तो उस का तिनका भी जोड़ देंगे-और मुर्दे को भी जिला देंगे क्योंकि जो संसारी हैं वह मुर्दे हैं-और जिन को सतगुर वक़्त से प्रीत है-वही ज़िंदह हैं—और उन्हीं का तिनका टूटा हुआ जुड़ा है ॥

[८०] मुरीद नाम मुर्दे का है—जिस तरह गुरू कहैं—उसी तरह करे आप की अक़्ल को पेश न करै—सो जब तक

यह हालत न आवेगी तबतक अपने को छिद्र और संसारी जाने—और मुरीद न माने—पर मेहनत करेजाय और बचन माने याने सतगुर की सेवा और सतसंग और भजन करता रहे और उन के चरनों में प्रीत और प्रतीत बढ़ाता रहै एक दिन मुरीद हो जावेगा॥

[८१] जो कोई सतसंगी से यह सवाल करै—कि तुम को संतों का निश्चा किसतरह आया—और वक़्त के सतगुर को कैसे पूरा जाना—तो जवाब यह है—कि पिछले संजोग से निश्चै आया—कुछ साधना नहीं करनी पड़ी बचन सुनते ही निश्चा आया—जैसे चकोर को चंद का—और पतंग को दीपक का॥

[८२] जिस माया ने जक़्त को बस कर रक्खा है—उस को संतों ने ही बस किया है—जो माया से अलग होना

चाहे उस को चाहियेकि संतों का संग करे—और ताड़ मार निंद्या अस्तुति जो कुछ होवे सब को सहे तब साध बनेगा और जिसको बरदाश्त बिलकुल नहीं है याने जब तक खातिरदारी के बचन कहे जावें—तब तक खुशी से रहे और जब गहृत के बचन कहे जावें तब ही कमर बांध के छोड़ कर चलने को तईयार होय—तो इस तरह से कभी साध नहीं बनेगा—साध जब ही बनेगा जब हरएक बात की बरदाश्त करेगा॥

[८३] जब तक संतों के हुकम को बमूजिब कर्म नहीं करेगा—मन निर्मल नहीं होगा— और जबतक सतगुर और शब्द की उपासना नहीं करेगा चित्त निश्चल नहीं होगा—जब यह दो दर्जे भली प्रकार कमा लेगा—तब ज्ञान का अधिकारी होगा—जब ज्ञान हुआ तब आवरन दूर होजायगा

आज कल के ज्ञानियों का यह हाल है कि उन को इस बात की ख़बर भी नहीं कि हमारा मन निर्मल और चित्त निश्चल हुआ है या नहीं—पोथियां पढ़ कर ज्ञानी होगये और जो जीव उनके पास जाता है—उस को ज्ञान का उपदेश करते हैं—यह नहीं जानते कि इस कलयुग में कोई जीव ज्ञान का अधिकारी नहीं है—इस से मालूम हुआ कि वे अंधे हैं—आप चौरासी जावेंगे और जो उन के क़ाबू में आवेगा उस को भी लेजावेंगे—जिस को चौरसी से बचना होवे—वह संतों का बचन माने और अपनी नरदेही को सुफल करे क्योंकि मुशकिल से हाथ आई है इस को वृथा नहीं खोना चाहिये—और जो नहीं माने तो इख़्तियार है—इस को संत क्या करें ॥

[८४] बग़ैर संत सतगुर वक़्त के कुछ

हासिल नहीं होगा जब यह सतगुर वक़्त की सेवा करे--और उन को प्रसन्न करे तब कुछ हासिल होगा--और जो नाम को यह चाहता है—चाहे जिस क़दर मेहनत करे पर हासिल नहीं होगा जब सतगुर प्रसन्न होंगे तब नाम मिलेगा॥

[८५] जैसे आग पर कांच नहीं ठहरता है—इसी तरह से यह नरदेही भी संसार के भोगों की आग में दिन रात पिलगती जाती है—बड़ भागी वह जीव हैं—जिनको सतगुर पूरे मिलगये और उन की संगत में अपना तन मन धन ख़र्च कर रहे हैं॥

[८६] साध के संग से पाव घड़ी में कोट जन्म के पाप कटजाते हैं पर होवे साध पूरा पहिले तो सच्चा साध मिलना मुशकिल है—और जो साध भी सच्चा भाग से मिला—तो संग नहीं किया

जाता—जब तक संग नहीं होगा—
प्रतीत नहीं आवेगी और जो प्रतीत
नहीं आई तो फिर प्रेम कहां से
आवेगा— और जब यह दो बातें
नहीं तो फिर दया कैसे आवेगी—
और जो साध सतगुर की दया नहीं
प्राप्त हुई—तो फिर कारज भी पू-
रा नहीं होगा— इस से मुख्य संग
है—जो एक जन्म इसका सतगुर के
खोज में गुज़र जावे—तो कुछ नुक़सान
नहीं है बलकि बहुत फ़ायदह है
क्योंकि नरदेही का भागी होगया और
तीर्थ बर्त मूरत पूजा चेटक नाटक सिद्धी
शक्ती नेम अचार कर्म कांड ब्रह्म ज्ञा-
न के झगड़ों में पड़ गया तो नर देही
भी हाथ से गई—और चौरासी के
दुख फिर भुगतने पड़े क्योंकि जब ब्रह्मा
बिष्णु महादेव—और तेंतीस कोट
देवता जिनका यह पसारा फैलाया

हुआ है सब जन्म मरन में पड़े हैं—तो जीव जो कि असमर्थ है—कैसे बच सक्ता है पर जो कहीं भाग से सतगुर पूरे मिल जावैं—तो यह सब जिनका नाम ऊपर लिखा गया है जन्म मरन में पड़े रहेंगे पर वह जीव अपने निज स्थान को सतगुर की मेहर से पा जावेगा जो इस बचन की प्रतीत नहीं है तो संतों के बचन की गवाही लेलो-तो और जो न इस बचन की प्रतीत है और न संतों के बचन पर निश्चय है तो चौरासी का रस्ता खुला हुआ है चले जाओ

[८७] ग्रन्थों और पोथियों में जो नाम लिखा है उसके पढ़ने और जप करने से कुछ हासिल नहीं होगा—नाम का रस्ता साध के संग से प्राप्त होगा पर यह कहना उनके वास्ते है जो खोजी हैं—संसारियों के वास्ते यह उपदेश नहीं है ॥

[८८] संसार के बंधनों की जड़ अहं-
कार है—जैसे माला में मुक्ख सुमेर है
जब सुमेर को पकड़ लिया तो कुल
दाने माला के हाथ आ गये और जो
उस में से सूल को निकास लिया
तब सब दाने अलग होगये इसी तरह
जिनके ऊपर सतगुर की कृपा है—उ-
न्हीं ने अहंकार की जड़ काट दी है
और सब संसार के भोगों की बासना
को हटाकर केवल एक सतगुर वक़्त से
अपना रिश्ता लगा लिया है—उन्हीं
की नर देही सुफलहै—और जिनको
यह बात हासिल नहीं है—तो वह
मनुष्य याने इनसान की सुरत हुये तो
क्या—पशु हैं—और ये बचन सतसंगी
के वास्ते हैं— दुनियादार बजाय
माननेके झगड़ा करने को तइयार होंगे
[८९] जक्त के जीवों का हाल क्या
कहा जावे—और उन से क्या कहैं—

जब कि स्वामी और सेवक में कोई बिर ला स्वामी निरलोभी होगा और कोई बिरलाही सेवक निरलोभी निकलेगा-- यह बात क़ाबिल याद रखने के है— ता कि अपनी बिरती की परख होती रहै ॥

[९०] सतगुर की सेवा और शब्द की कमाई से—हों में--रूपी मैल को दूर करना चाहिये— तब मालक राज़ी होगा— खुलासा यह है कि अहंकार को खोना चाहिये—और दीनता हासिल करनी चाहिये— क्योंकि वह तो दीन दयाल है— जब जीव दीन हुआ—तबही वह दयाल हुये—और तबही काम पूरा हुआ--पर दीनता का आना मुशकिल है ॥

[९१] जो अपने वक़्त के सतगुर के हुकूम के बमूजिब कर्म और उपाशना

करैगा—उसको कुछ फ़ायदह होगा और जो पंडितों के बहकाने से आकर वेद पुरान के कर्म करैगा—उसका बिगाड़ होगा ॥

[९२] गुरू की पूजा गोया मालिक की पूजा है क्योंकि मालक आप कहता है कि जो गुरूद्वारे मुझको पूजेगा उसकी पूजा क़बूल करूंगा—और जो गुरू को छोड़ कर और और पूजा करते हैं उनसे मैं नहीं मिलूंगा—जो कोई यह कहै कि गुरू की पहिचान बताओ तो हम को यक़ीन आवे तब हम गुरू की पूजा करैं—उस से यह सवाल है कि तुम जो मालक की पूजा करते हो उस की पहिचान बताओ—कि तुम ने उस की पहिचान कैसे करी है—जो मालक की पहिचान है— वही गुरू की पहिचान है—क्योंकि हरि गुर एक

हैं—उन में भेद नहीं—पर हरि की पूजा करने से हरि नहीं मिलेगा और सत गुर की पूजा और सेवा करने से हरि मिल जावेगा—इतना ग़ौर करलेना चाहिये और जो कोई यह कहै कि जब हरि गुर एक हैं—तो हम हरि की ही पूजा न करें गुरू की पूजा क्या ज़रूर है सो यह बात नहीं होसक्ती है—पहिले भक्ती सतगुर की करनी पड़ेगी तब वह मिलेगा यह क़ायदह उसने आप मुक़र्रर किया है—कि जो गुरू द्वारे मुझ से मिलेगा—उस से मैं मिलूंगा—निगुरे का मेरे यहां दख़ल नहीं है—और गुरू पूरा चाहिये ॥

[८३] जो जीव को पूरा गुरू मिल जावे—और उन पर परतीत आजावे और उनकी भली प्रकार दीनता करे तो आज इस जीव को वह पद प्राप्त

हो सक्ता है—जो ब्रह्मा बिष्णु महादेव से आदि लेकर जितने हुये किसी को नहीं मिला और न मिल सक्ता है ॥

[८४] निंद्या और स्तुत दोनों के करने में पाप होता है—क्योंकि जैसा कोई है वैसा बयान नहीं होसक्ता है इस से मुनासिब यह है कि स्तुति करै तो अपने सतगुर की—और निंद्या करै तो अपनी—इस में अपना काम बनता है— और किसी की निंद्या स्तुत में वक्त खोना है— पर एक जगह के वास्ते मना नहीं है—कि कोई अपना है—और किसी के बहकाने में आगया है या आया चाहता है—उस से कह देना ज़रूर है कि यहां से तुम को फ़ायदह नहीं होगा—यह जगह धोके की है इस में पाप नहीं है पर हर एक से कहना ज़रूर नहीं ॥

[९५] जब तक सुरत अपने निज स्थान का न पावेगी—सुखी नहीं होगी इसवास्ते मुनासिब है—कि सब झगड़े छोड़ कर—अपने घर का फ़िकर करे क्योंकि इस नर देही में घर का रस्ता मिल सक्ता है अबके चूके ठीक नहीं है ॥

[९६] जब तक वक़्त गुरू की सेवा और नाम का भजन सुमिरन न करेगा—तब तक नाम किसी तरह से प्रापत नहीं होगा--इस वास्ते मुनासिब है कि जिस क़दर होसके—वक़्त गुरू की सेवा तन मन धन से करै—तो एक रोज़ उनकी कृपा से सब की प्रीत हटकर—एक सतगुर की प्रीत आजावेगी— फिर यह सूरत हो जावेगी—कि चाहै कैसी ही तकलीफ़ और आफ़त आवै—उसका दुख नहीं होगा—और जो सामान

ख़ुशी मौयस्सर आवे तो उससे हर्ष नहीं होगा—जब ऐसी हालत होगई तो जीते जी मुक्त को प्राप्त होगया अब क्या करना बाक़ी रहगया ॥

[९७] जिस किसी को ख़ौफ़ मरने का और चाह मुक्त की होगी—उसको सतसंग और सतगुर प्यारे लगेंगे—और जिसको चाह दुनिया की है—और डर मरने का नहीं है उस से सतसंग में नहीं आया जावेगा— और न सतगुर से प्रीत करी जावेगी ॥

[९८] नाम तो संसार जप रहा है कोई ख़ाली नहीं है—पर फ़ायदह किसी को नहीं होता है इसका सबब यह है कि सतगुर द्वारा नाम नहीं लिया है—मनमत्त नाम जपते हैं ॥

[९९] जो जीव संतों के सतसंग में आ

गया और भेद भी संत सारग को ले लिया पर यह ऐसा है जैसे बीजक का सुनाना जब तक अपनाया नहीं जायगा—तब तक नाम का धन नहीं मिलेगा ॥

[१००] जब कोई जीव सतसंग में आताहै—तो उसको संत परख लेतेहैं कि उसको कितना क़रज़ा काल का देना है-जो देखा कि इसका क़रज़ा थोड़ा है—और इस जन्म में अदा हो सक्ता है—तो उसको संत चरनो में लगाते हैं—और जो देखा कि अभी काल का खाजा है—तो उसको संत नहीं लगाते हैं—पर संतों के सनमुख आने से—उसके बेशुमार कर्म कट जाते हैं और आगे को उसे अधिकारी बनाते हैं ॥

[१०१] अहंकार याने हैंमैं के मैल को निकालना यह पहिले ज़रूर है—आज कल बाज़े जीव अपनी समझ से

काम तो वही करते हैं—कि जिसमें नाम की प्राप्ती होवै—और अहंकार की मैल जावे— पर सुतंत्र— याने अपने अहंकार के संग करते हैं सतगुर के आसरे नहीं करते हैं इससे और अहं कार ज़ियादह होता जाता है—याने मनमुखता करते हैं और सतगुर को सुक्ख नहीं रखते ॥

[१०२] संतों के मत में मालक और जीव का अंस अंसी भाव माना जाता है और वेदान्ती केवल ब्रह्मही मानते हैं जीव को कुछ भी नहीं गिनते ॥

[१०३] जिसको सतगुर की प्रीत है और उन्हीं को चाहता है— वह एक रोज़ निज घर में पहुंच जावेगा—और जो सत्तनाम और सत्तलोक की चाह रखता है और सतगुर से प्रीत नहीं है—तो वह न सतगुर को पावे और

न सत्तनाम से मिलै—और वह सतगुर का संग भी न कर सकेगा ॥

[१०४] संत ज्ञान का खंडन नहीं करते—पर यह कहते हैं कि पहिले अंताकरन शुद्ध करना चाहिये—तब ज्ञान का अधिकारी होगा—इस वास्ते चाहिये कि वाचक ज्ञानियों से बचा रहै और सच्चे संत सतगुर की और सुरत शब्द मारग की करेजाय इस से अंताकरन भी शुद्ध होगा— और नाम भी मिल जावेगा ॥

[१०५] सत संगियों को मुनासिब है कि जब कोई सेवक याने गुर भाई हिम्मत का वचन बोले—तो उस की मदद करैं—और हसी न करैं—क्योंकि जितना वह वचन अपनी ताकत से जियादह का बोले फिर भी उस की मदद करना चाहिये सतगुर अपनी मौज से उसका निवाह करते हैं ॥

[१०६] जैसे पपीहा स्वांत की बूंद के वास्ते तड़पता है—और मालिक उस की तड़प को सुनकर मेघ को हुक्म देता है कि अब जाकर बरसो—और उस की तड़प को बुझाओ—तब मेघ आन कर बरसते हैं इसी तरह से जो नाम रूपी अमृत की प्यास रखते हैं और उस की प्राप्ती के वास्ते तड़प रहे हैं—उनकी तड़प को सुनकर मालिक अन्तर जामी सतगुर को हुक्म देता है—कि तुम जाकर उन जीवों की तड़प को अमृत रूपी बचनों से बुझाओ तब सतगुर प्रघट होते हैं—और अमृत रूपी बचन सुना कर—जीवों की तड़प को बुझाते हैं— मालिक आप उन की आग को नहीं बुझा सक्ता है—इस से सतगुर की महिमा जबर है—और बड़ भागी वही जीव हैं—जिन को सतगुर वक़्त के मिलजावें—और उनके

ऊपर निश्चा आजावे— उन्हीं की नर देही सुफल है ॥

[१०७] शब्द द्वारा यह जीव बंद में आन पड़ा है—और जब तक शब्द भेदी गुरु उस को नहीं मिलेंगे—तब तक अपने निज स्थान को नहीं जावेगा क्योंकि शब्द के ही रस्ते से यह चढ़कर पहुंच सक्ता है और कोई रस्तह इस बंद से निकलने का नहीं है ॥

[१०८] वाजे लोग सतसंग में आते हैं पर कपट लिये हुये आते हैं—बाहर से बातें बहुत बनाते हैं पर अन्तर में उनके भक्ती ज़रा भी नहीं है—सो यह बात नामुनासिब है—संसार में चाहे कपट से बरतै—पर सतगुर के संग निस कपट होकर बरतना चाहिये—चाहे थोड़ी प्रीत होवे पर सच्ची होवे— तो एक रोज़ पक जावेगी—और मालिक प्रसन्न होगा—और कपट की भक्ती

चाहे जितनी करो क़बूल नहीं होती है ॥

[१०९] जब आंधी का गुबार होता है तो कुछ नहीं दीखता है—इसी तरह पंडित और भेषों को जिनको संसार पर-मार्थी और बड़ा जानता है—उनके लोभ रूपी गुबार अन्तर में छा रहा है उनको बिलकुल खबर नहीं है—कि परमार्थ किस को कहते हैं उनसे मालिक कैसे राज़ी होगा—इस वास्ते वह और सब उनके सेवक चौरासी जावेंगे॥

[११०] उपदेश करना दुरुस्त है—पर निरपक्ष होकर करना चाहिये क्योंकि पहिले पहिचान नहीं होसक्ती कि संतों के उपदेश का अधिकारी कौन है पर उपदेश करने से पहिचान होसक्ती है जो अधिकारी होगा वह बचन को मानेगा और जो अधिकारी नहीं है वह तकरार और वाद करेगा—इस से पहिचान होजावेगी—फिर उस से हट

नहीं करना चाहिये—उपदेश करना बिलकुल मना नहीं है—क्योंकि जो उपदेश नहीं होगा तो संतोंका मत कैसे प्रघट होगा ॥

[१११] मालिक को दीनता प्यारी है और मुनासिब यह है—कि पहिले वह काम करना—कि जिस से दीनता आवे और यह संतों के संग से हासिल होगा—पंडित और भेष के संग से--जो सिवाय धन और भोजन के कुछ नहीं चाहते—उनके संग न दीनता आवेगी और न मालिक राज़ी होगा जिस को यह बात हासिल करनी मंज़ूर होवे उस को चाहिये कि अपने वक्त का सतगुर तलाश करके उनकी भक्ती करै तब मालिक राज़ी होगा—और जब तक संत दयाल न मिलें तबतक किसी को अपना गुरू न बनावे ॥

[११२] जिस को नसीहत की जाती

है— वही बुरा मानजाता है—इस सबबसे मौका देखकर बात करनी चाहिये--और जो कोई न माने तो उसके साथ हट करना मुनासिब नहीं है--और उसके काइल करने का इरादह नहीं करना चाहिये ॥

[११३] सतगुर की पहिचान उसको होगी जो संसार की तापों में तप रहा है--और जो उन तापों को सुख रूप जानता है---वह कभी सतगुर को नहीं पहिचान सक्ता है--- और मुख्य पहिचान वह है जो सतगुर आप बख्शें इससे बढ़कर कोई पहिचान नहीं है।

[११४] संत फ़र्माते हैं कि यह कुछ ज़रूर नहीं है कि जिसका आदि होवे उसका अंत भी होवे--- याने संतों ने मौज से ऐसीरचना भी रचीहै-कि जिस का आदि है--पर अंत नहीं है ॥

[११५] नाम दो प्रकार का है—वर्ण

आतमक---और धुन आतमक---धुन आतमक का फल बहुत है--और वर्न-आतमक का थोड़ा— जिसको डर चौरासी का है— उसको मुनासिब है कि धुनआतमक नाम का भामी वाला सतगुर खोजे— तो चौरासी के चक्कर से बचेगा और जो वर्नआतमक नाम में रहे--तो उनकी चौरासी नहीं छूटेगी ॥

[११६] सब काम छोड़कर एक अपने वक्त के सतगुर का हुकम मानना चाहिये---और उसके मुवाफ़िक़ अमल करना चाहिये---इससे इसका काम बनेगा--सब का खुलासा यह है ॥

[११७] जैसे संसार के पदार्थों का यह जीव मुहताज है---ऐसे ही परमार्थ का मुहताज नहीं है--और जैसे संसारी पदार्थों के वास्ते दीन होता है--ऐसा नाम के वास्ते दीन भी नहीं होता है--और जो कभी दीन भी होता है---तो

कपट के साथ--पर सतगुर अंतरजामी हैं--वह इस तरह कब नाम की बख़शिश करते हैं--और सबब सच्ची दीनता न आनेका--यह है--कि यह जीवसे गरज़ है--सच यह है--कि जब तक यह जीव सतगुर के सामने सच्चा दीन न होगा-तब तक जो मालिक भी उसको तारना चाहे--तो नहीं तार सक्ता है ॥

[११८] जीव जो बाहर मुख हैं--वह अंतर का हाल नहीं जानते-और जब तक अन्तर मुख उपाशना शब्द की न-होगी तबतक कारज नहीं सरेगा--बाहर सतगुर की उपाशना---और सतसंग और अंतर में शब्द की उपाशना दोनों बराबर करनी ज़रूर हैं ॥

[११९] जो वेद के मत को मानते हैं उनको वेद के स्थान की प्राप्ती भी बिना सतगुर वक़्त के नहीं होगी--इससे वक़्त के पूरे सतगुर का खोज करना ज़रूर

चाहिये--और उन की जितनी अस्तुत करै सब मुनासिब है--और जब वे ज्ञानी से मिल जावें-तो उनकी महिमां का वार पार भी नहीं है— और जो उनको ब्रह्मा से आदि लेकर—जितने होगये उन सब से बड़ा कहे—तो कुछ हर्ज नहीं है—क्योंकि सब तरह से वक़्त के पूरे सतगुर की बड़ाई है— जो कि गुज़र गये हरचंद वह पुरे थे— पर हमको उनसे अब कुछ हासिल नहीं हो सकता है—जो कुछ हासिल होगा अपने वक़्त के संत सतगुर से हासिल होगा ॥

[१२०] कर्मही भुलाने वाला है—और कर्म ही चिताने वाला है- जैसे एक लड़के को दो चार लड़के बहका कर लेगये और खेल में लगा लिया—और फिर वही लड़के जब खेल चुके—तब

उसको उसके घर पहुंचा गये—इसी तरह कर्म के बस जीव भूला है—और कर्म ही के बस चेतता है ॥

[१२१] इस वक़् में सिवाय गुरु भक्ती और सुर्त शब्द की कमाई के और कुछ जीव से नहीं बन सक्ता है—और जो कोई और उपाव या जतन करते हैं वह जैसे बांबी का ठोकना है—उस से सांप नहीं मारा जावेगा— मुनासिब तो सांप का पकड़ना है—सो सतगुरु और शब्द की उपाशना से हाथ आवेगा—और जतन से नहीं पकड़ा जावेगा जो इस बचन को न मानेंगे वह ख़ाली रहेंगे—और उनको कुछ हासिल न होगा—और जो जीव कि उनका उपदेश मानेंगे—वह भी ख़राब होंगे ॥

[१२२] संत कहते हैं कि नाम का रस मीठा है—पर कोई लेता नहीं

है और मिठाई जो खिलाओ तो जल्दी खा जाता है सबब इस का यह है—कोई रोगी को मिठाई खिलाओ तो कड़वी लगती है—और असल में मिठाई कड़वी नहीं है रोग के सबब से कड़वी लगती है तो मालूम हुआ कि जगत रोगी है—अब वह उपाव कि जिस से मिठाई मीठी लगे करना चाहिये और वह उपाव यह है--कि हकीम की सरन लेवे—तो वह एक रोज़ इस के रोग को खोदेगा—और फिर वह मिठाई—जो कड़वी लगती थी मीठी मालूम होगी—और परमार्थ में जो नाम का रस चाहते हैं—उनको मुनासिब है कि सब उपाव छोड़ कर--एक सतगुर की सरन पक्की करें—तो वे समरथ हैं इस जीव को निर्मल और चंगा करलेंगे याने अन्ताकरन जो भोगों की वासना से भरा हुआ है—और

काम क्रोध लोभ मोह अहंकार की कीचड़ में सना हुआ है— उसको सफ़ा करदेंगे और मैल और बीमारी जिसके सबब से नाम का रस इस को नहीं आता है—सब दूर कर देंगे—और नाम का रस भी बख़्श देंगे—और जो यह उपाव नहीं किया जावेगा—तो चौरासी के डंड का अधिकारी होगा ॥

[१२३] गुरू और पिता का क्रोध जल के समान है--जब होवेगा तब फ़ायदाह करेगा—जैसे जल हरचंद गरम होवे पर जब अग्नी पर पड़ेगा—तो उस को बुझा देता है और दुनियादारों का क्रोध अगनी के समान है कि जहां पड़ेगा वहां आग लगावेगा और उस को जला देगा ॥

[१२४] अपने वक़्त के सतगुर से ऐसी प्रीत होनी चाहिये जैसे लड़के की माता से—जब वह अपनी माता का दूध

पीता है—उस वक़्त जो कोई छुड़ावे तो कैसा व्याकुल होता है—कि सम्हाले नहीं सम्हलता है—और जो गुरू को छोड़ कर चले जावें और उनका ख़्याल भी न करैं—और स्त्री पुत्र को एक रोज़ भी न छोड़ें—और गुरू को महीनों छोड़ दें—तो ऐसी प्रीत का क्या ठिकाना है—और उनको नाम कैसे मिलै—और इस संसार से उनका उद्धार कैसे होवे इस वास्ते जिन को अपना उद्धार मंजूर है—तो उस को चाहिये कि सतगुर से पूरी प्रीत करै—तो सब काम बनेगा॥

[१२५] सतसंगियों को और साधुओं को जो सतगुर के चरनों में सतसंग करते हैं-सब लोग यह जानते हैं कि सिर्फ़ रोटी खानेको पड़े हैं-पर यह ख़्याल नहीं करते कि वे चार घंटे छे घंटे—रोज़ सतसंग

करते हैं—और जितना जिससे होसक्ता है—भजन भी करते हैं—और नींद भरके सोते भी नहीं हैं— और चरनामृत और परशादी का आधार रखते हैं यह कितना बड़ा भारी भाग है और दुनियांदार पेट भरके खाते हैं और नींद भरके सोते हैं—और परमार्थ जानते भी नहीं—कि किसको कहते हैं॥

[१२६] जिसको सतगुर के चरनों में ऐसी प्रीत है--कि जब तक दूर है तभी तक दूर है और जब सनमुख आये—तबही मन निश्चल होगया---और ऐसे लग गये कि जैसे मक्खी उड़ती फिरती है और जब शहद मिला तब ऐसी चिमटी कि नहीं छोड़ती—उन्हीं को ऐसी प्रीत का फल भी मिलता है—और यों तो बहुतेरे आये और चले गये—हरचंद फ़ायदह उनको भी होता है पर कम॥

[१२७] सतसंगियों की आपस में प्रीत

होनी चाहिये—और जो ईर्षा रही तो कुछ आनन्द सतसंग का नहीं आवेगा—जो प्रीत होवे तो सतसंग और भजन का आनन्द देखने में आवे॥

[१२८] संतों का क्रोध दाती है--और संसारियों का क्रोध घाती है---पर इस बात को संसारी नहीं जानते हैं—वह संतों को क्रोधी जानतेहैं—यह खबर नहीं है—कि संतों के क्रोध में भी दात है--और मूर्खों की दया में भी घात है॥

[१२९] दोस्त और दुशमन दोनों में मालिक आप बैठा है फिर दोस्त की दोस्ती पर—और दुशमन की दुशमनी पर ख्याल नहीं करना चाहिये--दोनों में मालिक प्रेरक है—पर यह दृष्टी सब की नहीं हो सकती है— जो अपने में मालिक का दर्शन करते हैं—उनकी

ऐसी दृष्टी है और जो कि तुम सतसंग करते हो तुम को भी ऐसी आदत करना चाहिये—कि जिससे बिरोध चित्त में न आने पावे—सो यह बात जल्दी हासिल नहीं होगी जब हररोज़ सतसंग करोगे और नित्त अन्तर मुख अभ्यास करोगे तब कोई काल में हासिल होगी॥

[१३० सकल पसारा आदसे अन्त तक मांस का है—पर इसमें नाम उत्तम है सो जिसने सतगुर को मुक्ख करलिया है—वह तो बचेंगे—नहीं तो जैसे और जीवों का मांस पकाया जाता है इसी तरह उनका मांस चौरासी की अग्नी में पकाया जावेगा॥

[१३१] बिषइयों की पिरीत में जोकि बारम्बार नर्क को ले जाने वाली है यह मन दौड़ कर जाता है और नाम

और सतगुरु की पिरीत से जोकि सदा सुख देनेवाली है सो यह मन भागता है॥

[१३२] संत करामात नहिं दिखाते हैं अपने स्वामी की मौज में बरतते हैं और गुप्त रहते हैं जो स्वामी को प्रघट करना अपने भक्त का मंजूर होवे तो करामात दिखावें--और जो गुप्त रखना है--तो करामात नहीं दिखाते हैं क्यों-कि करामात दिखाये पर संतों को जल्द गुप्त होना पड़ता है और सच्चों का अकाज--और झूठों की भीड़ भाड़ होती है इस वक्त में करामात दिखाने का हुक्म नहीं है-- और जो करामात देखने की चाह रखते हैं वह परमार्थी भी नहीं हैं॥

[१३३] हिंदू और मुसलमान--दोनों में जो अंधे हैं--उनके वास्ते तीरथ बरत मंदिर और मसजिदों की पूजा

है--और जिनको आंख है-उनके वास्ते
वक्त के सतगुर की पूजा है--हरएक के
वास्ते यह बात नहीं है-- सिर्फ सतसं-
गी को और जिनको आंख है उनही
को सतगुर की कद्र होगी --दृष्टान्त--
एक शख्स है कि वह लुकमान ह-
कीम की तारीफ करता है और वक्त
के हकीम की निंदा करता है-- इससे
मालूम होता है कि उसको बिमारी
और दर्द नहीं है अगर दर्द होता तो
वक्त के हकीम की तारीफ करता क्यों
कि लुकमान चाहे बहुत अच्छा हकीम
था पर अब कोई बीमार चाहे कि उस
के नाम से रोग खोवे-- तो कभी नहीं
दूर हो सकता है जबतक वक्त के हकी-
म के पास न जायगा रोग दूर न होगा
इस तरह से जो दर्दी परमार्थ का है
और संसार के सुख को बिषरूप देख-
ता है--और मोक्ष की चाह रखता है

सो वह जबतक कि वक्त के पूरे सतगुर के पास नहीं जावेगा उसको चैन नहीं आवैगा--और वही महिमां वक्त के सतगुर की जानेगा--और जो झूठे हैं--वह तीरथ बर्त और मूरत पूजा--और पिछलों की टेक में भरमैंगे और सतगुर की महिमां नहीं जानैंगे ॥

[१५४] करनी और दया दोनों संग चलेंगी दया बिना करनी नहीं बनेगी और करनी बिना दया नहीं होगी और जो दया का मुक्ख करोगे-तो आलसी होजाओगे कि फिर करनी नहीं बनेगी और फिर दोसे करनी नहीं बन सकेगी एक तो जो पूरे हैं और दूसरे वह जिसको सतगुर और उनके बचन का निश्चा है वह तो सरन में आगया--और तीसरा वह है जिसको सतगुर का निश्चा है और उनके बचन का भी निश्चा है

पर बिना करनी किये नहीं रहता है सब जीव एकसे नहीं होसकते हैं ॥

[१३५] चौरासी लाख जोनि भुगतकर जीव को गाय की जोनि मिलती है--और फिरनरदेही मिलती है इसमें जो जीव से अच्छी करनी बनेगी—तो बराबर नर-देही मिलती चली जायगी—जब तक कि काम पूरा नहीं होगा सो अच्छी करनी यह है कि अपने कुल की याद करना—क्योंकी जोनि बदलतीहै पर जीव का कुल नहीं बदलता है वह एक ही है--सो यह बात बिना सतगुर भगती के—और कोई जतन से हासिल नहीं होगी ॥

[१३६] अंत में जिसने जाकर बासा किया वही वसंत है-और वही अच्छा वसंत है और उनकोही हमेशा बसंत है—जो चढ़कर जहां सबका अंत है वहां बसे हैं

[१३७] रजोगुन तमोगुन सतोगुन-इन तीनों को छोड़कर सारगुन जो भगती का है लेना चाहिये---जब ज्ञान हासिल होगा और पोथीयों के ज्ञान का भरोसा नहिं और जो सतगुर भगती की कमाई करके ज्ञान हासिल होगा वह सच्चा और पूरा ज्ञान है ॥

[१३८] सवाल सेवक का सतगुर से-- सुरत शब्द को क्यों नहीं पकड़ती क्योंकि शब्द सारे है और संत कहते है कि सब पसारा शब्द का है और सुरत शब्द की अंस है—जवाब सतगुर का हकीकत में शब्द सारे है पर जब से सुर्त पिंड में उतरी है तब से बाहर मुख होगई है और बाहर शब्द में रचगई है जो शब्द में नहीं रचती तो संसार का काम किस तरह से चलता अब जबतक सतगुर पूरे न मिले और उनकी सरन न लेवे—तबतक अंतर

मुख्य शब्द को नहीं पा सक्ती है—जैसे माता और पिता की सरन लेनेसे संसार में फस गई है ऐसेही जब सतगुर की और उनके सतसंग की सरन लेगी तब इस संसार के जालसे निकलेगी ॥

[१३९] इसवक़्त में मन के निर्मल करने के लिये सिवाय सतगुर और नाम की भक्ती के और कोई उपाव और जुगत नहीं है और जो लोग तीर्थ और बरत और और जतन वास्ते निर्मल करने मनके कररहे हैं सो उनको कुछ फ़ायदह नहीं होगा यह सच्च है कि सतगुर पूरे का मिलना मुशकिल है पर खोजी और संसकारी को सहज में मिलजाते हैं

[१४०] कोई मुसलमान नादान ऐसा कहते हैं—कि मुर्शद यानें सतगुर को किसी से सिजदह कराना नहीं चाहिये क्योंकि मुर्शद को तो सब में ख़ुदा नज़र आता है इसलिये ख़ुदा से सिजदह करा-

ना मुनासिब नहीं है सो यह उनकी कम फ़हमी है--मुर्शद का खुदा होना है-और मुरीद का खुदा नादान है इस सूरत से नादान खुदा को दाना खुदा का सिजदह करना वाजिब है और मुर्शद अपने तईं खुदा नहीं कहते वह तो अपने तईं बंदा ही मानते हैं--पर मुरीद पर फ़र्ज़ है कि वह अपने मुर्शद को खुदा माने--जब तक खुदा नहीं मानैगा काम पूरा नहीं होगा मोलवी रूम ने भी कहा है (शेर) चूं कि करदी ज़ात मुर्शद रा क़बूल--हम खुदा दर ज़ातश आमद हम रसूल--याने मुर्शद की ज़ात में खुदा और पैगम्बर दोनों आ गये यह उपदेश तरीक़त वालों के वास्ते है—शरीअत वालों के वास्ते नहीं है—और मालूम होवे कि जिस वक़्त में पैगंबर साहब ज़ाहर हुये थे उस वक़्त में इन्सान को नजात याने मोक्ष दे सक्ते थे पर अब कुछ नहीं कर सक्ते

हैं—अब इस वक़्त में जिस इंसान को मुर्शद कामिल मिलेंगे और वह उनको खुदा मानेगा तब काम पूरा होगा और तरह कुछ हासिल नहीं होगा--पुरानी चाल किताबोंसे थामोलवियों सेसीखकर चलाया करें पर किसी के दिल में इश्क़ पैदा न होगा और जबतक इश्क़ न होगा वस्ल मुश्किल है—सो यह इ-श्क़ पूरे सतगुर की सेवा और निश्चय से हासिल होगा और कोई जतन इस की प्राप्ती का नहीं है ॥

[१४२] पहिले मनुष्य को सीधी सड़क मिलनी चाहिये फिर मुक़ाम को पहुंच सक्ता है और सड़क सीधी बिना सतगुर पूरे के पिरापत नहीं होगी सो सतगुर का तो कोई खोज नहीं करता है-तीरथ मूरत बरत और नमाज़ रोज़ा और हज्ज या विद्या पढ़ने में मेहनत करते

हैं—इन कर्मों से सिवाय अहंकार के और कुछ फ़ायदह नहीं होगा—और सच्चे मुकाम का भेद सतगुर पूरेही से मिलेगा ॥

[१४२] जो लोग कि शरीअत याने करमकांड के बन्धुये हैं वह हमेशाह संसार में बन्धे हुये रहेंगे कभी मालिक के दरबार में नहीं जावेंगे— और जो सतगुर वक़् की सेवा तन मन धन से करेंगे वही सच्चे मालिक के दरबार में दख़ल पावेंगे—और सतगुर आपही मालिक हैं जो उनकी सेवा है वह मालिक की सेवा है—और जो सतगुर को छोड़ कर मालिक को ढूंढ़ते हैं उनको मालिक कभी नहीं मिलेगा—और जो सतगुर की सेवा में लगे हैं उनको मालिक मिलगया जब आंख खुलेगी तब पहचान लेंगे—और जबतक पूरी आंख न खुले

तबतक संत सतगुरों के वचन के द्वारे प्रतीत करके सेवा में लगे रहें और सतसंग करते रहें—और सतगुर के चरनों में प्रीत और प्रतीत बढ़ाते रहें एक दिन सब भेद खुल जावेगा ॥

[१४३] मुख्य जतन सतगुर वक़्त की सेवा है इसी से अंतःकरन शुद्ध होगा जब अंतःकरन शुद्ध होगया तबही बख़्शिश नाम की होगी—इस वास्ते जो सतगुर की सेवा में लगे हैं उन्हीं पर सतगुर की कृपा है ॥

[१४४] अंतर और बाहर की सफ़ाई बिना शब्द के नहीं हो सक्ती है—सो पहिले असथूल की सफ़ाई होके और फिर अंतर की सफ़ाई होगी—इस वास्ते पहिले बाहर का बचन मानना चाहिये और जब तक यह न माना जायगा

तब तक अंतर का शब्द पिरापत नहीं होगा ॥

[१४५] भक्ती चार प्रकार की है—तन मन धन और बचन से—बचन की भक्ती हर कोई कर जाता है याने जो पंडित भेष आदिक आते हैं वह कहते हैं कि आप पूरे संत हैं और आप के समान इस वक़्त दूसरा नहीं है और हार भी चढ़ा देते हैं—पर जब उनको वह हार परशादी होकर दिया जावे तब गर्दन मोड़ लेते हैं—तो मालूम हुआ कि उनका जितना कहना है वह कपट का है और अपना ब्राह्मण और भेष धारी होने का अहंकार नहीं छोड़ते और सतगुर को गृहस्थी जानते हैं—ऐसे बचन की भक्ती बिलकुल झूठी है सच्ची भक्ती उसकी है कि जिसने तन मन धन सतगुर के अरपन कर दिया है—याने

इन सब प्रकार से सेवा करता है और बाकी सब कपटी हैं इनको भाव नहीं आवेगा योंहीं बातें बनाया करेंगे ॥

[१४६] संत सत्तगुर के सतसंग में जीव का आना मुश्किल है और किसी सबब से आ भी गया तो ठहरना मुश्किल है—क्योंकि जिसवक्त संत वेद पुरान और कुरान सब को खंडन करके अपना मत सब से ऊंचा और न्यारा बर्णन करेंगे उस वक्त कोई खोजी या दर्दी ठहरेगा क्योंकि वेद मत का भी निश्चा सुननेसे आया है कुछ देखा नहीं है पंडित और ब्रह्मणों के कहने से प्रतीत करी है इसी तरह संत बचन को भी प्रतीत करके जिस मुकाम को संत कहते हैं मान लेना चाहिये पर यह बात खोजी से बनेगी—टेकी—नहीं मानेगा ॥

[१४७] सतगुर और सतसंग उसीको प्यारे लगेंगे जो संसार में दुखी है पर इसका कुछ नेम नहीं है कोई संसार में दुखी भी है पर सतसंग की बिलकुल चाह नहीं है—परमार्थियों की क़िस्मही जुदी है वही परमार्थी हैं जिनको चाहे संसार का सुख भी भली प्रकार परापत होवे पर बिना सतगुर और सतसंग के उस सुख को दुख रूप देखते हैं और संसारी वह हैं कि जो संसार के सुखों को चाहते हैं और उनके न मिलने और छोड़ने में दुखी होते हैं और यह नहीं जानते कि संसार के सुख सब दुख रूप हैं और आख़िर को याने अंत में धोका देंगे॥

[१४८] इस जीव के मैल दूर करने के लिये सिवाय सतसंग के और कोई उपाव नहीं है जैसे साबन में यह ता-

क़ुव्वत रक्खी है कि कैसाही मैला कपड़ा होवै और जब साबुन लगाकर धोया तुरत साफ़ होगया याकि घास का ढेर जमा है और जब उस में एक चिनगी डालदी—एक छिनमें भस्म हो जाता है—इसी तरह सतसंग है कि इसमें जन्म जन्म के कर्म कट जाते हैं—और सन्सकार दिन ब दिन बदलता जाता है॥

[१४९] संतों के बचनों को जो वेद से मिलाते हैं वह बड़े नादान हैं संतों की महिमां आप वेद का कर्ता नहीं जानता है फिर वेद क्या जाने और संत किसी के क़ैदी नहीं हैं जिसवक़्त जो मसलहत और मुनासिब जानते हैं वही रस्ता जारी फ़रमाते हैं जो मानेंगे उनको फ़ायदह होगा और जो नहीं मानेंगे वह अभागी रहेंगे क्योंकि दुनिया में भी जिस राजा का राज

होता है वह अपना क़ानून चलाता है जो उसको मानते हैं वह फ़ायदह उठाते हैं—और जो हुक्म अदूली करते हैं वह अपना नुक़सान करते हैं—और हुक्म अदूली की सज़ा के भागी होते हैं

[१५०] संत दयाल इस जीव को पुकार पुकार कर कहते हैं कि तू सत्त-पुरुष का पुत्र है—ऐसी करनी मतकर जो जमकी चोट खानी पड़े—पर यह जीव नहीं मानता है और संतों के बचन की प्रतीत नहीं करता है वही काम करता है कि जिससे जम की चोट खावे-संतों को इतनी ताक़त है कि चाहें इसको जबरदस्ती मना सक्ते हैं और जमको भी हटा सक्ते हैं पर वह अपनी दयालता का अंग नहीं छोड़ते हैं सिवाय बचन के और किसी तरह से जीव को नहीं ताड़ते हैं—जो बड़ भागी हैं वह

उनके बचन को मानते हैं और जो अभागी हैं वह नहीं मानते हैं ॥

[१५१] संतों का मतलब जीव को समझाने और बुझाने से यह है कि ये सब तरफ़ से हटकर एक सतगुर को ऐसे पकड़े—कि जैसे स्त्री पति को पकड़ती है कि फिर दूसरे से उसको ग़रज़ नहीं रहती है--पर आज कल के गुरुओं का यह हाल है—कि चेला तो कर लेते हैं और उसको उपदेश तीरथ वर्त और मूरत का करते हैं अपनी पूजा नहीं बताते हैं--सबब इसका यह है कि ये लोग गुरुवाई के लायक़ नहीं हैं उन को गुरू बनाना नहीं चाहिये यह तो आपही भरमें हुये हैं—और औरों को भी भरमाते और भटकाते हैं गुर पदवी संतों की है और जीव का उद्धार जब होगा तब संत सतगुर के द्वारे होगा संसारी गुरु-

इन्हों से उद्धार नहीं होसक्ता है—ब्रह्मा विष्णु महादेव और ईश्वर जीव की चौरासी नहीं छुड़ा सक्ते हैं—पर संत बचा सक्तेहैं—और संतों के सतसंग में वही जीव आवैगा जो संसार का दुखा हुआ और तपा हुआ है—और किसी का काम नहीं जो संतों के सन्मुख ठहर जावे—जब संतों की महिमा इस तरह पर जीव के चित्त में समा जावे तौ फिर पंडित और भेख के फंदे में नहीं फंसे-गा सिर्फ़ सतगुरु संत की तरफ़ खैंचा जावैगा और उन्हीं को पकड़ेगा—और यही चाहिये है कि जब तक संत सत-गुरु पूरे न मिलैं तब तक उनका खोज करै जाय—जो उनके खोज में जीव की देह भी छूट जाय तौ कुछ हर्ज नहीं है—क्योंकि फिर नरदेही मिलैगी और संत सतगुरु भी ज़रूर मिलैंगे और जो चाह ज़बर होगी तौ इसी जन्म में मेला

होजावेगा और जो पंडित और भेख के जाल में फंस गया तौ चाहे संसार में धन पुत्र स्त्री और मान परापत हो जावे पर चौरासी के चक्कर से नहीं बचेगा और फिर नरदेही मिलने का भरोसा नहीं है ॥

[१५२] गुरमुख वही है—जो सतगुर के हुक्म में बरते हुक्म से बाहर न होवे—और जब तक ऐसा अंग न होगा तब तक उस पद को भी नहीं पावेगा यह बात मुशकिल है—पर जो कोई ऐसी होशयारी रक्खे कि जिसमें सतगुर राज़ी होवें वही काम करे याने जो सेवा भी करै तौ उस में रज़ामंदी सतगुर की मुख्य रक्खे और इतनी पहिचान करता रहै—कि मेरी सेवा सतगुर को पसन्द है या नहीं—या मेरी नाराज़गी का ख्याल करके कबूल कर रहे हैं-जो

यह समझ में आजावे कि इसमें सतगुर को तकलीफ़ है सिर्फ़ मेरी हठ से मंजूर कर रहे हैं तो उस सेवा को फ़ौरन छोड़ देवै—और जिसका ऐसा अंग है वही गुरमुख बनेगा और जिसकी ऐसी हा-लत नहीं है उसको मुनासिब है कि सतसंग नेम से करै और बचन को चित्त से सुने और याद रक्खे तो उस का अंग बदलता जावेगा ॥

[१५३] हों मैं-याने अहंकार की मैल सब जीवों के हृदय में भरी हुई है—और जबतक यह न जावेगी तबतक परमार्थ नहीं बनैगा—और यह मैल बाहर मुख उपाशना से नहीं जा सक्ती इस वास्ते लाज़िम पड़ा कि अंतर मुख उपाशना की जावे—और इस उपाशना का भेद सिवाय पूरे सतगुर के और कोई नहीं दे सक्ता है—इस वास्ते हर एक जीव

परमार्थी को मुनासिब है कि पहिले अपने वक्त का पूरा सतगुर खोजे और उनकी सेवा करे तब काम पूरा बनैगा ॥

[१५४] इस जीव के सब बैरी हैं कोई मित्र नहीं--मन जो तीन गुन से मिला हुआ है वह भी इस जीव को ऐसे देखता है जैसे बिल्ली चूहे के खाने का इरादा रखती है— सिवाय इसके जो जीव काल के हैं और उसका हुक्म मानते हैं याने मन के कहने से चलते हैं सोभी काल उनको दुख देता है-इसी तरह सब जीव दुखी रहते हैं—पर जो जीव सतगुर के हैं उनके ऊपर सतगुर की दया है और काल भी उनसे डरता है और उनका सहायक रहता है-इस वास्ते सब को चाहिये कि सतगुर वक्त की सरन लेवें तो यहां भी और वहां भी उनका बचाव और रच्छा होगी ॥

[१५५] जब कोई शख़्स हज़ार दो हज़ार आदमी भरती करना चाहता है तो हज़ारों उम्मेदवार जमा होते हैं पर उन में से सौ पचास क़ाबिल पसन्द निकलते हैं और बाक़ी दर्जे ब दर्जे कम होते हैं और कोई बिलकुल ना-लायक़ निकलते हैं-इसी तरह से जब संत सतगुर सतसंग जारी फ़रमाते हैं तो बहुत से जीव अनेक तरह की बासना लेकर आते हैं—जो जो निर्मल बासना परमारथ की रखते हैं उनको सतगुर छांट लेते हैं—और बाक़ी को उम्मेद-वार करते हैं-और जो भागवान परमार-थ के हैं वही संतों के सतसंग में ठहर-ते हैं—बाक़ी आपही हट जाते हैं उन से वहां की झटक नहीं सही जाती क्योंकि सच्ची और निर्मल चाह परमार-थ की नहीं रखते हैं—इस वास्ते संत

——0o——

उनपर ज़ोर नहीं करते हैं आयंदह के वास्ते दया करते हैं ॥

[१५६] हज़ारों ब्रह्मा—हज़ारों गोरख हज़ारों नाथ और हज़ारों पैग़म्बर तृष्णा की अग्नि में जल रहे हैं क्योंकि उनको सतगुर नहीं मिले--और अगर कोई यह सवाल करै कि जब ऐसे बड़े बड़ों को सतगुर की पहिचान नहीं हुई तो फिर जीव कैसे पहिचान सकता है उसका जवाब यह है कि यह सब अपने अपने अहंकार में रहे इस को सतगुर पर निश्चय नहीं आया और इसी सबब से सतगुर ने आपको इनपर प्रघट नहीं किया-क्यों कि यह रचना के काम के अधिकारी थे और उनसे यही काम लेना मंज़ूर था अगर उनको सतगुर पर निश्चय आजाता तो फिर इनसे रचना का काम नहीं हो सक्ता और दुनिया का बिलकुल

बिगाड़ना भी मंजूर नहीं है—जो जीव कि संसारी हैं उनके वास्ते ये लोग पैदा किये गये हैं कि उनकी सम्हाल करें उनके लिये सतगुरु का उपदेश नहीं है और न वह सतगुरु के उपदेश को मानेंगे और न सतगुरु का भाव उनके चित्त में समावेगा—अब सतगुरु पुकार कर कहते हैं कि जब ऐसे बड़े बड़े जिन का निश्चा हज़ारों जीव बांधे हुये हैं चौरासी के चक्कर और नर्क याने दोज़ख़ की आग से न बचे तो फिर जीव कैसे बचेंगे—पर इस वचन की प्रतीत वही जीव लावेंगे जिनका भाग परमारथ का है और चौरासी से छुटकारा होने वाला है याने जिनको सच्ची और निर्मल चाह सच्चे मालिक से मिलने की है और जिनके संसारी वासना अनेक तरह की घसी हुई है वह सतगुरु के वचन की प्रतीत नहीं कर सके—पर

यह सब को मालूम होना चाहिये कि जनम मरन से बचाने वाले और सदासुख के अस्थान के बखशने वाले और निज धाम में पहुंचाने वाले सिर्फ़ संत सतगुर हैं—और ब्रह्मा बिष्णु महादेव और औतार और देवता या और पीर पैग़म्बर और औलिया आपही निगुरे हैं याने इनको संतसतगुर नहीं मिले और न चौरासी के चक्कर से आप बचे और न दूसरे को बचा सक्ते हैं जोजो इस बचन की प्रतीत लाकर सतगुर का खोज करेंगे वही सतगुर के अधिकारी जीव हैं और उन्हीं को सतगुर मिलेंगे और अपनी दया से उनका काम बनावेंगे और फिर वही जीव जनम मरन से रहित हो जावेंगे ॥

[१५७] दो चोर इस जीव के पीछे पड़े

हैं एक काल दूसरा मन—जबतक ये दोनों न मारे जावेंगे तबतक परमारथ नहीं बनेगा और सिवाय संत सतगुर के इनका मारने वाला और कोई नहीं है—इस वास्ते जो कोई संत सतगुर की सरन लेगा वही इनपर फ़तह पावेगा—और वही पार जावेगा ॥

[१५८] जो सतगुर के मंगता हैं उनकी मान प्रतिष्ठा नहीं जाती है क्योंकि सब सतगुर के मंगता हैं ऐसा रचना में कोई नहीं है जो सतगुर का मंगता न होवे और जिनको सतगुर से मांगने में लाज और शरम है वह काल के रूबरू दीन होंगे और उसके दंड उठावेंगे बड़ भागी वही हैं जो सतगुर के मंगता हैं ॥

[१५९] वेद और पुरान का जिनको निश्चा है वह कहते हैं कि सब मान्न

के सतसंग से जीव के पाप दूर होजाते हैं फिर संतों के सतसंग के फल का क्या बर्णन किया जावे कि जिसकी महिमां वेद और पुरान भी नहीं कह सक्ते जिसको संतों का सतसंग परापत है तो इसमें कुछ शक नहीं है कि उसके दिन भर के पाप तो जरूर साफ़ होते होंगे यह फल तो उनको हासिल होगा जो साधारन तौर पर नित्त सतसंग में आते हैं और बचन सुनते हैं और जो कि संतों का निश्चा रखते हैं और सतगुर वक्त से प्रीत करते हैं उनके फल का तो कुछ बर्णन नहीं हो सक्ता ॥

[१६०] संतों की जो अस्तुति करता है—या निंद्या करता है—दोनों का उद्धार होगा— पर जो सेवक होकर निंद्या करेगा उसका अकाज होगा उसकी निंद्या की बर्दाश्त नहीं है ॥

[१९१] फ़ायदह अंतर के सुनने और माने से होता है बाहर के कहने और सुनने वालों के बचन में असर नहीं होता—क्योंकि बहुत से पंडित और भेष पोथियां पढ़ाते और सुनाते हैं--पर ज़रा भी असर उनके दिल में नहीं दीखता ॥

[१९२] जब तक सतगुर की दया न होगी तबतक जीव के निश्चा नहीं आवेगा—और जिसके सतगुर के चर-णों में प्रीत और प्रतीत है उसी के दया पात्र समझना चाहिये—बहुत से लोग यह चाहते हैं कि हमारे रिश्तेदार और कुटंबियों के सतगुर के चरणों में निश्चा आजावे— यह चाह तो बुरी नहीं है पर इतना समझना चाहिये कि जबतक सतगुर दया दृष्टि न फ़र्मा-वेंगे तबतक प्रीत और प्रतीत आनी

मुश्किल है—यह बात सतगुर की मौज पर छोड़ देना चाहिये—क्योंकि जब वे चाहेंगे एक छिन में प्रीत और प्रतीत बख़्श देंगे और संसारके जाल से निकाल लेवेंगे ॥

[१६३] संतों के सतसंगी को मरते वक़्त तकलीफ़ नहीं होती बलकि और सूरता आजाती है क्योंकि वह पहिले से मौत को याद रखता है—और संसार में कारज मात्र बरतता है—उसके संसार की जड़ पहिले से कटी हुई है जैसे कटे हुये दरख़्त की हरियाली चंदरोज़ की है—इसी तरह संतों के सतसंगी का संसारी व्योहार समझना चाहिये ॥

[१६४] संतों का सतसंग करना बहुत मुश्किल है—किसी का यह हाल है कि सतसंग करते हैं और फिर नहीं

करते— याने बैठे बचन सुनत नज़र आते हैं—पर मानने के वास्ते नहीं सुनते—फिर उनको सतसंग क्या फ़ायदह करैगा सुनना और समझना उनकाही दुरुस्त है जिनके हृदय में असर होता है और उसके मुआफ़िक़ थोड़ा या बहुत बरताव भी है ॥

[१६५] ग्रंथों में सब जगह थोड़ा या बहुत रौला पड़ा रहता है—कहीं एक बात का खंडन और कहीं मंडन किया है जीव किसको माने और किसको न माने इसवास्ते जबतक सतगुर पूरे न मिलें जीव की ताक़त नहीं कि इस बात का निरने करसके--ग्रन्थ से गवाही मिल सक्ती है मारग हाथ नहीं आ सक्ता है मारग के भेदी संत सतगुरू हैं यह उनसे मिलैगा और किसी से नहीं हाथ लगसक्ता है ॥

[१६६] साध वही है जिसने सब आसरे छोड़ कर एक सतगुर का आसरा साधलिया है— और सब संतों का मूल मत जो शब्द है उसको दृढ़कर पकड़ा है—और जिस काम में कि गुर भक्ती में कसर पड़े उसको नहीं करता है—इस वास्ते वही गुर भक्त है और वही साध है ॥

[१६७] जिनको शौक़ परमारथ और खौफ़ चौरासी का है वही सतगुर से प्रीत करेंगे और प्रतीत भी सतगुर की उन्हीं को आवेगी-और जो परचा चाहते हैं और बिना परचे परतीत नहीं करते वह परमारथी नहीं हैं—उनको सतगुर पर भाव नहीं आवेगा—और परचा देकर प्रतीत कराने की मौज नहीं है क्योंकि परचे की प्रतीत का भरोसा नहीं है— प्रतीत उन्हीं की सच्ची है

जिन को सतगुरु के दर्शन और बचन प्यारे लगते हैं—और बिना उनके दिल को चैन नहीं आता-ऐसे जो जीव हैं वह परचा भी देखते हैं--और जो निरे परचे और करामात के गाहक हैं उनको परचा दिखाने की मौज नहीं है ॥

[१६८] सिवाय शब्द के और कोई रास्ता इस जीव को अपने मुक़ाम में पहुंचाने का नहीं है—और जो और रास्ते हैं वह काल के रास्ते हैं—शब्द हर एक के घट में मौजूद है इसलिये उसको सुनना चाहिये जो नहीं सुनते हैं वह अंत में दुख सहेंगे—बाहर के बाजे बजाने से यह बात हासिल न होगी और ज़ियादह मार उन पर पड़ेगी जो संतों के घर में हैं और फिर शब्द का खोज नहीं करते ॥

[१६९] पंडितों ने अपनी क़दर यों खोई कि जीवों को तीरथ और मूरत में लगाया-और जो संतों ने अपना मत वेद और शास्त्र से न्यारा कहा—पर पंडित और भेषने उसकी क़द्र न जानी और जीवों को भरमा दिया और अपनी क़द्र खोई--अब संत प्रघट यह कहते हैं कि तीरथ करने वाले और शास्त्र पढ़ने वाले और मूरत के पूजने वाले सब चौरासी में चले जाते हैं और संत दया करके समझाते हैं कि कर्म भर्म छोड़कर सतगुर वक़्त का खोज करके उनकी सरन लो और कोई उपाव चौरासी से बचने का नहीं है जब चाहो तब करो पर जब करोगे तब येही जतन करना पड़ैगा बिना इसके चौरासी से बचाव नहीं हो-सकता है--चाहे मानो चाहे न मानो ॥

[१७०] जीव और ब्रह्म दोनों भाई हैं

सिर्फ़ इतना फ़र्क़ है कि उसको कारमुख़्तारी मिली है और जीव सब उसके हुक्म में हैं देह का बनाना और पालन करना सुपुर्द ब्रह्मा बिष्णु महादेव के है पर मुक्ति का देना सिवाय संतों के दूसरे के इख़्तियार में नहीं है--क्योंकि उस मालिक के कि जिसके अंस यह जीव और ब्रह्म हैं सिर्फ़ संत शरीक हैं याने वे आप मालिक हैं उस मालिक ने आप संत स्वरूप जीवों के उद्धार के निमित्त धरा है और इस स्वरूप से जीव को वह अस्थान देता है जो ब्रह्मा बिष्णु महादेव को हासिल नहीं है—पर संत चरन पर प्रीत और प्रतीत दृढ़ होनी चाहिये ॥

[१०१] पहिले एक ही था फिर दो हुये फिर तीन हुये--और फिर अनेक हुआ यों लाखों और बेशुमार पर नौबत पहुंची अब जिसको पूरे सतगुरु जो कि उस

एक से एक हो रहे हैं और उसी एक का स्वरूप हैं मिलें तब वह उनकी दया से अनेकता के भरम से बचे और अपने निज अस्थान में पहुंचे ॥

[१७२] संसार की जो करतूत है उस-का फल जीव को प्रत्यक्ष नज़राई देता है—इस सबब से संसार में जल्दी फस जाता है और परमारथ का फल गुप्त है उसपर जल्दी निसचा नहीं आता है और पहिले निसचा ज़रूर है—क्योंकि बिना निसचा के करतूत कुछ नहीं बनेगी और जब कुछ करतूत न बनी तो फल कैसे मिले और तरक्की कैसे होवे॥

[१७३] वह जो सत्त है जप तप और मौन साधन से नहीं मिलता है ऐसी करतूत वाले सब थक रहे किसीने उस सत्तका जिस को संतों ने पाया है भेद नहीं

पाया—वह भेद सतगुर वक़्त की सेवा और सरन से मिलसक्ता है क्योंकि उससत्त ने आप सतगुर रूप धरा है--इसवासते सब जीवों को जो सत्त की प्राप्ती की चाह रखते हैं चाहिये कि और कर्म और धर्म छोड़ कर सतगुर वक़्त की प्रसन्नता के लिये मेहनत करैं-तौ एक रोज़ उस पद को पावेंगे ॥

[१७४] बाल विधवा और बाल साध को वक़्त याने उमर का काटना निहायत मुश्किल होजाता है--और बहुतेरे तौ खराब होजाते हैं पर जो उनको सतगुर पूरे मिलजावें और उनपर निस्चा आजावे तौ दोनों का वक़्त सहज में कट जावे और जो बिद्या गुरू मिले तौ बिद्या या तीरथ बरत में या मूरत पूजा में बृथा जन्म उनका बरबाद जावेगा और जनम मरन की फांसी नहीं

कटैगी इस वास्ते उनको और सब जीवों को चाहिये कि जितनी हो सके सतगुरु पूरे के खोज में मेहनत करें जो उनकी खोज में इसका शरीर भी छूट [illegible] न करै--क्योंकि जब सतगुरु के मिलने की आसा इसके चित्त में दृढ़ हुई तो वह ठीक सच्ची सच्चे मालिक की है उसको मालिक सत-गुरु रूप से ज़रूर मिलेगा ॥

[१७५] जीव इस वक़्त में ऐसे अभागी हैं कि संतों के बचन की प्रतीत नहीं करते—और वेद शास्त्र क़ुरान पुरान की बात को ख़ूब पकड़ते हैं—यहां तक कि वहां कुछ परचा भी नहीं मिलता पर काल ने ऐसा अड़ंगा लगाया है कि अपने मतलब के बचन को जीव से मना लेता है और संत जो दया कर के इस को भली प्रकार समझाते हैं सो

नहीं मानता है—और उन से परचे मांगता है—इस से मालूम हुआ कि ये जीव काल के हैं जो बिना परचे संतों का बचन नहीं मानना चाहते और काल का बचन बिना परचे मानते हैं ॥

[१७६] प्राण जोग और बुद्धि जोग की गम्म आकास तक है इसके आगे स्रुत शब्द के आसरे जासक्ती है—पर इन की गम आगे नहीं है और वहां पहुंच कर अजायब पुर्ष का दर्शन स्रुत को परापत हो सक्ता है—जो कि सतजुग द्वापर त्रेता में सब से गुप्त रहा किसी को उसका भेद नहीं मिला अब कलजुग में संतों ने प्रघट किया है—जिनको संतों के बचन की प्रतीत है—वही उस अजायब पुर्ष का दर्शन पावेंगे और मुक्ति पद को परापत होंगे ॥

[१७७] आज कल ऐसा अन्धेर हो-रहा है कि बहुतेरे साधू पंडित होने की अभिलाषा करके काशी जाते हैं और पंडितों के संग में अपना जन्म गंवाते हैं [illegible] मुनासिब था कि जब साध हुये थे तो सतगुर पूरे का खोज करके उनकी सेवा और सतसंग और कुछ अंतर मुख अभ्यास याने साधना करते जिससे साध बनजाते--और अपने निज अस्थान को पाते—न कि विद्या पढ़ने में अपने जन्म को गंवाया पंडितों के संग से कोइ भी जन्म मरन से नहीं बच सक्ता—क्योंकि ब्रह्मा जो वेद का कर्ता है आपही चौरासी के चक्कर से नहीं निकल सक्ता फिर पंडितों की क्या ताकत कि उससे बचेंगे—और जिस पर आज कल के पंडित और ज्ञानी तो निरे वाचक हैं और सच्ची पंडिताई और सच्चा ज्ञान भी उनको परापत

नहीं है यह सब चौरसी के अधिकारी हैं क्योंकि सिवाय सतगुर वक़्त के और किसी की ताक़त नहीं कि जीवों को चौरासी से बचाकर निज घर में पहुंचावें ॥

[१७८] काल ने अपना जाल संसार में किस खूबसूरती के साथ बिछाया है—कि जो जीव परमारथ कर रहे हैं और जानते हैं कि हम बड़े परमारथी हैं और लोग भी उनकी तारीफ़ करते हैं कि ये बड़ा परमारथ कमा रहे हैं उनका हाल जो ग़ौर करके देखा जावे तो परमारथ का एक किनका भी नहीं पाया जाता—याने तीरथ बरत और जप और मूरत पूजा में मेहनत कर रहे हैं और नेम अचार बहुत भांत करते हैं इस में सिवाय अहंकार के और कुछ नहीं परापत होता—इस वक़्त में यह करतूत मालिक को मंजूर नहीं है और

न थे चौरासी से बचासकती है—इस वास्ते सब चौरासी में चले जाते हैं—जिसको चौरासी से बचना मंज़ूर है उसको चाहिये कि सतगुर वक़्त की भक्ती करें सिवाय इसके दूसरा उपाव बचने का नहीं है-पर क्या कहा जावे कि जीवों को और साधना में तो मेहनत करना मंज़ूर है पर सतगुर भक्ती क़बूल नहीं करते बाज़े ग्रन्थ वग़ैरह की टेक में बंधे हुये हैं और उसी को गुरु मानते हैं अब ग़ौर करना चाहिये कि ग्रन्थ को गुरू मानने से क्या फ़ायदह होगा और कहां ऐसा हुक्म है—ग्रन्थ तो जड़ है उसकी कोई सेवा नहीं हो सक्ती है—फिर क्या गुर भक्ती ऐसे जीवों से बन आवेगी—ग्रन्थ की भक्ती थे है कि जो उसमें बचन लिखा है उसपर अमल करे याने उस में जो लिखा है कि सतगुर को खोजकरके उनकी सेवा करै और सरन

लेवै इस बचन को माने जब यह बच-
न न माना गया तो ग्रन्थ की टेक झू-
ठी है—इनका भी वही हाल समझना
चाहिये जो कि मूरत पूजा वालों का है
पर सबब इस गलीती का यह है कि जी-
वों को कोई सच्चा समझाने वाला नहीं
मिलता इस सबब से सब भरम और
भूल में पड़े हैं और जो गुरू उनको मिलते
हैं वह आप कभी चेले नहीं हुये हैं और
जीवों को भटकाते और भरमाते हैं--क्या
पंडित क्या भेष सब का यही हाल है
इनमें कोई भी सतगुर और सतगुर
भक्ती की महिमा को नहीं जानता
किताब और पोथी और पुरानी रस्म
और लीक में आप भी बंधे हैं और उन्हीं
में जीवों को भी बांधते चले जाते हैं सतगुर
भक्ती का उपदेश कि जिस से जीव का
छुटकारा होवै और निज घर अपना
मिलै कोई नही करता यह उपदेश

सिर्फ़ संत याने आप सत्पुरुष जब सं-
सार में प्रघट होते हैं करते हैं क्योंकि
यह सबसे उत्तम मारग है और जल्दी
से जीव का उद्धार इससे होता है पर इस
उपदेश को वह जो जीव कि संसकारी हैं
मानेंगे और सतगुर का खोज भी वही
करेंगे और जो लोग कि ऊपरी खेल और
चमत्कार में राज़ी होते हैं उनसे सतगुर
भक्ती की कमाई जिससे तन मन और
धन पर चोट पड़ती है नहीं बनेगी
और उत्तम संसकारी वही हैं जो
सतगुर और नाम की खुखता करें ॥

[१७९] संसारी जीव मीठा सलोना
भोजन खाकर प्रसन्न होते हैं और अच्छे
बस्त्र पहन कर मगन होते हैं सो यह
सब बृथा है—और गुरमुख को कौन
सा पदारथ मीठा और सलोना और
कौनसा बस्त्र प्यारा लगता है—उसका

वर्णन संत सतगुर इस तरह करते हैं कि गुरमुख वह है जिस्को सतगुर का बोलना मीठा लगता है क्योंकि इस से ज़ियादह कोई पदारथ रसीला नहीं है और सतगुर के वचन का सुनना सलोना लगता है—और सतगुर के ऊपर भाव का आना गुरमुख का पैराहन है-सबका सार यह है पर यह हाल सच्चे और निर्मल परमार्थी का है उसी को यह पदारथ ऐसे प्यारे लगेंगे जैसा कि ऊपर कहा है और संसारी जीवों को उन से नफ़रत होगी ॥

[१८०] आज कल के ज्ञानी वेद को पहिले कहते हैं और संतों को पीछे बताते हैं यह इन की बड़ी भूल है और सबब उसका यह है कि यह उन को संत जानते हैं कि जो वेद को पढ़ कर उस के मुआफ़िक़ चलते हैं और

जिनको कुछ थोड़ी सी साध गती हासिल हुई है—पर जो संत कि वेद के कर्ता के करता हैं उनकी इनको बिलकुल खबर नहीं है—जो वेद पढ़कर संत कहलाते हैं वह इन संतों के सेवकों की भी बराबरी नहीं कर सकते हैं— जैसे एक शख्स ने बिद्या तो पढ़ी पर नौकरी न पाई दूसरे ने बिद्या कम पढ़ी पर नौकरी बड़े दरबार में पाई और उसपर हुशियार है—फिर बिद्या वाला उसकी बराबरी नहीं कर सकता है—यही हाल आज कल के ज्ञानियों का है कि बिद्या तो खूब पढ़ी पर नौकरी नहीं करी याने सतगुर की भक्ती परापत नहीं हुई और संतों के सेवक चाहे मूरख भी हैं पर उनको भक्ती और सरन पूरे सतगुर की परापत है तो वह एक रोज़ पूरे पद को पावेंगे— और बाचक जोगी और ज्ञानी चौरासी में भटका खावेंगे ॥

[१८१] पांचों शास्त्रों का दोष तो वेदांत ने निकाला और वेदांत का दोष अब संत सतगुर निकालते हैं सतजुग त्रेता और द्वापर में इन शास्त्रों की पोल नहीं निकली क्योंकि जब संत प्रघट नहीं हुये थे अब कलजुग में वास्ते उद्धार जीवों के संतों ने चरन पधारे हैं और सब मतों के दोष और गलतियों को जनाते हैं और सच्चा और सीधा रस्ता उद्धार का बतलाते हैं—पर जीवों की ऐसी ओछी मत है कि उनके बचन को नहीं मानते और उनपर प्रतीत नहीं लाते हैं— गौर करने से मालूम होगा कि वेद मत का निश्चा भी तो पढ़कर या सुनकर किया है कुछ कमाई उसकी नहीं करी और न कर सकते हैं क्योंकि जो अभ्यास कि वेद में लिखा है उसकी कमाई इस जुग में नहीं बन सकती है और कमाई वाले पर इनको प्रतीत नहीं-

बर्नेह उस से जुगत कमाई की संतों की
रीत से दरियाफ़्त करके अभ्यास में
लग सकते हैं और जो सिर्फ़ पोथियों
के आसरे रहे और उन्हीं को पढ़ा किये
तो हरगिज़ जुक्त उन से हासिल नहीं
होगी पर विद्या का अहंकार पैदा
होगा कि वह और भी अंताकरन को
मलीन करेगा और क़ाबिल कमाने
जुगती के भी नहीं रहेगा आज कल यही
हाल देखने में आता है कि बातें तो
बहुत सी बनाते हैं पर कमाई कुछ भी
नहीं——इस वास्ते परमारथी जीवों को
मुनासिब है कि सिवाय सतगुर भक्ती
या खोज सतगुर के और कुछ काम न
करें——क्योंकि और कोई करतूत से अं-
ताकरन की शुद्धी इस जुग में नहीं हो
सक्ती है और जब अंताकरन की शुद्धी
न हुई तो मुक्त कैसे परापत होगी और
सिवाय संत सतगुर के कोई जुक्ती परा-

पती धुरपद की नहीं बतलासक्ता है क्योंकि उस घर के भेदी सिर्फ़ वही हैं और किसी को यह भेद नहीं मालूम है और ऐसे जो संत सतगुर हैं उन्हीं की सेवा और भक्ती से अंताकरन की शुद्धी और फिर उन्हीं की दया और मेहरसे सुत्त पद की परापती होगी और जुक्ती की कमाई भी बनआवेगी—सिवाय इसके दूसरा उपाव उद्धार का नहीं है॥

[१८२] भक्ती का बीज सिवाय संत सतगुर के और कोई नहीं डाल सक्ता है जो संत सतगुर दयाल हैं वही इस जीव को सीधा रस्ता बतावेंगे-और बाक़ी सब भरमाने और भटकाने वाले हैं-और आपही भरम में पड़े हुयेहैं—क्योंकि ग़ौर करो कि ईंट पत्थर की बनाई हुई मूरत जिसको आप आदमी ने गढ़ा है रखकर भग वान मानते हैं और लोगों से उसको

पुजवाते हैं और जो मंदर कि मालिक का बनाया हुआ है और जिसमें वह आप आनकर बैठा है और जहां घंटा संख और नाना प्रकार के वाजे हर वक़्त बज रहेहैं नित आरती हो रहीहै और उसका भेद इस जीव को नहीं बताते हैं—इस लिये ऐसे जो अंधे हैं वह जब आपही भूल में पड़ेहैं वह और को भी रस्तह भुलाते हैं और बजाय जीवों के कारज संवारने के उनका अकाज करते हैं अंधा अंधे को क्या रस्ता बतावेगा—इस वास्ते कहा जाता है कि सतगुर खोजो जब तक सतगुर नहीं मिलैंगे तब तक अंतर का भेद हरगिज़ परापत नहीं होगा और सतगुर वही हैं जिनका इश्क़ शब्द में लगा हुआ है और अंतर का भेद और रस्तह निज घर का शब्द के रस्ते से बताते हैं—और अगर बाहर की करतूत से कोई उनको

परखा चाहे तो हरगिज़ परख में नहीं आवेंगे—कुल जीव नादान और अंधे हैं इनकी क्या ताक़त कि संत सतगुर जो सुझाके हैं उनको परख लेवें और पकड़ लेवें अंधा सुझाके को नहीं पकड़ सकता है पर सुझाका जिसको चाहे अपने को पकड़ा सकता है—इस वास्ते दुनिया के जीवों की ताक़त नहीं है कि सतगुर को पहिचान लेवें—और सतगुर अपनी मौज से चाहें तो हर तरह से इसको जना सकते हैं—पहिले इसी क़दर पहिचान काफ़ी है कि जो घट का भेद बतावें—शब्द मारग का उपदेश करें—उनको सतगुर जाने और इतना देख लेवे कि वह आप भी शब्द में रत हैं या नहीं—घट का भेद सिवाय संतसतगुर के दूसरे के पास नहीं है या जिसको उन्होंने बख़्शा होगा और सतगुर किसी बानी बचन या ग्रन्थ के

आसरे नहीं हैं वह आप मालिक रूप हैं और जबतक कि घट में अवतार संत सतगुर की दया और मेहर लेकर न करेगा तब तक निज पद को पराप्त नहीं होगा—और संत सतगुर की मौज है कि चाहे जिस जीव को जैसे चाहें पार करें-याने उनकी प्रीत और प्रतीत मुकद्दम है फिर चाहें वह पहिले सतसंग करावें या अभ्यास शब्द का करावें चाहे पहिले सेवा में लगावें वह सब तरह समर्थ हैं और जो प्रसन्न होवें तो एक छिन में चाहें जो बख्श देवें पर उनका प्रसन्न होना ज़रूर है ॥

[१८३] जिसको एक वक़्त बिरह उठी याने शौक़ मालिक के मिलने का पैदा हुआ जो उस हालत में सतगुर पूरे न मिले तो वह बिरह निसफल जावेगी अगर बिरही यह दावा करे कि बिना सतगुर के पद को पाऊंगा यह ग़लत

है क्योंकि बिना सतगुर वक़्त के मिले
पद का मिलना नामुमकिन है चाहे
बिरही होवे या नहीं दोनों को सतगुर
की ज़रूरत है—और जो बिरह किसी
क़दर सच्ची भी हुई और सतगुर पूरे न
मिले तो अधूरे गुरू के साथ में जाती
रहैगी—फिर जो गुरू उसको पुराभी मि-
ले तो उसकीचाह नहीं रहती और जि
सके बिरह और प्रेम नहीं है और वह
सतगुर पूरे की सरन में आगया तो
सतगुर दयाल अपनी दया से उसकी
बिरह और प्रेम बढ़ाकर काम पूरा
कर देंगे और जो अधूरे गुरू से मिला
तो वह अपनी बिरह के अहंकार में
रहैगा और काम भी पूरा नहीं बनेगा
सब तरह से मुख्ता सतगुर पूरे की है
इससे जानना चाहिये कि बिना उनके
मिलने के किसी का कारज पूरा नहीं
होसकता ॥

[१८४] सतगुर की सरन का दर्जा बहुत ऊंचा है और वैसे तो हर कोई कहता है कि हमने सरन लेली—पूरे सरन वालों की यह हालत है कि उन-को सिवाय सतगुर के और कोई प्यारा नहीं लगता है जिसकी यह हालत है उसका कहना सब दुरुस्त है पहिले जो संत हुये उन्होंने जबतक जीव ने तन मन धन नहीं भेंट किया उद्धार नहीं कि-या पर अब राधास्वामी दयाल जीवों को दुखी और बल हीन देखकर थोड़ी दीन-ता और प्रीत पर उद्धार अपनी तरफ़ से दया करके फ़रमाते हैं-इस वास्ते जिसको पूरे सतगुर के दर्शन और सेवा और सतसंग परापत है वही जीव बड़भागी हैं—सुत दारा और लक्ष्मी सब काहू के होय। सतगुर सेवा साधसंग कल में दुर्लभ होय॥

[१८५] राम जो कर्ता तीन लोक का है और उसका पालन और पोखन और संहार कर रहा है— सो जीव का मुद्दई है-क्योंकि उसने असली रूप से जुदा करके जीव को गर्भ बास दिया और फिर अनेक प्रकार के दुशमन अंतर और बाहर जीव के संग लगा दिये—याने अंतर में तो काम क्रोध लोभ मोह अहंकार और बाहर माता पिता सुत इस्त्री मित्र धन धाम और भोगों में फसा दिया इसलिये ऐसे दुखदाई को क्या माने— इस वास्ते सतगुर को मानना चाहिये कि जिनके प्रताप से ऐसे मुद्दई के जाल से निकल कर सदा सुख का अस्थान परापत होवे और कोइ बचाने वाला काल के जाल से इस संसार में नहीं है ॥

[१८६] संत सतगुर ने जिस नाम का निरने किया है वह वेद शास्त्र में नहीं है और संत सतगुर वही हैं जिनके पास वह पूरा नाम है और यों तो बहुतेरे भेषधारी अपने तईं साध और संत कहते हैं पर वह साध और संत हो नहीं सक्ते सच्चे और पूरे संतों के प्रताप से रोटी खाते हैं—पर संतों का पद वही पावैगा जो उनका प्यारा होवेगा और प्यारा वही होगा जो उनके चरणों में प्रीत और प्रतीत करेगा और प्रीत और प्रतीत उनकी मेहर और सेवा और सतसंग से आवेगी और त्रिलोकी नाथ का नाम और पद भी संतों की दया और उनकी जुकती की कमाई से मिलैगा और किसी तरह इस कल-जुग में नहीं मिलैगा ॥

[१८७] जिसको सतगुर के चरणों में प्रीत

है उनको सिवाय महिमा सतगुर के और कोई बात नहीं सुहाती है और जिसको सतगुर का निश्चा है वह सतगुर में कोई औगुन नहीं देखता है और जो औगुन दृष्टि आई तो सतगुर भाव जाता रहा—इस वास्ते सतगुर की निसबत कभी औगुन दृष्टी लाना नहीं चाहिये और जिसकी ऐसी दशा है वही गुरमुख होगा और उसी को एक दिन परमपद मिलैगा ॥

[१८८] ईश्वर को सर्वत्र आकाश और पाताल में व्यापक बताते हैं पर किसी को अबतक मिला नहीं फिर उसके सर्व व्यापक होने से जीव को क्या फायदह क्योंकि वह रूप किसी को परापत नहीं होता और जब मालिक ने सतगुर रूप धारन किया तो इस रूप से जीवों को दर्शन भी देता है और भेद समझा कर अपनी दया के साथ जुकती की

कमाई कराकर निज घर में पहुंचाता है और अपने निज रूप का दर्शन देता है अब ग़ौर करना चाहिये कि सतगुरु रूप बड़ा है कि व्यापक रूप—इससे किसी का कारज नहीं बनता—और सतगुरु रूप से जिस वक़्त कि जीव को सतसंग और सेवा करके उसपर निश्चा आ गया तो सहज में कारज बनता है बिना मिलाप सतगुरु वक़्त के किसी को मालिक का पूरा निश्चा नहीं होसकता है और जब पूरा निश्चा नहीं हुआ तो पूरी प्रीत और प्रतीत भी नहीं आई और जब प्रीत और प्रतीत नहीं तो उद्धार कैसे होगा फिर जो कुछ करतूत परमार्थी बनेगी वह कर्म का फल चौरासी जोनि में देगी पर सच्चे मालिक की भक्ती कभी नहीं आवेगी जबतक सतगुरु वक़्त के न मिलेंगे और उनके बचन पर निश्चा न आवेगा ॥

[१८८] साध ब्राह्मण छत्री आज कल अहं-कारी होगये हैं न साध में साधता और न ब्राह्मण में ब्रह्मयाता और न छत्री में राज और बल रहा है खाली अहंकार करते हैं—पर वैश्य और शूद्र अभी कुछ अपनी चाल पर हैं-संत फ़रमाते हैं कि साध संग करो पर जब साध दुर्लभ हुये तो कहां से संग प्रापत होवे और बिना साध संग उधार नहीं है-सो अब समझना चाहिये कि बिना संस्कार संत या साध नहीं मिलेंगे जिसका भाग जबर है उसको ज़रूर संत सतगुरु अथवा साध मिलेंगे—और जो कोई यह कहै कि संस्कारी को साध संग की क्या ज़रूर है सो ग़लत है चाहै सन्स्कारी होवे या असन्स्कारी दोनों को साध संग की ज़रूरत है पर इतना फ़र्क़ होगा कि संस्कारी को बचन जल्दी असर करेगा और वह ए-

सको सहज में मान सकेगा और असंस-
कारी से बचन कम माना जावेगा और
कम बर्ता जावेगा पर उसके बीजा पड़े
गा और आगे उससे कमाई बनेगी औा-
र संसकारी उसको कहते हैं कि जो
पिछले जनम से संत सतगुर अथवा
साध से मिलता और उन पर भाव और
निश्चय लाता चला आताहै और
जिसका भाग उनकी दयासे सहज स-
हज बढ़ता चला जाता है और संत
सतगुर की दया से असंसकारी भी
संसकारी हो सकता है और संत सतगुर
की तो ऐसी महिमा है कि जो उनका
दर्शन करे उसका किसी क़दर उद्धार
होताहै और चौरासी से बच जाताहै
और बहुतेरे दुःख व कलेशों से रच्छा
हो जाती है और आगे को रस्तह
उद्धार का उनकी कृपा से जारी हो
जाता है—इस वास्ते कुल जीवों को

चाहिये कि अपने फ़ायदे और सुख के लिये जहां कहीं संत सतगुर प्रगट हो वें ज़रूर जिस क़दर बन सकै उनके दर्शन और सेवा से अपना भाग बढ़ा- वें ॥

[१८०] नरदेही उसी की सुफल है जिसको सतगुर वक्त की सेवा परापत है और सेवा में इतना भेद समझना चाहिये कि दर्शनें के वास्ते चलने से पांव पवित्र होतेहैं और दर्शन से आंखें पबित्र होतीहैं और हाथें की से- वा से जैसे चरण दाबने और पंखा करने से हाथ पवित्र होतेहैं और जल भरने की सेवा से कुल देह पबित्र हो- तीहै—और चित्तसे बचन सरवन करने से अंताकरन पवित्र होता है इसी तरह जब सेवा में जीव लगा फिर सतगुर की दया और उनके सतसंग का

फल आप देखता चला जावेगा— और जो कुछ कि आनंद और दर्जा उसे पराप्त होगा उसकी महिमा बयान में नहीं आती है ॥

[१८१] आज कल गृहस्थी और भेख जब अपने अस्थानसे चलते हैं तो तीरथ का भाव करके निकलते हैं और सतसंग जो सबका सार है उसको किसीको तला श नहीं है और न उसका कुछ भाव है और जिसको कि वह लोग सतसंग समझते हैं वह असल में सतसंग नहीं है सतसंग सतगुरु के संग का नाम है और जहां किस्से कहानी लड़ाई झगड़ा और बिद्याकी बातें होवें उसका नाम सतसंग नहीं है सतगुर रूप आप सत्त पुर्ष का है इस लिये उन्हीं के संग का नाम सतसंग है और बाकी सब झगड़े हैं इनसे कभी जीव का उद्धार नहीं होगा ॥

[१८२] जो लोग कि राम और ब्रह्म को सर्व व्यापक समझकर टेक बांध रहे हैं और उसका इष्ट रखते हैं उनको स मझना चाहिये कि ऐसी टेक से जीव का कारज हरगिज़ नहीं होगा--क्योंकि व्यापकरूप--राम-- अथवा-ब्रह्म--दीप-क के समान है सब को चांदना दिखा रहा है चांदने से चोर चोरी करता है शराबी शराब पीता है बिषई बिषय भोगता है परमारथीपरमारथ कमाता है पर वह किसी से कुछ नहीं कहता है- फिर ऐसे नाम के जपने या इष्ट बांधने से चौरासी नहीं छूटैगी और मन अपने नाच नचाता रहेगा-और जिसको कि सतगुरुरूप मालिक की टेकहै और उन का सतसंग पराप्त है तो बिषई बिषय भोग छोड़ देगा और चोर चोरी से हट जावेगा और जो खोटे काम हैं उन से दिन बदिन बचता हु-

आ निर्मल होजायेगा और एक दिन अपने निज पद और निज रूप को पाजावेगा--और राम ब्रह्म—या कोई और नाम या इष्ट जपते जपते उमर गुज़र जायगी पर बिकार दूर न होंगे और न भोगों की आसा और तृष्णा की जड़ काटी जावेगी फिर कैसे उद्धार हो सक्ता है ॥

[१९३] जो कोई यह ख़्याल करते हैं कि हमने तो सब त्याग दिया या पोथियां पढ़पढ़ और बिचार करके सब छोड़ दिया यह बड़ी भूल है और धोखा है उनको अपने मन और इन्द्रियों की परख नहीं आई जब भोग नाना प्रकार के सनमुख आवें या कोई मान और आदर करै या कोई धनवान या राजधारी बात पूछै तब देखना चाहिये कि मन कैसा मगन होकर उनकी तरफ़ मुत

वज्जह होता है और जब निरादर होवे या मतलब की बात हासिल न होवे तब कैसा दुखी होता है और क्रोध में भर आता है इससे मालुम हुआ कि इच्छा मान और बड़ाई और चाह सैर और तमाशे और नामवरी की अभी वहुत ज़बर अंतर में धसी हुई है जो कोई इन बातों को याने ज़ाहरी त्याग और वैराग और विचार वग़ैरह में लगे रहने और ज्ञान के ग्रन्थों को पढ़ने को परमारथ समझता है यह भी भूल है क्योंकि इन बातों से मन नहीं मरता है मन के मारने की जुगत यह है कि पूरे सतगुर या पूरे साध की सेवा और उनका सतसंग और रूखा सूखा टुकड़ा खाकर उन की जुगत याने सुर्त शब्द मारग के अभ्यास में मन को जोड़ना और जब इन बातों का ज़िकर भी नहीं तो मन कैसे बस आवेगा और परमारथ कैसे बनेगा

और जब हाल यहहै कि ज़बान से तो कहते हैं कि इस लोक और परलोक के बिषय भोग कागबिष्ठा के समान हैं और मन में चाह और ललाषा उन्हीं भोगों की धरी हुई है तो फिर उनको क्या फ़ायदह होगा अफ़्सोस है कि वह ऐसे ग़ाफ़िल हैं कि उनको यहभी तमीज़ नहीं होता कि हम कहते क्या हैं और करते क्याहैं पर संसार उन से भी ज़यादह ग़ाफ़िल है कि उन्हीं को परमारथी जानता है और डूबे हु योंके पीछे लगकर डूबता चलाजाता है॥

[१८४] बाज़ बिद्यावान ऐसे कहते हैं कि भोगों की चाह और काम क्रोध आदिक मन और इन्द्रियों के सुभावहैं और जीवका स्वरूप इनसे न्यारा है और जो उसको बिचार करके समझ लिया तो यह उसका कुछ बिगाड़ नहीं कर सके अब समझना चाहिये कि यह

बड़ा धोखा है कि जब भोग और बिलास की चाह और सब इन्द्रियों के बिकार उनके स्वभाव हुये फिर संसारी जीव और ज्ञानी में क्या भेद हुआ जैसे वह इनके फल चौरासी में भोगेंगे ये भी ऐसे ही भोगेंगे क्योंकि भोगते वक्त दोनों एक से आसक्त होकर अपने आपे को भूल जाते हैं याने जब देखने में आता है कि जब ऐसे साहबों का कोई निरादर करै या तान मारै या इल्ज़ाम लगावै या जब के दूसरे की मान प्रतिष्ठा होती है देखें तो उसी वक्त उनको क्रोध और ईर्षा सताती है और जब आशा किसी भोग की पूरी न होवै तो दुखी होते हैं और अनेक जतन उसके पूरे होने के लिये करते हैं और हरएक से मदद चाहते हैं और सवाल करते हैं अब गौर करना चाहिये कि यह क्या हालत है भोग और काम

विष्टाकेसमान हुये पर वे भी उनके भोगने के लिये महा नीच सीढ़ी पर उतर बैठे कि जहां से चौरासी का रस्तह खुला है इसवास्ते यह बात दया करके कही जाती है-कि जिसकिसी को अपने जीव का उद्धार मंजूर है उसको मुनासिब है कि बिद्या ज्ञानी के संग से बचकर जैसे बने सतगुर का खोज करके उनके चरणों का आसरा लेवै तौ कारज होगा--और किसी इष्ट से या पंडित या भेष के संग से चौरासीसे नहीं बचैंगे भेष और पंडित को खिलाना पिलाना और जो बनै सो देना मुनासिब है-पर तन मन सतगुर के चरणों में अर्पना ज़रूर है--यह बात उसी के लिये है और उसी से मानी जावेगी जिसको मालिक से मिलने की चाह है और अपने जीव का उद्धार मंजूर है-भेष और पंडित और संसारियों को यह बचन प्यारे नहीं लगेंगे ॥

[१९५] बिद्यावान और चतुरा सतगुर के संग के लायक़ नहीं हैं क्योंकि ये अहंकारी होते हैं और इनको संत सतगुर पर भाव नहीं आता संत देखी हुई कहते हैं और यह नादान सुनी हुई बकते हैं और अपनी अक़्ल के ज़ोर से बिधी मिलाना चाहते हैं और जो जुक्ती कि उनको बताई जावे उसमें इनका मन जो कि सैलानी और अहंकारी और भोगोंकी चाह वालाहै नहीं लगता और करामात की चाह रखते हैं और करामात दिखानें की संतों की मौज नहीं है क्योंकि जो प्रीत करामात के ज़ोर से होवेगी उसका कुछ भरोसा नहीं है-करामात उनके वास्ते है कि जिनको परमारथकी सच्ची चाह है और अपने जीवके कल्यान के वास्ते संतों पर भाव और प्रतीत लाये हैं ऐसे शख़्स हमेशह करामात देखते हैं---और जिन लोगों

की असली चाह संसार की बड़ाई और भोगों की परापती की है और परमारथ की सच्ची चाह नहीं है वे काबिल करामात दिखाने और सतसंग में लगाने के नहीं हैं-- इसवास्ते जो जीव कि परमारथी हैं उनको चाहिये कि ऐसे लोगों के संग से होशियार रहें ॥

[१८६] संत अगर ज़ाहर में क्रोध और लोभ भी करें तो उसमें जीव का उपकार है-और संसारियों का क्रोध और लोभ चौरासी लेजानेवाला है पर इस बारीकी को मूरख नहीं समझते यह बात भी सतसंगी जानते हैं मूरख निंद्या करतेहैं पर संत दयाल हैं अपनी दया से उनका भी उद्धार कर ते हैं ॥

[१८७] संसारी जीव मरने से डरते हैं क्योंकि वह संसार और उसके पदारथों में आशक्त हैं और जो साध है वह

मरने से नहीं डरता क्योंकि वह संसार और उसके पदारथों को दुख रूप देखता है और उसको अपना घर नहीं जानता मुसाफ़िरों के तौर से रहता है और पूरण परमानंद स्वरूप जो सतगुर का है उसका आनंद लेने को चाहता है--इस सबब से मरने का दुख उसको नहीं होता बलकि साध जीते जी मर लेते हैं और सतगुर के निज स्वरूप के आनंद में मगन रहतेहैं ॥

[१८८] संतों के दरबार में कोई कायदह ख़ास सेवा भजन और सतसंग का मुक़र्रर नहीं है और न संत किसी पर ज़बरदस्ती करते हैं सिर्फ़ बचन सुना कर दुरुस्ती करते हैं--जो उत्तम हैं वह जल्द मानते हैं और जो मध्यम हैं वह आहिस्तह आहिस्तह मानते हैं और जो नहीं समझते और नहीं मानते वह सतसंग में ठहर नहीं सकते---पर सत

संगियों को मुनासिब है कि किसी से ईर्षा न करें और न यह इरादा करें कि या तो हमारे अनुसार हर कोई बरते और नहीं तो चला जावै क्योंकि चले जाने में उसका नुक़सान है और सतसंगी का कुछ फ़ायदह नहीं और जो वह सतसंग में पड़ा रहा तो एक रोज़ समझते समझते समझ जावेगा और फिर सब के अनुसार बरतने भी लगेगा॥

[१८८] भक्तिवान पुत्री बेहतर है साकित पुत्रसे क्योंकि भक्तिवान इस्त्री दोनों कुलों का उद्धार करैगी और साकित पुत्र दोनों का अकाज करैगा इस वास्ते बड़भागी वही कुल है कि जिसमें पुत्र या पुत्री भक्तिवान पैदा होवै जिस कुल में एक भक्त पैदा होवे उसके अष्ट कुलों का उद्धार होता है और साकित जितने होवें वह नर्क में लेजावेंगे ॥

[२००] जब कि जीव सतगुर के अस्थूल स्वरूप को जो कि उन्हों ने वास्ते उद्धार जीवों के धारन किया है नहीं पहिचान सक्ता है तो सूक्ष्म रूप को कैसे पहिचानेगा सो सिवाय गुरमुख के और किसी को पूरी पहिचान नहीं आवेगी जैसे पारस के संग जब लोहा मिलता है सोना होजाता है पर और कोई धातु सोना नहीं हो सक्ती और जीवों का यह हाल है कि गुरमुख होना तो चाहते हैं पर गुरभक्ती जैसी कि चाहिये नहीं करते--इस वास्ते चाहिये कि सतगुर वक्त की भली प्रकार भक्ती करैं तो अहिस्तह अहिस्तह गुरमुख बन जावेंगे--कोई मूरख जीव यह कहते हैं कि सतगुर पूरे हम जब जानें जब किसी को सतगुर बनाया होय—अब ख्याल करो कि जो किसी को सतगुर बनाया भी होगा तो उनको उससे क्या

हासिल होगा अगर वह आप सतगुर बना चाहें तो सतगुर भक्ती करें तब आप देख लेंगे सो भक्ती तो बनती नहीं है बृथा नरदेही गंवाते हैं मगर इस में भी मौज है क्योंकि जो सब गुरमुख होजावें तो संसार की रचना कैसे रहे ॥

[२०१] भेष और ब्राह्मण का संसार में आदर है मगर इनको बड़ा व-ही जानते हैं जो परमारथ की चाह नहीं रखते क्योंकि वह जुक्ती जिससे जीव अपने निज स्थान को पावे इनके पास नहीं है उन्हों ने तो भेष और बिद्या केवल स्वारथ के लिये हासिल की है जो जीव कि हक़ीं परमारथ का है उसके चित्त में इन दोनों का आदर नहीं रहेगा चाहे बाहर से वह इनकी ख़ातिरदारी कर दे और धन भी दे दे

मन उनको नहीं देसकता--इस वा-
पंडित और भेष को चाहिये कि ऐसे
लोगों के यानी सच्चे परमार्थियों के सत-
संग में न जावें और जो जावें तो कप-
ट न करें क्योंकि उनके रूबरू पाखण्ड
और कपट की बातें पेश नहीं जावेंगी
वहां सचौटी से बर्त्तना चाहिये तो
कुछ हासिल होगा नहीं तो अपना
निरादर करावेंगे- और जहां कि संत
आप प्रघट हैं और उनका दरबार
लगता है वहां जाकर झूठी और कपट
की बातें बनानी अपनी कुगत करानी है
क्योंकि संत तो समर्थ हैं वह बरदाश्त
करलेते हैं पर उनके जो सतसंगी हैं उनसे
बरदाश्त नहीं होती है वह उनकी क-
पट को खोल देते हैं क्योंकि उस सत
संग में रात दिन सच्चे की छांट होती
रहती है वहां कपटी और पाखंडी का
कैसे गुज़ारा हो सक्ता है ॥

[२०२] ईश्वर के दरबार के दरबानी ब्रह्मा बिष्णु महादेव हैं और संत सतगुर के दरबार के दरबानी उनके सेवक हैं और इनका दर्जा इतना ऊंचा है कि ब्रह्मा बिष्णु और महादेव और खुद ईश्वर जो उनका मालिक है संतों के सेवक को रोक नहीं सकते और न उस का मुक़ाबिला कर सक्ते हैं क्योंकि संत सब से बड़े हैं और इस वास्ते उनके सेवकों को भी वह दर्जा मिलता है कि जिसकी बराबरी ईश्वर और देवता नहीं कर सकते ॥

[२०३] संत के बचन का अर्थ संतही खूब जानते हैं और अच्छी तरह कर सकते हैं और किसी को ताक़त नहीं है कि उनकी बानी का अर्थकर सकै जो कोई करैगा वह अपनी बुद्धी अनुसार करैगा और बुद्धी की उस में

गम नहीं है क्योंकि संतों की बानी अ-नभवी है और उसके अर्थ भी अनुभवी हैं विद्यावान की ताक़त नहीं कि उसको ज्यों का त्यों समझ सकें ॥

[२०४] अगर नाम में शक्ती होती तो हज़ारों जप रहे हैं किसी को तो असर होता—इससे मालूम हुआ कि नाम में शक्ती नहीं है—शक्ती सत-गुर में है—बड़भागी वह जीव हैं जो सतगुर को सेव रहे हैं—जो गुनहगार भी हैं और सतगुर को पकड़ लिया है तो वह माफ़ होजावेंगे और जो बेगु-नाह हैं और सतगुर को नहीं पकड़ा है तो वह बढ़के गुनहगारों में गिने जावेंगे ॥

[२०५] बाजे मानी और अहंकारी लोग जो सतसंग में आते हैं उनको सतसंग

का रस नहीं आता है क्योंकि वह दोष दृष्टी लेकर आते हैं और जो समझाओ तो कुछ नहीं समझते और ज़ाहर में ग्रंथ का तो बहुत भाव करते हैं पर वचन एक भी नहीं मानते और जो लोग बचन मानते हैं और जितना हो सके उसकी कमाई भी करते हैं और सतगुर को मुक्ख रखते हैं उनको वेओछा समझते हैं ऐसे अहंकारियों को संतों से कभी कुछ फ़ायादह न होगा वह ग्रंथ के टेकी हैं और जो ग्रंथ में हुक्म है कि सतगुर का खोज करो उनकी सेवा से कुछ फ़ायदह परापत होगा उसको नहीं मानते हैं—यह लोग बरखिलाफ़ गुरू नानक के बचन के अमल करते हैं—क्योंकि ग्रंथ गुरू नहीं होसकता वह तो जड़ है खुद बोलता नहीं और न उपदेश कर सक्ता है अगर ग्रंथ उपदेश कर सक्ता तो निर्मलले और उदासी काशी

में जाकर पंडितों के किंकर न होते और ग्रन्थ को वेद शास्त्र से कम न समझते और तीरथ और बरत में न भ्रमते और अपने चेलों को यह उपदेश न करते कि बाद उनके मरने के उनकी गया करो ग्रंथ में वह भेद है जो कि वेद के कर्ता ब्रह्मा को भी मालूम न हुआ पर सिवाय सतगुर पूरे के दूसरा कोई उस भेद को बयान नहीं कर सक्ता इस वास्ते सब को चाहिये कि मुक्खता सतगुर की करें वह ग्रन्थ का भेद भी कह सक्ते हैं और बिना ग्रंथ भी उद्धार कर सक्ते हैं और जो लोग सतगुर वक्त का खोज नहीं करते वह चौरासी में भरमेंगे॥

[२०६] बाचक ज्ञानी की मुक्ति नहीं वे सिर्फ़ बातें बनाते हैं और जो सच्चे ज्ञानी हैं उनके अस्थूल कर्म कटते हैं पर सूक्ष्म नहीं दूर होते हैं—वह बग़ैर

संतों के पद में पहुंचने के नहीं काट सकते हैं और मालूम होवे कि इस जुग में मुक्ती भी संतों के द्वारा हो सकती है क्योंकि बग़ैर अस्थूल और सूक्ष्म कर्म काटे हुये मुक्ति कैसे होगी और कर्म काटने की जुगती ज्ञानियों के पास नहीं है

[२०७] गुरमुख उसका नाम है जो सतगुर को मालिक कुल समझै और उनकी किसी करतूत पर तरक न करै और अभाव न लावै—मसलन् किसी के घर में मौत होगई या कोई दुख आकर पड़ा या नुक़सान होगया या गर्मी ज़ियादह हुई या सर्दी ज़ियादह हुई या बारिश ज़ियादह हुई या बिलकुल न हुई या बीमारी या मरी या और कोई मुश्किल पड़ी तो उस वक़्त ऐसा न कहै कि ऐसा मुनासिब न था या यह बेजा या बुरा हुआ बलकि यह

समझना चाहिये कि जो हुआ सो मौज से हुआ और ऐसाही मुनासिब होगा और इसी में मसलहत होगी-सो यह बात किसी पूरे गुरमुख से बन आवेगी और किसीकी ताक़त नहींहै॥

[२०८] राम सब के घट में व्यापक है पर कोई उसको नहीं पहिचानता और उसके देखते जीव औगुन करतेहैं और वह मने नहीं करता और चौरासी भोगवाता है—फिर ऐसे राम से क्या मतलब निकलैगा— जब सतगुर मिलें और उसका पता बतावें कि इस स्वरूप से राम तुम्हारे घट में व्यापक है—तब इस जीव को ख़बर पड़े और बुरे कामों और चौरासी से बचे—इस वास्ते खोज सतगुर का ज़रूर है क्यों-कि वह प्रघट राम हैं—और जो गुप्त रामहै उसका खोज बिना सतगुर के नहीं

होसक्ता और जो ऐसा नहीं करते उनको न राम मिलैगा न चौरासी छूटैगी और दुर्लभ नरदेही मुफ़्त बर-बाद होगी— और जो सतगुर का खोज सच्चा होकर करैगा तो वे ज़रूरही मि-लेंगे—क्योंकि सतगुर नित्त औतार हैं और हमेशह् संसार में मौजूद रहतेहैं

[२०९] अंतर में जो शब्द होताहै उसका सुन्ना यह शब्द भक्ती है--औा-र जिस घट में शब्द प्रघट है उनसे प्रीत करना यह सतगुर सेवा है और वही सतगुर हैं और शब्द उनका निज स्वरूप है—उनके बचनों को मानना और उसपर अमल करना यह बाहर मुख भक्ती सतगुर की है और अंतर में शब्द का सुनना अंतर मुख भक्ती सतगुर की है--मगर पहिली सीढ़ी यह है कि जिस स्वरूप से सतगुर उपदेश

करते हैं उससे प्रीत होनी चाहिये तब सतगुर के शब्द स्वरूप से प्रीत होगी और जिस्को देह स्वरूप सतगुरसे प्रीत नहीं है उसको शब्द स्वरूप से भी प्रीत नहीं होगी और चाहे जितनी मेहनत करै उसको शब्द नहीं खुलेगा—और जिस्को सतगुर के देह स्वरूप से प्रीत है पर शब्द से ऐसी प्रीत नहीं है उनका उद्धार सतगुर अपनी दया से करेंगे पर जिनको सतगुर से प्रीत है उनको शब्द में भी प्रीत ज़रूर होगी पहिले प्रीत और भक्ती सतगुर के देह स्वरूप से होनी चाहिये नहीं तो इसको काम नहीं बनैगा ॥

[२१०] नारदमुनि जिनको प्रत्यक्ष राम का दर्शन हुआ परइतनी ताकत राम की न हुई कि उनको चौरासी से बचालेवे इससे तो गुरूने ही बचाया—फिर

आज कल जो लोग राम का नाम जपते हैं कि जिसको कभी आंख से नहीं देखा और पूरे गुरू से मिले नहीं तो यह चौरासी से कैसे बचेंगे इस वास्ते चाहिये कि अपने वक्त का सतगुर खोजें और उनकी सरन लेवें ॥

[२११] निर्मले ज्ञानियों से पूछना चाहिये कि अगर तुम गुरू नानक के घर के हो तो गुरू ने ग्रन्थ रचा है उस पर अमल क्यों नहीं करते---और वेद शास्त्र के किंकर क्यों होते हो याने गुरू ने जो भक्ती कही है उसकी कमाई और जैसी दीनता बर्णन की है उसकी धारना क्यों नहीं करते और जो अपने को ज्ञानी मानते हो यह बड़ी भूल है बगैर भक्ती ज्ञान कैसे परापत हुआ यह तो पोथियों का ज्ञान है—जिस वक्त माया का चक्कर आवेगा तब उड़ जावेगा इस वास्ते सतगुर पूरे

की भक्ती करो तब सच्चा ज्ञान परापत होगा—और व्यास और बशिष्ठ जो अपने मत में पूरे थे उनपर भी माया ने छापा मारा फिर तुम कैसे बचोगे माया से केवल संत बचेहैं या वह जो उनकी सरन में आया और कोई हरगिज़ नहीं बचैगा—जो तुमको संतों की प्रीत नहीं है तो काल के जाल में फसे रहोगे और जो नरदेही सुफल करना चाहते हो तो बिद्या और बुद्धी का अहंकार छोड़कर संतसतगुर के आगे दीनता करो वह समर्थ हैं माया और काल दोनों से बचाकर निज अस्थान को पहुंचा देंगे तुमको इख़्तियार है चाहे इस बचन को मानो या न मानो तुम्हारे भले के वास्ते कहा गयाहै ॥

[२१२] कलजुग में बादशाह संत हैं जो जीव उनके हुकम में चलेंगे याने

जो कर्म और उपासना संतों ने इस जुग के वास्ते कही है उसको करेंगे वह खुश रहेंगे और उनका उद्धार होगा और जो इस हुक्म के बरखिलाफ़ अमल करेंगे याने पिछले जुगों के कर्म और उपासना और ज्ञान जो शास्त्र और पुरानों में लिखा है करेंगे तो उनसे वह कर्म बिधपूर्वक नहीं बन सकेंगे और उलटा अहंकार बढ़ैगा क्योंकि पुराने जो क़ानून हैं यह सब रद्द और ख़ारिज हुये अब जो कोई उनकी टेक रक्खैगा और उनपर चलैगा उसका काम हरगिज़ नहीं बनैगा और चौरासी से नहीं बचैगा—इस वास्ते सब जीवों को चाहिये कि संतों का हुक्म मानें और संतों ने यह कर्म और उपासना मुक़र्रर की है-कि सतगुरु का सतसंग और सेवा और दर्शन और उनकी बानी का पाठ और श्रवन और उनके नाम

का सुमरन यह कर्म है—और सतगुर के स्वरूप में प्रीती और उसका ध्यान और अंतर में उनके शब्द का सुर्त से सरवन यह उपाशना है ॥

[२१६] ब्राह्मण और क्षत्री ने अपना कर्म और धर्म तो छोड़ दिया पर अहंकार नहीं छोड़ा पिछले जुगों के जो कर्म करते हैं वह बिधि पूर्वक नहीं बनते और उनके आचार्यों ने जो कलजुग के वास्ते कर्म कहे हैं वह नहीं करते हैं इस सबब से अभागी रहते हैं और लाचार हैं कि इस वक़्त में परमारथ जीवका के अधीन है और पिछले वक़्त में परमारथ के आधीन जीवका थी—पर अब कलजुग में संत प्रघट हुये हैं उन्हों ने वह जुगत निकाली है कि जो उसकी कमाई करे तो सच्चा ब्राह्मण बन जावे और छत्री सच्चा हो

जावे पर यह लोग अहंकार करके संतों के बचन की प्रतीत नहीं करते हैं—बलकि निंद्या करते हैं—सबब इसका यह है कि यह लोग संसार से निकलना नहीं चाहते क्योंकि नर्क का कीड़ा नर्क में खुश रहता है इस वास्ते संसारियों को संतों का बचन बुरालगता है और संत तो उनके भले की बात बताते हैं ॥

[२१४] मालिक जीव के पास है और यह मूरख जीव उसको बाहर ढूंढता फिरता है—याने काशी और प्रयाग वाले— अजोध्या और बृन्दावन और हरद्वार और बद्रीनाथ में और अयोध्या और बृन्दावन के बासी प्रयाग में भरमते फिरते हैं-यह भरमना सिवाय सतगुर पूरे के और कोई नहीं छुड़ा सकता है इसवास्ते सतगुर का खोज

करना चाहिये---और पंडित और भेष आपही भरम रहे हैं और औरों को भी भरमाते हैं ॥

[२१५] नरदेही छिन भिंगी है इसके जोबन पर क्या गुरूर करना जैसे पत-झड़ के मौसम में दरख़्तों के पत्ते झड़ जाते हैं ऐसेही यह जोबन भी थोड़े अरसे में जाता रहेगा-इस वास्ते मुनासिब है कि इसको मुफ़्त न खोवे और अपने प्यारे मालिक का पता लगाकर उसकी सेवा और टहल में लगे-और मालूम होवे कि माता पिता पुत्र और इस्त्री और यार दोस्त और बिरादरी और धन इन में कोई सच्चा प्यारा नहीं है- बलकि यह सब दुख के दाता हैं पर संसारी जीव इनको सुख रूप मानते हैं सो वह अभागी हैं—और बड़ भागी वही हैं जो सत-

गुरु पूरे की प्रीत और प्रतीत करते हैं और उनकी सेवा में अपना तन मन धन लगाते हैं—इस जवानी में जिसने सतगुरु का खोज करलिया वही अकल-मंद है और जो ग़ाफ़िल रहा उसको पछताना पड़ेगा॥

[२१६] संतों का और पंडितों का मेल न हुआ और न होसकता है-क्यों कि वह जीवों को बाहर भटकाते हैं—और संत अंतर में धसाते हैं—पंडित पत्थर पानी में लगाकर जीव को बेधर्म करते हैं और कोई कोई वर्णात्मक नाम बताते हैं सो उसका भेद नहीं दे सकते—और संत धुनआत्मक नाम बताते हैं और उसका भेद स्वरूप ली-ला और धाम बिधिपूर्वक समझाते हैं—अगर जीव संतों का वचन माने तो उसका कारज बन जावे—और

नहीं तो जन्म जन्म भटकता रहेगा ॥

[२१७] धर्म इस जीव का यह है कि पिता की सेवा करना—सो पिता इस का सत्तनाम सतपुर्ष है और यह उस की अंस है सो इसको मिलता नहीं फिर यह सेवा कैसे करै— अब सम-झना चाहिये कि संत सतपुर्ष का औतार हैं उनकी सेवा करना सतपुर्ष की सेवा है-- पिछले तीन जुगों में वे प्रघट नहीं हुये अब कलजुग में केवल जीवों के उधार के लिये औतार धरा है और कुछ मतलब उनका संसार में आने से नहीं है जो जीव संस्कारी हैं वह दर्शन करते और बचन सुनतेही उनके चरणों में लग जाते हैं—और बहु-तेरों के संस्कार पड़ जाता है और चौरा-सी का चक्कर उनका भी रफ़तह रफ़तह बच जावेगा क्योंकि सिवाय संत के और कोई चौरासी से नहीं बचा सक्ता और

न जीव को उसके निज देश में पहुंचा सक्ता है ॥

[२१८] जिनको नाम की प्रतीत नहीं है और बाहर की रहनी अपनी भली प्रकार दुरस्त रखते हैं और अंतर में भी कुछ सफ़ाई कररहे हैं तो चाहे जितना जप तप संजम और अभ्यास करें उनको पूरा फल परापत नहीं होगा और जिनको सतगुर का बताया हुआ नाम परापत है और उसपर उनका निश्चय पक्का और सच्चा आगया है तो उनको जप तप संजम का भी फल मिलेगा और पुरन पद को पावेंगे॥ दोहा॥ नाम लियो जिन सब कियो जोग जज्ञ आचार। जप तप संजम परसराम सबी नामकी लार॥ ये नाम संत सतगुर से मिलेगा और इससे कुल बिकारों की जड़ कट जावेगी— और आख़िरह

[२२३] शब्द सूक्ष्म है और जीव का सरूप अस्थूल होगया है फिर जीवशब्द में एकदम कैसे लगे अस्थूलता केदूर करने का उपाव सतगुर भक्ती है और जबतक सतगुर भक्ती दुरुस्ती से न बनेगी तबतक शब्द में लगने का अधिकारी न होगा ॥

[२२४] सतगुर की पहिचान मुशकिल है जिसने सतगुर को पहिचाना वह निर्भय होगया क्योंकि जिस किसी की दुनिया के हाकिम से पहिचानहो जाती है वह किसी को खयाल में नहींलाता और सतगुर जो कुल्ल के मालिक हैं उनकी पहिचानजिनको आगईउसको फिर किसका डर रहा सो यह बात किसी बिरलेजीव को हासिल होगी और जीवों का तो यह हाल है कि दुनिया के हाकिम के डरसे सतगुरको छोड़ देते हैं तो फिर सत-

गुरकी पहिचान कहां से होवे-असल में जीव की ताक़त नहीं है कि सतगुर को पहिचान सकै दुनिया के हाकिम अपनी हुकूमत से सबको डराते हैं और सतगुर अपने को प्रघट नहीं करते हैं बल्कि संसार में जीवों की तरह से बरतते हैं इस वजह से जिस पर उनकी दया है वही पहिचान सकता है दूसरे की ताक़त नहीं है ॥

[२२५] सतगुर के बचन और लीला तो सब को प्यारे लगते हैं--पर सतगुर किसी बिरले को प्यारे लगते हैं जिनकी प्रीत बचन और लीला के आसरे है उनका भरोसा नहीं है पक्की प्रीत उनकी है जिनकी सतगुर से प्रीत है पर बचन और लीला की प्रीत वालों में से सतगुर की प्रीत वाले निकल आते हैं यह भी सतगुर से प्रीत लगाने की सीढ़ी है ॥

[२२६] एक एक को बड़ा कहता है याने जिस्से जिसका स्वार्थ है वह उसी की तारीफ़ करता है पर इस तारीफ़ का एतबार नहीं है यह ऐसे है जैसे गधे का रेंकना कि शुरू में तो खूब ज़ोर से बोलता है और आहिसतह आहिसतह कम हेजाता है जिसका यह हाल है उसकी प्रीत का एतबार याने भरोसा नहीं— प्रीत उसी की सच्ची जो शुरू से अख़ीर तक एकसा रहे

[२२७] जबसे यह जीव पैदा हुआ है तब से काल इसके संग है गोया यह सुरत काल के संग बियाही गई है जब पति दुलहिन केलेने को आता है तबका-यदा है कि वह रोती है और रोने से मुराद है कि मुझको जाने न देवें पर कोई नहीं रोक सकता है—इसी तरह जब काल आवेगा यह सुरत हरचंद रोवेगी पर कोई मदद नहीं दे सकेगा

और वह ऐसे रस्ते पर जाकर डालेगा जो बाल से भी बारीक है और चींटी की भी ताक़त नहीं जो उसपर चलै—और सुर्तें उस रास्ते पर जानेमें कटकट के नीचे जहां नर्कों के कुण्ड भरे हैं गिर गिर पड़ती हैं और जैसी तकलीफ़ होती है उसका बयान नहीं किया जाता है इससे संतसतगुर जीवों को बारबार दया करके समझाते हैं कि बालसेभी बारीक रस्तह है और जो उसका ख़ौफ़ है तो अपनी असलियत के हासिलकरने में मेहनत करो और उपाव उसका सिवाय सतगुर पूरे के और किसी के पास नहीं है—जब जीव सतगुर की सरन लेगा तो वह जो करनी मुनासिब है करावेंगे और ऐसे भयानक रस्ते से बचाकर अपनी गोद में बैठाकर निज अस्थान में जहां सदा आनंद परापत होगा वहां पहुंचा देंगे सिवाय इसके और कोई उपाव

नहीं है ॥

[२२८] ये सच है कि नामका परापत होना बहुत मुशकिल है पर नाम के परापती वालों की सरन लेना तो सहज है और हमेशह से यही चाल चली आई है कि हरएक को नाम नहीं परापत होता पर सरन लेते चले आये हैं और सरन में बहुत आनंद है संतों के हाथ भी यह जुगत नहीं लगी वह भी आप बन बैठे पर यह जुगत जीवों के हाथ लगी है ॥

[२२९] जो कोई चाहे कि संत सतगुर की पहिचान करले और जो बातें कि ग्रंथों में लिखी हैं उनसे बिध मिलावे तो हरगिज़ नहीं मिलेगी और पहिचान न होगी उसको चाहिये कि कोई दिन उनकासंग करे तब पहिचान आवेगी और कोई उपाव पहिचान करने का नहीं है ॥

[२३७] जिसने नरदेही पाकर उत्तम तत्व को जो इसमें असल याने सार वस्तू है न पाया और संसार के भोगों में इस नरदेही को खोया वह जीव पशू हैं मनुष्य सरूप हुये तो क्या पर काम पशू का करते हैं सो यह बात बे सतगुर पूरे के प्रापत नहीं होगी प्रथम तो सतगुर पूरे का मिलना मुशकिल है और जो मिले तो भाव नहीं आता है क्यों कि आज कल भेषों का यह हाल है कि अपने को पूरन ब्रह्म कहते हैं और जीवों को ज्ञान सिखाकर भरमाते हैं और जो उनसे दरियाफ़्त किया जावे कि तुमने ब्रह्म को किस जुगत से पाया तो उसका जवाब नहीं देते हैं इस वास्ते उनका ब्रह्म कहना झूठा है और उन-का मारग भी जो बिद्या और बुद्धि के बिचार का है मन के पेट का है उससे जीव का उबार नहीं होगा बड़भागी

वही जीव हैं जिनको सतगुर पूरे मिल गये और निश्चय और प्रतीत अपनी बख़्शी है और सेवा में लगाया है क्योंकि जीव की ताक़त नहीं है जो निश्चै लासकै या उनकी सेवा में ठहर सकै यह बात भी उनकी मेहर और दया से हासिल होगी ॥

[२३१] पिछले पापों का--हौंमैं-- याने अहंकार रूपी मैल इस जीव पर चढ़ा हुआ है इस सबब से दुख सुख पाता है जब सतगुर वक़्त के सन्मुख आवे तौ वे अपने दया रूपी जल से मैल धोकर इस जीव को निर्मल करलें और जो सदासुख का अस्थान है वहां पहुंचा दें पर शर्त यह है कि यह उनके सन्मुख ठहरा रहै और जो एक रोज़ को आया और एक महीने को ग़ैरहाज़िर होगया तौ सतगुर क्या करैं यह बात

उसी से बनेगी जिसको दर्द परमारथ का होगा बेदर्दी का काम नहीं है ॥

[२२२] नास्तिक जो मालिक के होने से इनकार करते हैं सो गलती में हैं मालिक इस तरह गुप्त है जैसे काठ में अग्नी- पर उनको नज़र न आया इस सबब से नास्तिक होगये अगर सतगुर खोजते और उनसे जुगत लेकर अपने मनको मथकर देखते तौ उनको मालिक के दर्शन की दृष्टि हासिल होती— और कृतघिंता याने नाशुकरी के पाप से बच जाते ॥

[२२३] जैसे मलयागिर जो दरख़्त है उसके जो दूसरा दरख़्त नज़दीक होता है वह उसको अपने समान खुश-बूदार करलेता है— इसी तरह से जो जीव साध संग में आये वह भी संसार

की तापों से बचकर एक रोज़ साधरूप होजाते हैं बड़ भागी वही हैं जिन को साध संग परापत्त है और उन्हीं की नर देही सुफल है और जिनको साध संग प्रापत नहीं है और न उस की चाह है वह पशू के समान हैं-- नर देही मिलगई तो क्या उसका फल तो परापत न हुआ जैसे सूम की हालत कि हज़ारहा रुपये पैदा कर पर खाये न खर्चे तो ऐसे धनवान होने से क्या फ़ायदह हुआ अंत को जाने वह धन किसके हाथ पड़ा और क्या हुआ और जो बासना उसकी दिल में रही तो सांप बनकर बैठा—और यह नहीं होसक्ता कि बासना न रहे फिर देखो कैसी नीच योनि पाई और चौरासीके चक्करमें पड़ा इसीतरह जिसको नरदेही परापतहै और उन्होंने उसको संतों की प्रीत और सेवा में नहीं लगाया तो अंत को चौरासी

भोगेंगे ॥

[२३४] वेद मत वालों का कर्म उपाशना और ज्ञान संतों के सिर्फ़ कर्मस्थान तक पहुंचता है क्योंकि संतों का कर्म वग़ैर त्रिकुटी तक पहुंचे पूरा नहीं होता है और सत्तलोक तक उपाशना रहती है और अनामी पद में ज्ञान प्रापत होता है पर संत कभी अपने को ज्ञानी नहीं कहते हैं हमेशह भक्ती रखते हैं— और यह जो अपने को ज्ञानी कहते हैं वह असल में वाचक हैं क्योंकि वह वक़्त सवालके जवाब नहीं देसक्ते हैं कि उनको ज्ञान कैसे प्रापत हुआ याने बिना कर्म और उपाशना के ज्ञानका होना नहीं होसक्ता है सो उसका भेद वह बिलकुल नहीं जानते क्योंकि उन्होंने किया नहीं सिर्फ़ पोथियां पढ़कर ज्ञान के बचन सीखे हैं इसवास्ते झूठे ज्ञानी हैं और जो जीव

उनका बचन मानते हैं वह अपना बिगाड़ करते हैं ॥

[२३५] सतगुर वक़्त की हर हालत में मुखता है पहिले उनके चरनों में सच्ची प्रीत करने से सफ़ाई अस्थूलकी हासिल होगी जब अधिकारी नाम के सरवन का होगा और फिर नाम का सूक्ष्म रूप और सतगुर का सूक्ष्मरूप और अपना सूक्ष्मरूप सब एक रूप नज़र आवेंगे पर यह बात सतगुर की पूरी प्रीत से हासिल होगी ॥

[२३६] जिनको अब नरदेही मिली है और वह सतगुर का खोज नहीं करते हैं तो वह चौरासी जावेंगे और फिर नरदेही उनको नहीं मिलेगी इस वास्ते अभी मौक़ा है अपना काम बनाने का जो यह मौक़ा हाथ से जाता रहा तो फिर मौक़ा नहीं मिलेगा ॥

[२३७] बाहर की सेवा और टहल अकसर जीव कर सकते हैं इससे सच्ची और झूठे की परख नहीं होसकती असल पहिचान सच्चे की यह है कि जिसको शब्द बताया जावे और उससे उसकी सुर्त लग जावे तो उसी की प्रीत सच्ची समझना चाहिये ॥

[२३८] सतगुर पद से किसी मुकाम या सतलोक का मांगना नहीं चाहिये उनसे बारंबार यही प्रार्थना करे कि अपने चरण में रखिये—इस से ऊंचा और बड़ा अस्थान कोई नहीं है ॥

[२३९] संसारी पदारथों कोजो जीव आप भोगते हैं तो अंत को चौरासी जाने के अधिकारी होते हैं और जो जीव उन्हीं पदारथों को संतसतगुर और साधके भोग में रक्खें तो परमपद मोक्ष-

धिकारी होतेहैं क्योंकि संतों की आश्च-
क्ती नतो उन पदारथों में है और न
अपनी देह में है सिर्फ़ जीवों के उद्धार
के वास्ते देह स्वरूप धरा है—पर आप-
ने मुक़ाम की सैर हर रोज़ देखते हैं
और जीव पदारथों और देहमें आश्च-
क्त हैं पर उनमें से जो उनकी सेवा
और टहल में अपना तन मन और
धन खर्च करेंगे वह चौरासी से बचें-
गे और जो अपने खाने पीने और ऐश्च
और आराम में उमर खो रहे हैं वह
चौरासी जावेंगे ॥

[२४०] जबतक तत्व से तत्व नहीं मि-
लेगा काम पुरा नहोगा और जो पांच त-
त्व अस्थूल हैं इनका कारण स्रुत है और
स्रुत का कारण शब्द है इन पांचों के
झगड़े में पड़ने से कुछ फ़ायदह नहोगा
जो स्रुत तत्व है उसको शब्दतत्व में मि-

लानेसे काम पूरा होगा-पर यह बात बे
ह्या सतगुर पूरेके हासिल न होगी इस
वास्ते पहिले सतगुर का खोज और
उनकी प्रीत करना चाहिये ॥

[२४१] जैसे पपीहा स्वांत बूंद के वा-
स्ते बन बन फिरता है और किसी बूंद
को कबूल नहीं करता है क्योंकि और
बूंद से उसकी प्यास नहीं जातीहै तो
मालिकभी उसकी सच्ची तड़प को देखकर
स्वांत बून्द बरसाता है और उसकी प्यास
को बुझाता है इसी तरह जिनको सत-
गुर और नाम का खोज सच्चा है और
उनकी तलाश में रहते हैं उनको सत-
गुर और नाम परापत होंगे हर एक
का काम नहींहै जो इस रस्ते पर कदम
रक्खै ॥

[२४२] सेवक कहता है कि मेरी यह

आर्जू है कि मैं अपने मन को मेंहदी के समान पीसकर सतगुर के चरणों में लगाऊं पर सतगुर अभी कबूल नहीं करते खैर मैंने तो अपने मनको मेंह-दी के तुल्य पीसकर तईयार कर रक्खा है जब उनकी मौज होवे तब चरणों में लगावें—यह धर्म सेवक का है कि इतनी मेहनत करके मनको पीसडाला और फिर भी जो सतगुर ने मंजर नहीं किया तो दीनता नहीं छोड़ी मौज पर रहा—न कि ऐसी हालत होवे कि ज़रासी सेवा करी और जो मंजूर न होवे तो अभाव आजावे इसका नाम सेवकाई नहीं है—यह तो सतगुर को सेवक बनाना है—जब यह हालत है तो मन कैसे पीसा जावेगा-पर भाग से जो सतगुर दयाल मिलजावें तो अपनी कृपा से सब दुरस्ती सेवक की कर लेंगे

---

[२४३] जब दाता किसीको कुछ देता है तब हाथ निकालता है इसी तरह मालिक जब दया करता है तब मेंह बरसाता है पर इसका फ़ायदह संसार को है-और जब परमारथियों पर दया करता है तब प्रेमकी वर्षा करता है जिस किसीमें सब गुण हैं और प्रेम नहीं तो वह ख़ाली है--और जिसमें कोई गुण नहीं पर प्रेम है वही दरबार में दख़ल पावेगा—इस वास्ते मुख्य प्रेम है और यह प्रेम बग़ैर सतगुर भक्ती के हासिल न होगा ॥

[२४४] संत जो उस पद को बे अंत कहते हैं सो यह बात नहीं है कि उनको उसका अंत नहीं मालूम है या नहीं पाया-इसका मतलब यह है कि वहां का जो आनंद है वह बे अंत है-और संत उस मुक़ाम पर जल मछली की तरह

से रहते हैं अब जो कोई यह कहै कि मछली ने जलको नहीं लखा था उसका अंत नहीं पाया यह कहना ग़लत है और जो ऐसे हैं कि जलमें जल रूप होगये उन की कुछ तारीफ़ नहीं है महिमां उन्हींकी है जो जल में मछली रूप रहकर उसका आनंद लेते हैं॥

[२७५] काल के ग्रसने से जीव की मोक्ष नहीं होसकती क्योंकि सुर्त चैतन्य है उसको काल नहीं खा सकता देही को खाता है—किसीको जल द्वारा किसी को अग्नी द्वारा और किसीको प्रथीवी द्वारा-काल का और जीव का मेल नहीं है क्योंकि जब से यहां दोनों सत्तलोक से आये हैं उन पर खोल चढ़ते चले आये हैं—काल उलट नहीं सकता है पर जिसजीव को सतगुर मिल जावें तो उन की दया और सेवा के प्रताप

से उस के खोल उतर सक्ते हैं और फिर उलट कर सत्य लोक में भी जा सक्ता है—बिना खोलों के उतरे अपने घर में नहीं पहुंच सकता और खोल बिना शब्द और सतगुर सेवा और उन की प्रीत के नहीं उतरींगे ॥

[२४६] जब तक जीव अलख के पलक से परै न पहूंचेगा तब तक इसको मुक्ति प्रापत न होगी अलख नाम मन और काल का है क्योंकि काल जीव को खाता चला जाता है और लखा नहीं जाता अगर जीव सच्चा दर्दी है तो सब जतन छोड़ कर सतगुर पूरे की सरन होजावे तब काम पूरा होगा-क्योंकि संतोंने इस अलख को लखा है और वही इसको पलक के परे पहुंचा सक्ते हैं तीनलोक और जितने औतार और देवता हुये हैं अलख के पलक के बाहर नहीं गये

और संत उसके परे पहुंचे हैं इसवास्ते जो उनकी सरन लेगा वह काल की हद्द से बाहर होजावेगा-और जो पिछलों की टेक में रहेगा और वक़्त केपूरे सतगुर पर भाव और निश्चा नहीं लावेगा वह संतों के निज भेद को नहींपावेगा और काल के जाल से बाहर न होगा ॥

[२४७] ऐसा कहा है कि हरि के चरन की शरन लेने से जीवका उद्धार होगा तो अब विचारो किजीव उस हरि को कहांढूंढे उस कोतो बिदेह और अरूप कहते हैं—और जब चरण शरन कही तो चरन होंगे और जो चरन होंगे तो देह भी होगी तो ऐसा -हरि- कौन है संत कहते हैं कि इस कहने से मतलब सतगुर की सरन लेने से है —क्यों- कि हरि—-गुर-—एक हैं इसवास्ते सतगुर वक़्त की सरन लेना चाहिये

तब वह नाम जिसको—— पतितउ-धारन- कहते हैं मिलैगा और उस की कमाई साध संग से होगी याने सब-कुसंग- छोड़ करके पहिले साध संग करै तब कमाई बन पड़ैगी और मालूम होवे कि माता पिता सुत इस्त्री और संसारी जीवों का संग -कुसंग- में दाखिल है क्योंकि इनकेसंगसे न सत-गुर की सरन लीजावैगी और न नाम मिलैगा और न साध संग बन सकै—— पर जो सतगुर पूरे अपनी मेहर और दया करें तो सब काम बनवा लें ॥

[२४८] असल में संतों के मत की रीत और वेद मत की रीत में बिरोध नहीं है पर सिद्धांत संतों का वेद के सिद्धांत से बहुत ऊंचा है—याने वेद में जो कहा है कि कर्म और उपाशना करना चाहिये—सोई संत भी कहते

है कि पहिले सतगुर की सेवा तन मन धन से करना यह कर्म है और जो सतगुर अंतर में नाम याने शब्द का भेद बतावें उसमें सुर्त का लगाना उपाशना है—वेद में जीव और ईश्वर के तीन तीन सरूप लिखे हैं—याने विस्व तेजस्व और प्रिराग यह तीन रूप जीव के और बैराठ हिरनगर्भ और अव्याकृत ये तीन रूप ईश्वर के हैं हाल के ज्ञानी ईश्वर को नहीं मानते उनकी कहन है कि जमाअत का नाम गल्ला है हज़ार आदमी की फ़ौज को पलटन कहा—ऐसे ही ईश्वर को समझते हैं जब वह अलहदे २ होगये फिर वह नाम भी जाता रहा इस हिसाब से ईस्वर कहां रहा और जब ईस्वर नहीं ठहरा तो उपाशना किसकी करें क्योंकि बिना नाम रूप और लीला और धाम के उपाशना नहीं बन सक्ती है इस सबब

से यह लोग ग़लती में पड़े हैं और इसी स
बब से इनका ज्ञान भी वाचक ज्ञान है बिना
कर्म और उपाशना के पोथी पढ़कर और
बुद्धि से बिचार करके हासिल किया है
और जो किसी को उपाशना करके स-
च्चा ज्ञान भी हुआ तोभी वह संतों के
कर्म की हद्द में हैं निज देश संतों का उ-
सके बहुत आगे और ऊंचा है और जो
करम कि वेद में लिखे हैं वह पिछ-
ले जुग के हैं नतो वह जीवों से विधि
पूर्वक अब बन सक्ते हैं और न उनमें वह
फल है—अब जो कोई कर्म करै वह
भी संतों के द्वारा और जो उपाशना
करै वह भी संतों की दया लेकर तब
काम पूरा बनैगा याने वेद के सिद्धान्त
और उसके परै पहुंचेगा—और तरह
से इस वक़्त में कुछ काम नहीं बनैगा॥

[२४९] मालिक के दरबार में सिवाय
भक्त के और कोई दख़ल नहीं पा सक्ता

है—जितने ऋखी मुनी योगी यती ज्ञानी सन्यासी परम हंसहुये और अपने मत के पूरे भी थे पर उनको मालिक के दरबार में दखल नहीं मिला क्योंकि अहंकारी थे और निगुरे उनको संत सतगुर नहीं मिले—और इस वक्त में जो लोग उनके ग्रन्थ पढ़कर अपने को पूरा ख़याल करते हैं और जैसी करनी उन लोगों ने करी उसका चौथा हिस्सा भी नहीं करते और संत सतगुर की निंद्या करते हैं—वह कैसे उस दरबार में दखल पावेंगे— अब सबको चाहिये कि इस बात को निश्चय करके मानें कि जो संत सतगुर की भक्ती करते हैं वह कुल्ल मालिक की भक्ती करते हैं क्योंकि पूरे सतगुर अपने वक्त के में और कुल्ल मालिक में भेद नहीं है दोनों का एक रूप है ॥

---

[२५०] जिसको पूरे सतगुर मिले और वह उनकी सेवा और सतसंग और प्रीत और प्रतीत भी करता है पर इस अरसे में पूरे सतगुर गुप्त होगये और इसका काम अभी पूरा नहीं हुआ याने कुछ अंतर में नहीं खुला तो जो उसको चाह है कि मेरा काम पूरा होवे तो जो सतगुर के बनाये हुये सत-गुर मिलें तो उन में वैसीही प्रीत और प्रतीत और उनकी सेवा और सतसंग करे और सतगुर पहिले को उन्हीं में मौजूद समझे-क्योंकि शब्दस्व-रूप करके संत सतगुर और संत एकही हैं दो नहीं हैं और देह स्वरूप करके दो दिखलाई देते हैं और पिछलों का अक़ीदा याने मानता इस सबब से बेफ़ायदह है कि उनसे प्रीत नहीं होसक्ती न तो उनको देखा है न उनका सत संग किया और जो सतगुर मिले

नहीं तो उनके चरणों में प्रीत नहीं होसक्ती इस वास्ते अनुरागी याने शौक़ीन सेवक को चाहिये कि सतगुर प्रत्यक्ष से याने अपने वक्त के से प्रीत करै—और उनमें और सतगुर पहिले में सिवाय देह स्वरूप के भेद और फ़र्क़ न करे और अपना काम पूरा करवावे और जो उसें चाह अपनी तरक्क़ी की नहीं है तो सतगुर पहिले की प्रीत और प्रतीत दिल में रक्खे हुये उन्हीं का ध्यान और जो जुक्त उन्हों ने बताई है उसका अभ्यास करे जावे—अंत को वे सतगुर उसी रूप से उसका कारज जिस क़दर होगा उस क़दर करेंगे पर पूरा कारज नहीं होगा फिर उसको जन्म धारनकरना पड़ेगा और फिर सतगुर मिलेंगे तब उनकी भक्ती और सत संग करके कारज पूरा होगा जब सतगुर वक्त गुप्त होते हैं वह उसवक्त किसी को अपना जान-

शीन मुकर्रर करके उसमें खुद आ समाते हैं और बदस्तूर जीवों का कारज करते रहते हैं और जब मौज ऐसी कार्रवाई की नहीं होती है तब अपने धाम में जा समाते हैं इसवास्ते सेवक तालिब को ऐसे सतगुर में फ़र्क़ न करना चाहिये मगर जो सिर्फ़ टेकी सेवक हैं वह सतगुर दूसरे की भक्ती में नहीं आवेंगे इसवास्ते उनका कारज भी जिस क़दर कि सतगुर पहिले के रूबरू होगया होगा उसी क़दर होगा आगे तरक्क़ी और दुरुस्ती नहीं होगी ॥

[२५१] जब कि सतगुर को तुम मालिक कह चुके तो फिर और मालिक कहां से आया कि जिसको तुम मानते हो और बड़ा समझते हो—तुम्हारे तो एक सतगुर ही मालिक हैं देह रख कर जो स्वरूप दिखलाया है पहिले

इसी से काम होगा दूसरा सरूप उनका सब्रेमालिक याने सत्तपुर्ष का सरूप है और वही तुम्हारे सच्चे बादशाह हैं ॥

[२५२] ज़िक्र है कि दक्षिण में एक मुक़ाम पर एक फ़क़ीर साहब जो पूरे गुरू थे बिराजते थे और एक चेला उनका निहायत गुरमुख था एक रोज़ सतसंग उनका हो रहा था तब एक मुसलमान मोलवी जो मक्के के जाने के वास्ते तईयार था आया और उसने फ़क़ीर साहब से कहा कि मक्का और काबा बहुत बुज़ुर्ग और उत्तम जगह है आपके सेवकों को भी वहां दर्शन के वास्ते जाना चाहिये और कई तरह से उसकी तारीफ़ और महिमा करने लगा- उसवक्त जो बड़ा चेला फ़क़ीर साहब के पास बैठा था वह बहुत खफ़ा हुआ और उस मोलवी की गर्दन पकड़कर उसको

सिर फ़क़ीर साहब के चरणों में रख दिया और कहा कि देख किरोड़ों मक्के और काबे इन चरणों में मौजूद हैं जब फ़क़ीर साहब उठकर वास्ते हाजत के ज़रा बाहर गये तब उस सेवक से और मौलवी से खूब चरचा हुई जब फ़क़ीर साहब आये तब मौलवी ने शिकायत की उसवक़्त सतगुर ने सेवक को समझाया कि नहीं काबा बहुत अ-च्छा है जैसा कि मौलवी कहता है वैसा ही है और दर्शन करने योग्य है- जा तूभी इसी वक़्त मौलवी के साथ जा वह सेव-क पूरा गुरमुख था हाथ जोड़कर खड़ा होगया और कहा कि जैसे हुकम गुरू साहब का उसी वक़्त मौलवी के साथ जहाज़ पर गया—जब कुछ दूर जहाज़ चला तब बड़ा तूफ़ान आया और वह जहाज़ टूट गया और सब लोग जो जहाज़ पर थे डूब गये पर

यह सेवक एक तख़ते पर बैठा रह गया और यह भी थोड़ी देरमें डूबने को था कि एक हाथ समंदर में से निकला और आवाज़ हुई कि जो तू अपना हाथ दे तो तुझे बचालूं--तब सेवक ने पूछा कि तुम कौनहो-आवाज़ आई कि मैं पैग़म्बर साहब हूं तब सेवक ने कहा कि मैं नहीं जानता कि पैग़म्बर साहब कौन हैं मैं सिवाय अपने गुरू साहब के दूसरे को नहीं जानता हूं तब वह हाथ छिपगया फिर थोड़ी देर पीछे जब कि यह सेवक तख़्ते पर बहा जाता था और गोते भी खाता जाता था दूसरा हाथ निकला और कहा कि हाथ पकड़ ले तुझको बचालेवें सेवक ने पूछा कि तुम कौन हो आवाज़ आई कि हमख़ुदा याने ईश्वर हैं इसने वही जवाब दिया कि मेरा ख़ुदा तो मेरा गुरू है दूसरे ख़ुदा को मैं नहीं जानता तब वह हाथ

भी छिपगया ज़रा देरके पीछे फिर तीसरा हाथ निकला यह हाथ उसके दादा गुरू काथा—उन्हों ने कहा कि मैं तेरे गुरू का गुरू हूं मुझे तू अपना हाथ दे मैं तुझको निकाल लूं तब उस सेवक ने जवाब दिया कि मैं सिवाय अपने सतगुर के अपना हाथ किसी को नहीं दे सक्ता हूं कोई क्यों न होवे चाहे मैं डूब जाऊं चाहे जिंदह रहूं मैं सिवाय अपने सतगुर के किसी के कहने से नहीं निकलूंगा तब वह हाथ भी गुप्त होगया फिर आप गुरू साहब आये और उन्हों ने सेवक को गले लगा लिया और फ़ौरन अपने मकान पर ले आये-अब मालूम करो कि पैग़म्बर साहब और खुद ईश्वर याने खुदा और जो गुरू के गुरू ने जो आवाज़ दीथी वह इसके इमतिहान और परीक्षा के वास्ते थी और जब वह गुरमुखता

में सच्चा और पूरा उतरा उसवक़ सत गुर आप प्रघट और मौजूद हुये और उसको बचालिया अब जीवों को चाहिये कि जहां तक बनै इसी तरह की मज़ बूत और सच्ची प्रीत और प्रतीत सतगुर को करें ॥

[२५३] जो पतिब्रता इस्त्री है वह सिवाय अपने पति के किसी को मर्द नहीं जानती और सबको नामर्द सम- झती है याने नपुंसक जानती है बल्कि अपने मा बाप की भी प्रीत भूल जाती है—एसेही जो सतगुर के सेवक हैं उनको भी चाहिये कि सिवाय अपने सतगुर के और किसी को अपना मालिक और मुक्ति दाता न समझें और जो पिछ ले संत हुयेहैं उनको जब तक मानें कि जब तक उनको अपने वक़ के पूरे गुरू नहीं मिले और जब सतगुर मिल जावें

फिर प्रतिब्रता की तरह जो कुछ समझै उन्हीं को समझै और दूसरे पर भाव न लावे ॥

[२५४] जो कि बिचौलिया होते हैं वह सगाई और शादी कराकर इस्त्री और पुर्ष को मिला देते हैं और इस्त्री को समझाते हैं कि देख—तू सिवाय अपने पति के और किसी से प्रीत मत करियो और हम से भी इतनी ही प्रीत रख कि जैसे औरों से बरतती है--इसी तरह गुरू नानक और पिछले संत हुये कि उन्हों ने बिचौलिया का काम किया याने अपने बचन और ग्रंथों में लिखगये हैं कि पूरे सतगुर का खोज करके उनकी सरन पड़ो—जिन्हों ने उनके बचन माने और सतगुर पूरा खोज कर उनकी सरन ली उनको चाहिये कि अब सतगुर को ही अपना मालिक और पति समझैं ॥

[२५५] जीव को चाहिये कि हमेशह सतगुर की कृपा और उनकी दया को ख्याल में रक्खै और बिचारे कि सतगुर ने कैसी चौरासी से बचाया है और कर्म और भर्म काटे याने तीरथों और बरतों से अलग किया और भटकना से छुड़ाया और शब्द मारग सच्चा दृढ़ा या तब उसकी प्रीत सतगुर से लगेगी और भर्म नहीं उठेंगे इस वास्ते हमेशह सतगुर की दया और मेहर को चित्त में रखना ज़रूर है ॥

[२५६] बिद्यावान गुरू से जीव के संसय दूर नहीं होसक्ते अलबत्ते सभा बिलास खूब होजाता है—जब एक श्लोक के चार या ज़ियादह अर्थ किये तो जीवों को और संसय में डाला कि वह कौन से अर्थ को पकड़ें--जो बात कि जीव के कल्यानके वास्ते दर-

कार थी छांट कर न कही—तो जीव कैसे रस्तह पावें और क्या जतन करें इसवास्ते चाहिये कि नेष्ठावान गुरू खोजो जबतक वह नहीं मिलेंगे कारज नहीं होगा—और यह सोने के समान जो नरदेही मिलीहै इसको नमक और आटे के समान पंडित और भेष और बाचक ज्ञानियों के संग में खर्च न करो और सतगुरु पूरा खोज कर उनकी सेवा और सतसंग करो ॥

[२५७] जो लोग कि सत्तनाम और राम और हरनाम का सुमरन करते हैं यह करनी उनकी बृथा जावेगी क्योंकि नाम सतगुरु के आधीन हैजो सतगुरको पकड़ेगा उसको नाम और राम भी मिल जावेगा और जो सतगुरु से नाम लेकर सतगुरु की प्रीत न करेगा उसको भी नाम नहीं मिलेगा ॥

[२५८] संतों का नाम अगोचर है और वेद का नाम गोचर है जो नाम गोचर है वह सत्तनाम नहीं होसकता और जब नाम असत्य हुआ तो उसका अस्थान और रूप भी असत्य हुआ-और संतोंका नाम भी सत्य है और रूप अस्थान भी सत्य है क्योंकि जो वर्णआत्मक नाम है उसके आसरे सफ़ाई होसक्ती है पर सुर्त नहीं चढ़ सकती है—और धुनआत्मक नाम के आसरे सुर्त पिंड से ब्रह्मगड को चढ़कर अपने निज अ-स्थान याने सत्तलोक में पहुंच सकती है-सो वह धुनआत्मक नाम सिवाय संतों के और किसी से हासिल नहीं होसक्ता है जिसके बड़े भाग हैं उसको यह नाम प्रापत होगा ॥

[२५९] जब तकलीफ़ होवे तब हजूर सतगुर को याद करै वे फ़ौरन सेवक

के पास निज रूप से मौजूद हैं—काल और कर्म उस रूप के पास नहीं आ-सकते हैं दूरही दूरसे डराते हैं और आप भी डरते हैं—फिर सतगुरु की गोद में किसी तरह का डर नहीं है सतगुरु हर वक़्त रक्षक हैं मौज और मसलहत उनकी सेवक नहीं जान सका-ता है--पर वे खूब जानते हैं और जो मौज होवे तो सेवक को भी जना देवें ... रूप सुर्त रूप प्रेमरूप आनंद रूप ...र्ण रूप और फिर अरूप हैं ॥

[२६०] जिस शख़्स को कि गुरू से ऐसे गुरू मिले कि जिनको शब्द का भेद मालूम नहीं है—और फिर सत-गुरु शब्द भेदी मिले तो उसको चाहिये कि पहिले गुरू को छोड़कर सतगुरु की सरन लेवे—कौल—झूठे गुरू की टेक को तजत न कीजे बार। द्वार न पावे

शब्द का भटकै बारम्बार ॥ बल्कि उस गुरू को भी मुनासिब है कि अपने चेले के साथ सतगुर की सरन में आवे और उनसे अपने जीव का उद्धार करवावै ।

[२६१] जिसको शब्द भेदी गुरू मिले पर वे अभी पूरे नहीं हैं-अभ्यासी- हैं और फिर उसको पूरे सतगुर शब्द मार्गी मिले तो उसको चाहिये कि पहिले गुरू को पूरे सतगुर में दाखिल समझ कर सतगुर की सरन लेवै और उसके गुरू को भी जरूर है कि वह भी चेले का संग देवें और सतगुर की सरन लेवें—और जो वे ईर्षावान या अहंकारी हैं तो वह सरन में न आवेंगे तो चेले को चाहिये कि उनसे कुछ गरज और मतलब न रक्खे और आप पूरे सतगुर की सरन में आवे ॥

[२६२] सतगुर अपनी दया से सदा

जीव की सम्हाल करते रहते हैं और चा-
हते हैं कि सब सेवक उनके चरणों में
मुख्य प्रीत और प्रतीत करें पर यह मन
नहीं चाहता है कि ऐसी हालत जीव को
पराप्त होवे इस वास्ते वह भोगों की
तरफ़ खैंचता है और अपने हुकम में
जीव को चलाना चाहता है इस वास्ते
जीवों को चाहिये कि मन की घात से
बचकर सतगुर के चरणों की सम्हाल
रक्खें और उसके जाल में न पड़ें वास्ते
परख और सम्हाल के थोड़ासा हाल
गुरमुख और मनमुख की चाल का लिखा
जाता है—उससे अपनी हालत की
परख करते हुये चलना चाहिये॥

[१] गुरमुख-हर एक के साथ सच्चा
बरतता है और बुराईकी बातों से बच-
ताहै और किसीको धोका नहीं देताहै
औरजोकाम करताहै सतगुरके लिये और

उनकी दया के भरोसे पर करता है ॥

-मनमुख—चतुराई और कपट से बरतता है और अपने मतलब के लिये औरों को धोका देता है और अपनी बुद्धी और चतुराई का भरोसा रखता है और अपने आप को प्रघट करना चाहता है ॥

[२] -गुरमुख—मन और इन्द्रियों को रोकता है और चित्तसे दीन रहता है और ताने के वचन को सहता है और नसीहत को प्यार से सुनता है और अपनी बड़ाई नहीं चाहता है ॥

मनमुख-- मन और इन्द्री का मर्दन पसंद नहीं करता है और किसी से दबना या उसका हुकम मान्ना नहीं चाहता है॥

[३] -गुरमुख---किसी पर ज़बरदस्ती नहीं करता और सब की ख़ातिरदारी

और सेवा करने को तईयार रहता है और औरों का उपकार करना चाहता है और अपनी पुजा और प्रतिष्ठा की चाह नहीं रखता है— और सतगुर की याद और उनके चरणों में लवलीन रहता है ॥

मनमुख—औरों पर हुकम चलाता है और सेवा लेता है और अपना मान चाहताहै और बिनाकुछ अपने मतलब के औरों से प्रीत नहीं करता और खुशीसे अपनी पूजा और प्रतिष्ठा करा-ता है और चरणों में लवलीन नहीं रहता है ॥

[४] गुरमुख—ग़रीबी और दीनता नहीं छोड़ता है और जब कोई उसकी निंधा करै या निरादर और अपमान करै तो दुखी नहीं होता है बलकि उसमें अपने लिये भलाई समझाता है॥

मनमुख-निंदा और अपमान से डरता है और अपना निरादर खुशी से नहीं सहता और बड़ाई चाहता है ॥

[५] गुरमुख सेवा में आलस नहीं करता और कभी खाली बैठना नहीं चाहता ॥

मनमुख--तनका आराम चाहता है और सेवा में सुस्ती करता है ॥

[६] गुरमुख—गरीबी और सादगी से रहता है और जो सामान मिल जावे रूखा सूखा मोटा झोटा उसीमें खुशी से गुज़ारा करने को तईयार र-हता है ॥

मनमुख—सदा अच्छे अच्छे पदारथों को चाहता है और उनको प्यार करता है और रूखे सूखे और अच्छे पदार थों को पसन्द नहीं करता है ॥

[७] गुरमुख संसारी पदारथ और दुनिया के जाल में नहीं अटकता है और उनकी लाभ और हान में दुखी सुखी नहीं होता है और जो कोई ओछी बात कहे तो उसपर गुस्सह नहीं करता है और सदा अपने जीव के कल्यान और सतगुर की प्रसन्नता पर नज़र रखता है ॥

मनमुख—संसार और उसके पदा-रथों का बड़ा ख़याल रखता है और उनकी हान लाभ में जल्द दुखी सुखी होता है और जो कोई कड़ुआ बचन कहे तो फ़ौरन गुस्सह में भर आता है और सतगुर की मेहर और समर्थता का भरोसा और ख़याल नहीं रखता है ॥

[८] गुरमुख—हर बात में सफ़ाई और सचोटी रखता है और चित्त से उदार रहता है और औरों से सलूक

करता है और औरों का फ़ायदह चा-
हता है और आप थोड़े में संतोख
करता है और दूसरे से लेने की चाह
नहीं रखता है ॥

मनमुख—लालची है सदा औरों से
लेने को तईयार रहता है और दुनिया
नहीं चाहता है और अपना फ़ायदह
हर बात में विचारता है दूसरे का ख़्याल
नहीं रखता और तृष्णा बढ़ाता है और
सफ़ाई से नहीं बरतता है ॥

[९] गुरमुख—संसारी जीवों से बहुत
प्यार नहीं करता है और सैर तमाशे
नहीं चाहता है—उसके केवल चरणों
के प्राप्ती की चाह रहती है और उसी
के आनंद में अशक्त रहता है ॥

मनमुख—संसारी जीवों और पदा-
र्थों से प्रीत करता है और भोग बिलास

चाहता है और ग़ैर तमाशे से खुशी होता है ॥

[१०] गुरमुख—जो काम करता है सतगुर की प्रसन्नता के लिये और उन से दया और मेहर चाहता है और सत गुरही की अस्तुति करता है और उन्हीं की बड़ाई चाहता है और संसारी चाह नहीं रखता ॥

मनमुख—जो काम करता है उसमें कुछ न कुछ अपना मतलब या स्वाद देख लेता है क्योंकि बिना मतलब के उससे कोई काम नहीं बन सका और सदा अपना आदर और अस्तुति चाहता है और संसारी चाह उसके ज़बर रहती है ॥

[११] गुरमुख—किसी से बिरोध नहीं करता बल्कि बिरोधी से भी प्यार

करता है और कुल कुटम्ब ज़ात पांत और वड़े आदमियों से दोसती का अपने मन में अहंकार नहीं लाता और प्रेमी और सच्चे परमारथी जीवों से ज़ियादह प्यार करता है और सतगुर के चरणों का प्रेम सदा जगाये रखता है और उनकी दया और मेहर नित्त प्रति बिशेष हासिल करता है ॥

मनमुख—बहुत कुटम्ब और मित्र चाहता है और धनवान और हुकूमत वालों से ज़ियादह मुहब्बत करता है और उनकी मित्रता और अपनी ज़ात पांत का अहंकार रखता है और दिखावे के काम बहुत करने को चाहता है और सतगुर की प्रसन्नता का ख़्याल कम रखता है ॥

[१२] गुरमुख—गरबी और मुफ़लसी

से नहीं घबराता है और जो तकलीफ़ आ पड़े उसको धीरज के साथ सहता है और सतगुर की दया का भरोसा और उनका शुकर करता रहता है ॥

मनमुख-बहुत जल्द तकलीफ़ से घबरा कर पुकारने लगता है और निर्धनता से दुखी होकर इधर उधर शिकायत करता है ॥

[१३] गुरमुख—सब काम को मौज के हवाले करता है और चाहे भला होवे चाहे बुरा होवे अपना अहंकार उसमें नहीं लाता है और अपनी बात की पक्ष नहीं करता और औरों की बात को ओछा करके नहीं दिखलाता और झगड़े के कामों में नहीं पड़ता और हमेशह सतगुर की मौज निहारता रहता है और उनका गुन गाता हुआ चलता है

मनमुख—सब कामों में अपना आपा ठानता है और अपने मजे और नफ़े के लिये झगड़े और रगड़े के काम उठाता रहता है-और अपनी बातकी पक्ष में क्रोध करने और लड़ने को तईयार हो जाता है ॥

[१४] गुरमुख—नई नई चीज़ों में और बातों में नहीं अटकता क्योंकि वह देखता है कि उनकी जड़ संसार है और अपने गुन संसार से छिपाये चलताहै और अपनी तारीफ़ कराना नहीं चाहता है और जो कोई बात सुनै या देखै उसमें अपने मतलब का नुकता जो सतगुर की प्रीत बढ़ावे छांट लेताहै और सदा सतगुर की महिमां गाता रहेता है जो कि सब गुणों के भण्डारहैं ॥

मनमुख—चाहता है कि नित्त नई नई चीज़ें देखै और नई नई बातें

सुने और हर किसी का भेद और गुप्त बात दरियाफ़्त करना चाहता है और इधर उधर से बातें चुनकर अपनी बुद्धी और चतुराई बढ़ाता है यह सब को जता कर अपनी महिमां कराना चाहता है और अपनी अस्तुति में बहुत राज़ी होता है ॥

[१५] गुरमुख—जो काम परमारथी करता है धीरज के साथ करता है और हमेशह सतगुर की दया और मेहर का भरोसा और उनके चरणों में निश्चा पक्का रखता है ॥

मनमुख—हरबात में जल्दी करता है और सब काम जल्दी के साथ पुरे करना चाहता है और जल्दी में सतगुर की मेहर का भरोसा और उनके वचन का निश्चा भूल २ जाता है ॥

यह सब बातें जो गुरमुख की चाल

में बर्णन की गइ हैं सो सतगुर की मेहर से प्रापत होंगी जिसपर उनकी कृपा होवै उसीको वह बख्शिश करें और जो उनके चरणों में प्रीत करते हैं और प्रतीत रखते हैं उनको जरूर एक दिन यह दात मिलैंगी सतगुर के चरणों का प्रेम सब गुनोंका भंडार है जिसको प्रेम की दात मिली उस में ये सब गुन आप आजावेंगें और सब मन मुखी अंग जाते रहेंगे ॥

[२६३] इस जुग में वास्ते जीव के कल्यान के सिवाय सतगुर और शब्द भक्ती के दूसरा मा.र्ग और उपाव संतों ने [illegible] नहीं कि [illegible] और वेद और पुरान में भी कलजुग के वास्ते यही जतन रक्खा है याने गुरू और नाम की उपाशना से जीव का कारज होगा इस में प्रमान बहुत से हैं—सूरत पूजा तीरथ--बरत

जप तप होम जग्य आचार और जात बर्ण के कर्म और क्रिया जोग याने हठ जोग और अष्टांग जोग यह सब पिछले जुगों के धर्म हैं इस जुग में न तो यह बिधि पूर्बक किसी से बन सक्ते हैं और न इन से वह फल जिसमें जीवका कल्यान होवे मिल सक्ता है इसवास्ते इनका बिलकुल निषेध है जो जीव कि मन की हठ से इन कर्मों को करते हैं उनकी हालत गौर करके देखलो कि पहिले तो उनसे यह कर्म जैसे कि चाहिये बनते ही नहीं हैं और जो कुछ ऊपरी अंग उनके करते नजर आते हैं सो उस करनी से और अहंकार पैदा होता है और बजाय अंताकरन की शुद्धी के इस करनी से और पाप और मलीनता बढ़ती है इस वास्ते मुनासिब है कि जीव धोखे में न पचें और इन कर्मों में अपने तन मन और धन को

वृथा खर्च न करें और जो लोग कि इन कर्मों का उपदेश करते हैं—ग़ौर कर के देखो कि वे या तो रोज़गारी हैं-या अहंकारी और अपनी जीविका या मान बड़ाई के निमित्त उपदेश करते हैं जीव के कारज का उनको बिलकुल ख्याल नहीं है इस वास्ते उनका कहना नहीं मानना चाहिये- इस में भी संतों के बहुत प्रमान हैं जिन से साफ़ ज़ाहर है कि कलजुग में इन कामों के वास्ते बिलकुल हुक्म नहीं है और जो कि हुक्म नहीं मानते वह या तो संसारी या रोज़गारी या अहंकारी हैं सो उन के वास्ते यह उपदेश भी नहीं है-समझवार और परमारथी जीव को ज़रा से ग़ौर करने से मालूम होगा कि हक़ीक़त में यह बचन संत और महात्माओं का जो कि पिछले कर्म और धर्म के खंडन में है सच्चा है या नहीं याने मूरत पूजा

का मतलब मन और चित्त के एकाग्र करने का था सो अब एक खेल होगया और कोई भी मूरत का दर्शन घंटे दो घंटे बैठकर प्रेम प्रती से नहीं कराता तो वह फल जो कि पिछले महात्माओं ने इस काम में रक्खा था कैसे प्रापत होगा बरखिलाफ़ उसके और मन और चित्तकी वृतियां फैलीं और तमाशे में लगगई तो बजाय फ़ायदे के और नुक़सान हुआ इसी तरह तीर्थों में पहिले संत महात्मा रहते थे और जोजो वहां जाते थे वह उन का दर्शन और सतसंग करके अन्ताकरन की शुद्धी हासिल करते थे अब बजाय उसके गंगा जमुना अथवा जलमें अश्नान करके बाक़ी वक़्त बाज़ारों की सैर और सौगात के ख़रीद फ़रोख़्त में जाता है या भंडारे वग़ैरे के सरनजाम में और खाने पीने में ख़र्च होता है- और शोर गुल भीड़ भाड़ में सतसंग और अंतर वृती

अच्छी तरह नहीं होसकते इसवास्ते
तीर्थ का भी फल उलटा होगया और
तीर्थ मेले और तमाशे होगये—इसी
तरह जप तप भी सिर्फ़ टेक बांधकर के या
लोग दिखाई के लिये किये जाते हैं और
मन के रोकने का उस करतूत में ज़रा ख्या-
ल नहीं किया जाता इसलिये उसमें भी
बजाय फ़ायदे के और नुक़सान होता है
क्योंकि बर्सें जप करते गुज़र जाती हैं
और जो हाल देखा जावे तो सिवाय
इस के कि संसार की बासना और
ज़ियादह हुई कोई परमार्थी अंग की
तरक्क़ी नज़र नहीं आती और जो जीव
कि प्रेमी और भोले हैं वह भी रोज़गारी
और संसारियों की संग में अपना प्रेम
खो बैठते हैं और मुफ़्त अपना वक़्त इन
निसफल करमों में खोते हैं और क्रिया
जोग और अष्टांग जोग का यह समा
नहीं है—न तो सरीर में वह ताक़त है

कि जीव काष्टा की बरदाश्त कर सके
और न वह करतूत पूरी उतरै क्योंकि
उसके संजम बिलकुल नहीं बनपड़ते हैं
इस वास्ते उसका भी फल उलटाहोग-
या इसी तरह बरत बगैरे त्योहार होगये
क्योंकि उसरोज़ विशेष कर स्वादके पदा-
रथ खानेमें आतेहैं और ज़ियादह तर
आलस और निद्रा पैदा करतेहैं भजन
बंदगी का कुछ ज़िक्र भी नहीं होता है
और अहंकार इन करमों का निहायत
बढ़ता है जो कि कुल पापों का मूल
पापहै इसी तरह और सब करमों का
हाल भी देखलो और मन में बिचार
कर समझलो कि अब इस वक्त में इन
कर्मों के करने से परमारथ का
फल कुछ भी नहीं मिलता है बल्कि
मन और चित्त को ज़ियादह मैला
और अहंकारी करते हैं और बाज़े जी-
व ज्ञान कीपोथियां जिनको वेदान्त शा-

स्त का अंग बताते हैं पढ़ते हैं और पढ़कर उसका मनन कर के अपने तईं ज्ञानी और ब्रह्म सरूप मानते हैं यह सब में बड़ा बिकार का कारण इस वक़ में प्रघट हुआहै पहिले तो यह कि जो ज्ञान आज कल फैल रहाहै वह वेदान्त मतके मुआफ़िक़ नहीं है वेदान्त मत जब सही होवे कि उसके सर्व अंग पूरे होवें याने पहिले कर्म और उपाशना करके चार साधन हासिल करै तब ज्ञान का अधिकारी होवै सो देखने में आताहै कि ज्ञानके ग्रंथ जो अबजारी हुये हैं उन में कर्म और उपाशना का कुछ ज़िकर भी नहीं है और न आजकल के ज्ञानी कुछ कर्म और उपाशना करतेहैं फिर उनको ज्ञान किस तरह और कहां से हासिल होसकता है उन का बचन है कि ज्ञान के ग्रंथ पढ़ना और उनका विचार और मनन करना यही

कर्म और उपासना है तो क्या व्यास और वसिष्ठ और पिछले ज्ञानी जो कि जोग करके ज्ञान के पद को परापत हुये नादान थे कि नाहक उन्होंने अपना वक्त ख़राब किया और मेहनतें उठाईं ऐसा ज्ञान जो कि आज काल जारी है निहायत आसान हर किसी को चंद रोज़ में हासिल हो सकता है क्योंकि दो चार ग्रंथों का पढ़ना और समझना यही साधन और यही सिद्धान्त है और मनके निर्मल और निश्चल करने की कुछ ज़रूरत नहीं फिर ज्ञानी और अज्ञानी में क्या भेद हूआ सिर्फ़ इतना कि वह ज्ञान की बातें ज़बान से कहता है पर बरताव में दोनों बराबर हैं—तो बातों से जीव का उद्धार नहीं होसक्ता है क्योंकि ज़बान के कहने से जड़ चेतन की गांठ जो कि हमेशह से जोग करके खुलती रही है हरगिज़ नहीं खुलेगी और जो

अपने मनमें खूब विचार कर देखा जावे तो साफ़ मालूम होगा कि इस मत से क भी जीव का कल्यान नहीं होसकता है और न मन और इन्द्री बस होसकती हैं और जब कि पिछले जुगोंके कर्म अब बन नहीं स कते हैं और अष्टांग जोग भी नहीं होसक ता है तो ज्ञान जो इन कर्मों का फल था कैसे प्रापत होगा— इससे ज़ाहर है कि जोकुछ आज कल के ज्ञानी कहरहे हैं और मान रहे हैं यह बाचक ज्ञान है—जैसे कि कोई भूका मिठाई का ज़ि- क्र करे और नाम उनके तफ़सील वा- रलेवे पर इस ज़िक्र करनेसे न सवाद ज़बान को हासिल होगा औरनपेट भरे गा-इसवास्ते संतों ने इस ज्ञान मत का कलयुग के वासते बिलकुल निषेद किया है. औरजीव की मुक्ती और उद्धार सतगुर औरशब्द भक्तीसेमुक़र्रर रक्खा हैऔरअहं कारी और विद्यावान और रोज़गारीइस

पर तरक करेंगे और इसको सुनकर नाराज़ होंगे और जो जीवसच्चे पर्मार्थी हैं इस बचनको गौर करके समझेंगे और मानेंगे ॥

॥ फ़क़त ॥

:००:

राधास्वामी दयाल की दया

राधास्वामी सहाय ॥

खुलासह उपदेश हुज़ूर राधास्वामी साहब का ॥

-बचन-यह जगत नाशमान है और सब असबाब भी इसका नाशमान है ॥

अक़्लमंद याने चतुर मनुष्य वह है कि जिसने इसके कारोबार को अच्छी तरह जांचकरके और उसको फ़ानी याने कल्पित और मिथ्या जानकर इस मनुष्य सरीर को मालिक कुल्ल का भजन सुमिरन करके सुफल किया और जो चीजें उस कर्ता ने अपनी दया से इस

नरदेही में ही हैं उनसे लाभ उठाकर
जोहर बे बहा याने—तत्त्व वस्तु अन-
मोल -जोकि सुर्त है याने जीवात्मा है
उसको अस्थान असली पर पहुंचाया ॥
दफ़ा[१] जीवातमा—अर्थात् सुर्त को
रूह कहते हैं और यह सबसे ऊंचे
अस्थान याने सत्तनाम और राधास्वा-
मी पद से उतरकर इस तन में आकर
ठहरी हुई है-और तीन गुन और पांच
तत्त्व और दस इंद्री और मन वग़ैरे
में बंध गई है और ऐसे बंधन उसके
साथ सरीर और उसके संबंधी पदारथों
के पड़ गये हैं कि उनसे छूटना कठिन
होगया--इसी छूटने को मोक्ष कहते हैं
और बन्धन अंतरी साथ इंद्री और
तत्त्व और मन वग़ैरे के हैं-और बंधन
बाहरी साथ पदारथों और कुटम्ब और
क़बीले के हैं—इन दोनों बंधनों में
जीवातमा याने [illegible] सी [illegible] है

कि उसको अपने अस्थान असली की याद भी जाती रही और इसक़दर मं-ज़िल दूर होगई कि अब इसका लौटना अस्थान असली को बिना मेहर मुर्शिद कामिल याने सतगुर पूरे के कठिन होग-या—सिर्फ़ काम इतना है कि इंसान याने मनुष्य अपनी सुर्त याने रूह को उसके ख़ज़ाने और निकास याने मुक़ा-म सत्तनाम और राधास्वामी में पहुंचावे और जबतक यह नहीं होगा तबतक खुशी और रंज और जिसक़दर दुख और सुख दुनिया के हैं उनसे छूटना नहीं होसकता ॥

[२] मतलब और मन्शा कुल मतों का और यही तरीक़ सब अगले महा-त्माओं का रहा है कि जिस तरह हो सके रूह याने सुर्त को उसके भंडार में पहुंचाना और पहुंचाहुआ उसी को

कहते हैं कि जिसने अभ्यास याने अ़मल करके अपनी रूह को अस्थान असली पर पहुंचाया और कुल बंधन बाहरी और अंतरी और अस्थूल और सूक्ष्म और कारन को तोड़ करके मन को संसारी प्रपंच याने दुनिया से न्यारा किया—कामिल और आ़मिल और सच्चे आ़शिक़ और प्रेमी और पूरे भक्त और सच्चे ज्ञानी और पूरे साध वही हैं जो आख़ीर मंज़िल पर पहुंच गये और जो कोई पहुंचे हुओं का ज़िक्र करते हैं या उनके बचनों को सिर्फ़ पढ़ते हैं या सुनाते हैं और आप मंज़िल पर नहीं पहुंचे और मंज़िल पर पहुंचने का अभ्यास भी नहीं करते हैं उनका नाम आ़लिम याने विद्यावान और वाचक है ॥

[३]   जितने अचार्ज और महातमा

और औतार और पैगम्बर हरएक मजहब में हुये वे सब अपने अभ्यास के जोर से अंतर में तरफ़ मुकाम असली के चले पर सब के सब धुर अस्थान तक नहीं पहुंचे सो बहुतसे तौ मंज़िल पहिली पर और कोई २ दूसरी मंज़िल पर और कोई बिरले साध और प्रेमी मंज़िल तीसरी के करीब पहुंचे और सिर्फ़ संत मंज़िल पांचवीं याने सत्त नाम पर और कोई बिरले संत मंज़िल आठवीं याने राधास्वामी पद तक पहुंचे-इसी अस्थान से आदि में सुर्त का तनज्जुल याने उतार हुआ है और वही सुरत जैसे कि उतरती चली आई वैसेही उसका निकास नीचे के मुकामों से याने सत्तलोक वगैरे से मालूम हुआ और जो इस मुकाम के भी नीचे रहे उनको उसी मुकाम से जहां तक कि वे पहुंचे सुर्त याने रूह का निकास

दिखलाई दिया और चूंकि उनको पूरे गुरू नहीं मिले इस वास्ते उन्होंने उसी अस्थान को सुर्त याने रूह का भंडार और वहां के मालिक को कुल नीचे की रचना का मालिक और कर्ता ठह-राकर अपने २ संगियों को उसी अस्था-न और वहां के मालिक की उपासना याने पूजा का उपदेश किया और उसी का इष्ट और ऐतक़ाद बंधवाया ॥

[४] अब समझना चाहिये कि रा-धास्वामी पद सब से ऊंचा मुक़ाम है और यही नाम कुल मालिक और सच्चे साहब और सच्चे ख़ुदा का है—और इस मुक़ाम से दो अस्थान नीचे सत्तनाम का मुक़ाम है कि जिसको संतों ने सत्तलोक और सचखंड और सारशब्द और सतशब्द और सत्त नाम और सत्तपुर्ष करके बयान किया

है इस से मालूम होगा कि यह दो अ-स्थान विश्राम संत और परम संत के हैं और संतों का दर्जा इसी सबब से सब से ऊंचा है—इन अस्थानों पर माया नहीं है और मन भी नहीं है और यह अस्थान कुल्ल नीचे के अस्थानों और तमाम रचना के मुहीत हैं याने सब रचना इन के नीचे और इन के घेर में है—राधास्वामी पद को अकह और अनाम भी कहते हैं क्योंकि यही पद अपार और अनन्त और अनादि है और बाक़ी के सब मुक़ाम इसी से प्रघट याने पैदा हुये और सच्चा ला-मकान और लामुक़ाम इसी को कहते हैं॥

[५] अब मालूम करना चाहिये कि साध और ज्ञानी और भक्त और औतार और पैग़म्बर और और सब महात्मा जोकि निजअस्थान पर न पहुंचे उनका

दर्जा संतों से नीचा और बहुत कम है
और चूंकि वे राह में न्यारे २ अस्थानों
पर रहगये इसी सबब से न्यारे २ मत
संसार में जारी होगये याने जो कोई
जिस मंज़िल पर पहुंचा उसने उसके
मंज़िल को आख़ीरी मुक़ाम और उसी
मालिक को बेअंत और अपार समझा
और उसी की पूजा का उपदेश किया
और सबब इसका यह है कि मालिक
कुल ने अपनी क़ुदरतसे हर एक अस्थान
को बतौर अक्स याने छाया निज
अस्थान के रचा है और थोड़ी बहुत
वही कैफ़ियत और हालत कि जो
ऊंचे अस्थान पर है कुछ२ उसी क़िस्म
की हालत और कैफ़ियत नीचे के अ-
स्थानों पर भी पाई जाती है—पर
हर एक अस्थान की कैफ़ियत और
हालत उसके क़याम याने ठहराव में
बड़ा फ़र्क़ है और जो जो रचना हर

एक असथान पर देखने में आती है वह भी न्यारी २ है और दर्जे बदर्जे लतीफ़ याने सूक्ष्म और बिशेष सूक्ष्म और अति सूक्ष्म और पाक याने निर्मल और विशेष निर्मल और महा निर्मल होती चली गई है—मगर यह हाल उसी को मालूम हो सकता है जिसने सब असथानों की सैर की है और नहीं तो जो जिस असथान पर पहुंचा उसने उसी असथान के मालिक के स्वरूप और प्रकाश को देखकर उसीको बे अंत और बेहद्द और खुदा और परमेश्वर बतलाया और इसी क़दर आनंद और सरूर उसको हासिल हुआ कि होश व हवास उसके सब जाते रहे और ऐसी हालत मस्ती और शौक़ की पैदा हुई कि जिसका बयान नहीं हो सकता॥

[६] और मालूम होवे कि हर असथान पर सुर्त पहुंचने वाले की कैफ़ियत

अलहदह है और वहीं कुल नीचे के अस्थानों में व्यापक और मुख़्तार मा-लूम होती है-जैसेकि जोकोईपहिले या दूसरे अस्थान पर ठहरा उसने वहां पहुंचकर देखा कि सुर्त याने मालिक उस अस्थानका नीचे के सब अस्थानों में व्यापक और उन अस्थानों का करता है और उसीसे कुल रचना याने पैदायश जीवों की ज़ाहर हुई और उसी के आ-सरे क़ायम है तब उसने उसी को मालिक ठहराया और अपने सेवकों और सतसंगियों को उसी अस्थान की भक्ती और पूजा के वास्ते उपदेश किया और आगे का भेद न जाना—क्योंकि आगे का भेद सिवाय संत सतगुर के और कोई नहीं जानता है—और संत सतगुर उनको नहीं मिले जो मिलते तो भेद आगे का बतलाते और उनका रस्ता चलाते ॥

—इसी तौर-पर हर एक शख़्स जिसने अपने अंतर में एक या दो या तीन अस्थान ते किये पूरा और पहुंचा हुआ कहा गया—और हाल यह है कि पहिलेही अस्थान पर पहुंचने पर सर्व शक्ती साधू को हासिल हो जाती हैं इस वास्ते बसबब हासिल होजाने शक्तियों और क़ुदरत और ताक़त के उस पहुंचने वाले को महात्मा और कामिल क़रार दिया गया—और इस में कुछ शक भी नहीं कि यह दर्जा ब निस्बत दर्जात सिफ़ली याने नीचे के बहुत ऊंचा है और कदूरत दुनियवी और जिस्मानी याने मलीनता संसारी और देही की उस पहुंचने वाले में बिलकुल नहीं रहती है ॥

[७] ऊपर ज़िकर हुआ है कि सत्तनाम अस्थान जिसको सत्यलोक और सच-खंड भी कहते हैं निहायत ऊंचा है और

संतों का दरबार है—और उसके ऊपर तीन अस्थान और हैं कि जिसको किसी संत ने नहीं खोला अब परम पुर्ष पूरन धनी राधास्वामी दयाल ने जीवों पर निहायत कृपाकर-के उन मुक़ामों को खोलकर साफ़ २ बर्णन किया है और उनका भेद और कैफ़ियत भी ज़ाहर की और सब से ऊंचा और धुर अस्थान राधास्वामी पद जो सब की आदि और भंडार है और परमसंतों का निज महल है उस-का भेद दया करके बख़्शा—इसी अ-स्थान से शुरू में सुर्त उतरी थी और इसके नीचे जितने अस्थान हैं वे सब सुर्त के उतार के हैं और अब जीवात्मा याने सुर्त या रूह इस जिस्म याने देह में सहसकंवलदल के नीचे ठहरी हुई है और वहां से इसकी रोशनी और ता-क़त तमाम जिस्म में उतरकर और

फैलकर मन और इंद्रियों के द्वारे कुल्ल जिस्मानी और नफ़सानी यानेअसथूल और सूक्ष्म कारज दे रही है ॥

[८] मन दो हैं एक ब्रह्मांडी और दूसरा पिंडी-ब्रह्मांडी मन का अस्था-न त्रिकुटी और सहसदलकंवल में है और इसी को ब्रह्म और परम ईस्व-र और परम आत्मा और खुदा कहते हैं और पिंडी मन का असथान नेत्रों के पीछे और हिरदे में है यही मन भी सुर्त की मदद से कुल्ल कारोबार दुनिया का कर रहा है—सुर्त याने रूह को इस क़दर प्रीत साथ मन के होगई है कि उसके संग बिलकुल रुजू उसकी नीचे की तरफ़ याने दर्जात सिफ़ली में हो रही है और इसीसे मन और इंद्री वग़ैरह को ताक़त कारोबार की हासिल है-जो जीवात्मा याने सुर्त या-ने रूह मुतवज्जह अपने असथान आ-

सली की होवे तो असबाब दुनिया की तरफ़ से तवज्जह घटती जावे और सूरत खलासी याने मोक्ष की निकल आवे जब सुर्त ब्रह्मांडी मन के असथानों के परे अपने असथान असली याने सत्त लोक में पहुंचेगी तब कुल्ल बंधन कारन और सूक्ष्म और असथूल और देह और इंद्री और मनके टूट जावेंगे-और व्यव-हार ऐसे पहुंचने वाले का सिर्फ़ कार-ज मात्र याने बतौर ज़रूरी रह जावेगा और वह भी बइख़्तियार अपने याने जब चाहे जब मुतलक़ तोड़दे--खुलासह यहहै कि जबतक सुर्त याने जीवात्मा इन के दोनों जो कि साथ असथूल सूक्ष्म औ-र कारन देह याने-जिस्म-और-मन-औ रइंद्रियों के पड़गईहैं तोड़कर या कम करके और इन मलीन असथानों को जो पिंड और ब्रह्मांड के ताअल्लुक़ हैं छोड़कर तरफ़ असथान असली के र-

जू न करेगी और ब्रह्मांडीमनको परे न पहुंचेगी तबतक जड़ चेतन की गांठ न खुलेगी और कसीफ़ याने जड़ पदारथ यह हैं—मन—और—इंद्री—और देह—याने जिस्म और कुल्ल संसारी व्यवहार—और भोग—वग़ैरे- और सुर्त लतीफ़ और चेतन है और इन दोनों की मिलौनी का नाम गांठ है सो जब तक यह गांठ न खुले याने मिलौनी माया की दूर न होवे तब तक उसका नाम मोक्ष नहीं हो सक्ता और नकर्मी बीज असा और तृष्णा का नाश होगा ॥

[६] हरचंद कि अभ्यास के बल से और कुछ रस्तह ते करने से इन का जोर किसी क़दर कम हो जावेगा या कुछ दिनों तक असल में दबजाना और ज़ाहर में जाता रहना भी इनका मालूम पड़ेगा पर बिलकुल दूर होना

जबतक कि सत्तलोक में सुर्त न पहुंचे-गी नहीं हो सक्ता है क्योंकि जो सत लोक तक न पहुंची तो जब ब्रह्मांडी मन और माया का असर होगा और जब भोग और बिलास भारी झकोला देंगे तब खौफ़ है कि साधू असथानप-हिले और दूसरे का याने जो कि सहस दलकंवल तक या उसके ऊपर त्रिकुटी तक पहुंच गया है तो उसको न सम्हाल सकैगा और अचरज नहीं कि फ़िसल जावे और चाहे फिर जल्द होश में आकर भोगों से नफ़रत करके फिर अपने असथान का अभ्यास करके और गुरू की दया से सम्हाल ले पर दागी होने में उसके कुछ संदेह नहीं इस-वास्ते मुनासिब है कि प्रेमी अभ्यासी अपनी सुर्त को ऐसे ऊंचे अस्थान पर पहुंचावे कि जहां आसा और तृष्णा किसी क़िस्म की और बिषय भोग की

बासना का-चाहे—वह संसारी होवें ओर चाहे परमार्थी नाम और निशान भी नहींहै सिर्फ परमपुर्ष पूरनधनी राधास्वामी कुल्लमालिक के दर्शनही का आनंद और बिलास है तब अलबत्ते वह शख्स बच जावेगा और फिर किसी तरफ़ की रूजू उसकी इस तरफ़ को मुतलक़ न होगी और तब माया के घेर से बाहर होजावेगा—और फिर वही अभ्यासी संत पदवी को परापित हुआ-यही सबब है कि बड़े २ औतार औ-र ऋषीश्वर और मुनीश्वर और औलिया और पैगम्बर अपने २ वक़्त पर माया के चक्कर में आगये और अपने पद को उस वक़्त भूलकर धोखा खागये जैसेकि ना-रद और व्यासऔरशृंगीरिष और पारा-शर और ब्रह्मा और महादेवजी और औतार वगैरे-इन सबका-हाल जुदा २ लिखा है और जोकि वह थोड़ा या

बहुत सब को मालूम है इसवास्ते इस अस्थान पर उस की शरह करना मुनासिब नहीं समझा गया ॥

[१०] ऊपर जो इशारा किया गया उसका मतलब यह नहीं है कि यह लोग बिलकुल माया के कैदी होगये या किसी तरह से उनका भारी नुकसान हुआ बल्कि ग़रज़ यह है कि इनको माया ने अपना ज़ोर दिखलाकर धोका दे दिया और सबब इसका ज़ाहर है कि वे हरचंद बड़े अस्थान पर पहुंचे थे पर उस अस्थान तक नहीं पहुंचे किजो माया के घेरसे बाहर है और मालूम होवे कि वह धुर अस्थान सत्तनाम और राधास्वामी है अब तफ़सील उतरनेदर्जे सुर्त की लिखी जाती है इससे साफ़ मालूम होगा कि असली अस्थान सुर्त का किसकदर दूर और ऊंचा है और औतार

और पैगम्बर और औलिया और देवता वगैरे कौन २ से अस्थान से प्रघट हुये और हद्द उनकी कहां तक है ॥

[११] पहिला याने धुर अस्थान सबसे ऊंचा और बड़ा कि जिसका नाम अस्थान भी नहीं कहाजाता है उसको राधास्वामी अनामी और अकह कहते हैं यह आद और अंत सब का है और कुल का मुहीत याने सब उसके घेर में हैं और हर जगह इसी अस्थान की दया और शक्ती अंश रूप से काम दे रही है और आदि में इसी अस्थान से मौज उठी और शब्द रूप होकर नीचे उतरी यह अस्थान परम संतों का है सिवाय बिरले संतों के यहां और कोई नहीं पहुंचा और जो पहुंचा उसी का नाम परम संत है ॥

[१२] राधास्वामी पद के नीचे दो

अस्थान वीचमें छोड़ कर सत्तनाम का असथान याने सत्तलोक—महा प्रकाश वान—और पाक और निर्मल है और महज़ रूहानी याने चेतन्य ही चेतन है और कुल नीचे की रचना का आद और अंत यही है और इस पद से दो अंश उतरीं और वह कुल नीचे के अ-स्थानों में व्यापक हुई संत मत में सच्चा मालिक और कर्ता याने पेदाकरने वाला इसी को कहते हैं और आद शब्द का ज़हूर इसी अस्थान से हुआ इस वास्ते इसको महानाद— और सार शब्द और सत्तशब्द भी कहते हैं और सत्यपुर्ष—और आदि पुर्ष भी इसी का नाम है यह अजर अमर अविनाशी और सदा एक रस है संत इसी पुरुष का रूप याने औतार हैं यह असथान दया पुर्ष का है यहां सदा दया और मेहर ही मेहर और

आनंदही आनंद है इस अस्थान में बे शुमार हंस याने प्रेमी सुर्तें अथवा भक्त जुदा २ दीपों में बसते हैं और सत्यपुर्ष के दर्शन का बिलास और अमीं का अहार करते हैं और यहां काल और कर्म और क्रोध और दंड और पुन्य और पाप और दुख और संताप का नाम और निशान भी नहीं है इसवास्ते इस पुर्ष को दयाल और रहमान कहते हैं और सच्चे और कामिल फ़कीरों ने इसी मुक़ाम को हूत कहा है और इसी मुक़ाक पर सुर्त राधास्वामी पद अव्वल से उतर कर ठहरी और यहां से फिर नीचे उतरी जो कोई इष्ट राधास्वामी का बांधकर और उनके चरणों में दृढ़ निश्चय करके सब असथानों को से करता हुआ इस असथान याने सत्तलोक तक पहुंचा वही राधास्वामी पद में भी

पहुंच सक्ता है इस वास्ते ख़ास उपमाना संतों की सत्तपुर्ष राधास्वामी की है और उनका इष्ट और मालिक सत्तपुर्ष राधास्वामी हैं और इस अस्थान पर पहुंचनेवाले का नाम संत और सतगुर है और कोई संत और सतगुर पदवी का अधिकारी नहीं हैं ॥

[१३] सत्यलोक के नीचे दो अस्थान छोड़कर मुकाम सुन्न याने दसवां द्वार है जहां कि सुर्त सत्तलोक से उतर कर ठहरी और फिर वहां से ब्रह्मांड में फैली और फिर पिंड में उतरी संतों का -आतमपद—और फ़क़ीरों का मुक़ाम लाहूत यही है याने जब इस मुकाम पर सुर्त पांचतत्त्व और तीन गुन और कारन व सूक्ष्म व अस्थूल देह से अलहदे याने निर्मल होकर पहुंचती है तब क़ाबिल भक्ती अपने मालिक की

होती है और यहां से प्रेम का बल ले कर आगे को चलकर सत्यलोक और फिर राधास्वामी पद में पहुंचती है इस अस्थान पर पहुंचने वाले को राधास्वामी याने संत मत में पूरा साध कहते हैं इस अस्थान पर भी हंसों याने प्रेमी सुर्तों की मंडलियां रहती हैं और अमृत का आहार और तरहर के आनंद और बिलास में मगन रहती हैं और—पुर्ष—और—प्रकृति-का ज़हूर इसी अस्थान से हुआ इसी को पार-ब्रह्म पद कहते हैं ॥

[१४] सुन्न याने दशवें द्वार के नीचे मुक़ाम त्रिकुटी है कि जिसको गगन भी कहते हैं ब्रह्म और प्रणव याने ओंकार पद इसी अस्थान को कहते हैं और सच्चे फ़क़ीरों ने इसी मुक़ाम को अर्श अज़ीम और आलम लाहूत

कहा है जोगेश्वर और पच्चे और पूरे ज्ञानी यहां तक पहुंचे और यहां से महा सूक्ष्म तीन गुन और पांच तत्त्व और वेद और कुरान और शरावगियों का आद पुरान और और किताब आसमानी की आवाज़ और कुल रचना याने पैदायश का सूक्ष्म याने लतीफ़ मसाला और ईश्वरी माया याने शक्ति प्रघट हुई—और औतार दर्जे आला जैसे राम और कृष्ण और जोगेश्वर जैसे व्यास और बशिष्ट और रिषभ-देव शरावगियों के इसी अस्थान से प्रघट हुये और महा आकाश भी नाम इसी अस्थानका है और चेतन प्राण भी यहां से ज़ाहर हुये और इस अस्थान के मालिक को परम पुर्ष और खुदाय अज़ीम भी कहते हैं और संत उसको ब्रह्मांडी मन कहते हैं ॥

——:००:——

[१५] इसके नीचे अस्थान सहसदल-कंवल का है और निरंजन ज्योति और शिव शक्ति और लक्ष्मी नारायन और नारायन ज्योति स्वरूप और श्याम सुंदर और अर्श और खुदा नाम इसी मुका-म के हैं—संत मत में इसी अस्थान की साधना अभ्यासियों को अव्वल में कराई जाती है--कुल औतार दर्जे दो-यम के और पैगम्बर दर्जे आला के और औलिया वगैरे और जोगी दर्जे आला इसी अस्थान से प्रघट होते हैं और इसी में समाते हैं और फुक़रा और संत इसी को निज मन कहते हैं इसी अस्थान से तन्मात्रा तत्त्वों की पैदा हुई और उसके पीछे अस्थूलतत्त्व और इंद्रि-यां और प्रान और प्रकृतियां प्रघट हुईं इसी अस्थानका अक्स यानी छाया पह-ले नुकते सुवेदा याने तिल में जो आंखों के पीछे है और फिर दोनों आंखों में

ठहरा हुआ है—जाग्रत अवस्था में जीवात्मा का असथान और इसी अस्थान याने सहसदलकंवल से चिदाकाश याने चैतन्य आकाश जिसको वाजे ज्ञानी ब्रह्म कहते हैं प्रघट होकर तमाम देह याने पिंड में और कुल रचना में जो इस मुक़ाम के नीचे है फैला—और उसी चैतन्य आकाश की क़ुदरत का ज़हूर सब नीचे की रचना में है याने यही आकाश चेतन्य रूप कुल नीचे की रचना का चेतन्य करने वाला है यहां तक तफ़सील दर्जात उलवी यानी आस्मानी की ख़तम हुई इस असथान के नीचे असथान ब्रह्मा बिष्णु और महादेव का है और वह रूप इन देवताओं का है संत और फ़क़ीर जीवात्मा याने सुरत को आंखों के मुक़ाम से अव्वल इसी असथान की तरफ़ ऊंचे को चढ़ाते हैं और सिवाय इसके दूसरा

रसता चढ़ने का नहीं है ॥

[१६] यहां तक दर्जे शब्द याने नाद के मुक़र्रर हैं मुताबिक़ तयदाद इन असथानोंके याने सत्यलोकसे सहसदलकंवल तक पांच शब्द भी हैं कि वे मुर्शिद कामिल याने संत सतगुर पूरे से मालूम हो सकते हैं हर एक मुक़ाम का शब्द अलहदह है और उसका भेद भी जुदा है पांचवां शब्द सत्यलोक में है और उसके परे जो शब्द की धार है उसका बयान कलाम में या लिखने में नहीं आ सकता और न उसका यहां कोई नमूना है कि जिससे उस आवाज़ का उन्मान कराया जावे वह शब्द उस मंज़िल पर पहुंचने के वक़्त अभ्यासी को मालुम होगा—यह पांच शब्द निशान उन पांच असथानों के हैं और उन्हीं की धुन पकड़कर एक असथानसे दूसरे असथान पर दर्जे ब दर्जे ऊंचे की तरफ़ यानी

धुर अस्थान तक सुरत चढ सकती है और किसी जुगतसे खासक इस कल-युग में सुरतका चढ़ना हरगिज़ हर्गिज़ मुमकिन नहीं है ॥

[१७] मालुम होवे कि धुर अस्थान यानी अंतपद जो राधास्वामी है उस में रूप और रंग और रेखा नहीं है बल्कि शब्द भी वहां गुम है वहां का हाल कुछ कहने और लिखने में नहीं आसकता वह बिश्राम का अस्थान फ़ुक़राय कामिल और परम संतों का है ॥

[१८] जैसे कि सत्तलोक से सहसदल कंवल तक छय मुक़ाम उलवी याने आस्मानी हैं इसी तरह छय अस्थान सिफ़ली याने पिंड के भी उनके नीचे हैं जो कि असल में अकस याने छाया उन उलवी अस्थानों की हैं और नाम

और अस्थान जुदा २ लिखे जाते हैं -हरचंद- कि मुताबिक़ उपदेश हज़ूर राधास्वामी साहब के और बमुक़ाबले उस आसान और सहज जुक्ती के जो उन्हों ने दया करके प्रघट की अब अभ्यासी को कुछ ज़रूरत तै करने उन-के नीचे के मुक़ामों की नहीं रही फिर भी वास्ते इत्तला और समझने के और दूर करने शक और संशय और ग़लती के जोकि इस वक़्त में बाचक ज्ञानियों और विद्यावानों ने बहुत पैदा कर दिये हैं इन नीचे के मुक़ामों का भी हाल थोड़ा सा लिखना मुनासिब और ज़रूर मालुम हुआ—इन छय मुक़ामों को खट चक्र कहते हैं और यह सब मुक़ाम पिंड यानी देह से तअल्लुक़ रखते हैं और जो उलवी यानी आस्मानी हैं उनका तअल्लुक़ ब्रह्मांड से है और ब्रह्मांड के परे ॥

[१९] पहला चक्र दोनों आंखों के पीछे है और यहां बासा सुरत यानी रूह का है और वह इसी मुक़ाम से पिंड में दर्जे ब दर्जे नीचे के पांच चक्रों में होकर फैली इसका नाम परमात्मा है और बहुतेरे मत और मज़हबों का ख़ुदा और ब्रह्म और भगवान यही है और यही मुक़ाम जाग्रत अवस्था असली जीव का है और यहां से भी पैग़म्बर और औतार और वली और योगी और सिद्ध प्रघट हुए ॥

[२०] दूसरे चक्रका मुक़ाम कंठ यानी गले में है इस जगह याने जीवातमा का अक्स कंठ चक्र में ठहरकर स्वप्न की रचना दिखलाताहै और विराट स्वरूप भगवान और आतम पद बहुत से मज़हब और मतों का यही है और देही के प्रान का असथान भी यही है ॥

[२१] तीसरा चक्र हृदयमें है और दिल यानी पिंडीमन का यही अस्थान है और शिव शक्ति की छाया का इस जगह पर बासा है इस अस्थान से इंतज़ाम याने बंदोबस्त कुल पिंड का हो रहा है पर मालुम होवे कि यहां पिंड याने जिस्म से मतलब सूक्ष्म शरीर से है और संकल्प बिकल्प सब इसी अस्थान से पैदा होते हैं—रंज और खुशी और खौफ़ और उम्मेद दुख और सुख का भी असर इसी अस्थान पर होता है ॥

[२२] चौथा चक्र नाभ कंवल इस जगह पर बिष्णु और लक्ष्मी का बासा है और परवरश तन की इसी मुक़ाम से हो रही है और भंडार प्रान कसीफ़ याने असथूल पवन का इसी असथान पर है ॥

[२३] पांचवां इंद्री कंवल इस जगह पर ब्रह्मा और सावित्री का बासा है पैदा यश जिस्म असथूल की और उसकी ताकत और काम वगैरे का ज़हूर इसी असथान से है ॥

[२४] छठवां गुदा चक्र इस असथान पर गनेश का बासा है और जोकि अगले वक्त में प्रानायाम याने अष्टांग योग का अभ्यास इसी मुक़ाम से किया जाता था इस वजह से [illegible] याने [illegible] पूजा [illegible] याने गनेशजी की हर काम में मुक़द्दम मुक़र्रर की गई ॥

[२५] अब मालूम होवे कि यह सब असथान उलवी और सिफ़ली अंतर में हैं बाहर के असथानों से कुछ ग़रज़ नहीं है—दर्जात—सिफ़ली गुदा चक्र से

आंखों के नीचेतक ख़त्म हुये इसवास्ते पिंड की हद्द आंखों तकहै और इसी को नौ द्वार का पसाराभी कहते हैंऔर वह नौ द्वार यह हैं दो सूराख़ आंखों के दो कानों के दो सूराख़ नाक के एक सूराख़ मुख का और एक सूराख़ इन्द्री और एक सूराख़ गुदा का ॥

[२६] आंखों के ऊपर मैदान सहस दल कंवल का शुरू हुआ और यही शुरू ब्रह्मांड की है और यह हद्द दसवें दुवार के नीचे तक ख़त्म हो जाती है याने अस्थान प्रनवतक और प्रनव के ऊपर पार ब्रह्मांड कहलाता है—और मुताबिक़ संत मत के दर्जात सिफ़ली अस्थूल सरगुन में दाख़िल हैं और दो अस्थान सहसदल कंवल और त्रिकुटी के निर्मल सरगुन कहलाते हैं और इसके परे का अस्थान याने सुन्न निरगुन ख़ालिस

कहलाता है और उसके पार देस संतों का शुरू होता है इसी सबब से कहा गया है कि अस्थान संतों का सरगुन और निरगुन के पार है और यही सबब है कि कृष्ण महाराज ने अर्जुन को उपदेश किया कि वेदों की हद्द से कि वह त्रिगुण आतमक याने सरगुन है पार हो तब असल मुक़ाम पावेगा फ़क़त---और भेद और कैफ़ियत--रचना वग़ैरे की और जो जो शक्ती और क़ुदरत कि इन सब अस्थानों में रक्खी गई है बहुत से बहुत है यह सब हाल सच्चे अभ्यासी को सतगुर पूरे से मालूम होगा और अपने अभ्यास के वक़्त वह आप देखता जावेगा ॥

[२७] अब इस बात को ज़ाहर करना ज़रूर है कि जब पिछले साध और जोगेश्वर और और महातमाओं

देखा कि भेद अस्थान उलवी याने आसमानी का बहुत बारीक और दक़ीक़ है हरएक की ताक़त उसके समझने की नहीं है और अभ्यास भी उसका प्रानायाम के वसीले से बहुत कठिन है ख़ासकर पिछले वक़्त में जब कि सिवाय ब्राह्मणों के किसी क़ौम को हुक्म मज़हबी किताबों के पढ़ने का नहीं था तब उन्होंने अव्वल भेद सिर्फ़ अस्थान सिफ़ली का प्रघट किया और भेद अस्थान उलवी को गुप्त रक्खा इस मतलब से कि रफ़्ते २ जैसे अभ्यासी चढ़ता जावेगा वैसेही आगे का भेद उसको जताया जावेगा पर यह मारग और उसका अभ्यास इस क़दर थक गया कि अभ्यासी अस्थान सिफ़ली के भी बहुत कम मिले फिर रफ़्ते २ उस वक़्त के बुज़ुर्गों ने मसलहत वक़्त समझ कर कुछ जीवों को जोकि बिलकुल

मूर्ति और अनजान के औतारों और देवताओं वग़ैरे की बाहरमुखी पूजा में लगाया इस ख़याल से कि यह नाम और रूप जो असल में अंतरी मुक़ामों के बयान करके उनकी धारना अव्वल बाहर मुखी करें और फिर अंतर में लावें—पर ख़ास लोगों से—यह काम भी दुरुस्त और पूरा न हुआ तब बाज़े प्रेमियों के वास्ते आसानी अभ्यास के वास्ते औतार और देवता इन आला की सूरत ध्यान करने के लिये और सुर्त और दृष्टि ठहराने के वास्ते बनाईं मगर रोज़गारियों ने इस मौक़े को अपने मुफ़ीद मतलब देखकर मन्दिर और मूरतें बड़े २ औतार और देवताओं के धनवालों को तरग़ीब देकर याने बहला और फुसला कर बनवानी शुरू कीं और अपने रोज़गार के लिये उनकी पूजा बहुत

ज़ोर और शोर के साथ जारी कराई और पुरानी किताबों को जिनमें अभ्यास और उपासना का भेद लिखा था गुप्त करना शुरू किया इसी तरह पर आहिस्तह२ पूजा औतार और देवताओं की मूर्तों की आम जारी होगई और हाल यह है कि ऐसी पूजा करने में किसीको कुछ तकलीफ़ नहीं होती हरएक शख़्स आसानी से कर सकता है इस सबब से सब इसी काम में लग गये और अंतर का भेद रोज़ ब रोज़ गुप्त होता गया और सब के सब नक़ली परमार्थी होते चले गये और रफ़्ते २ तमाम मुलक में यही चाल जारी होगई- और संसारी और भोगी लोगों को यह पूजा बहुत पसंद आई क्योंकि वे अपने मन के मुआफ़िक़ पूजा करने लगे और उसमें भी माया के भोग और बीलास का रस लेने लगे ॥

[२८] अब कि कलयुग का बहुत ज़ोर और शोर के साथ ज़हूर हुआ और जीवों को अनेक तरह के दुःखों में जैसे मुफ़्लिसी और बीमारी और मरी और झगड़े और बखेड़े जो कि आपसमें ईर्षा और विरोध के सबब से पैदा होते हैं- गिरफ़्तार और महा दुखी देखा और यह भी मुलाहज़ा किया कि कुल्ल जीव सीधे रास्ते से बहुत दूर होगये और निहायत भूल में जा पड़े तब सत्तपुर्ष राधास्वामी की दया आई और वे कृपा करके संत सतगुर रूप धरकर संसार में प्रघट हुये और सच्चे मत और मारग का भेद साफ़ २ बानी और बच- न में खोलकर कहा और जब कि उन्हों ने देखा कि परमार्थ में ब्राह्मणों ने अपनी जीविका के कारण बहुत चाला- कीकी है और असल किताबों को सब की नज़र से छिपा दिया है तब दया और

मेहर करके कुल भेद को भाषा बानी में आसान तौर से बर्णन किया और जी-वों को उपदेशभी फरमाया-हरचंद कि ब्राह्मणों का- जाल ऐसा डाला हुआ नहीं था कि यकायक उपदेश संतों का जारी होवे फिर भी आहिस्तहर बहुत से लोगों ने याने जिन्हों ने असल बात को बिचार करके समझा और निरनै किया उन्हों ने उपदेश को मान करके मत संतों का इखतियार किया—जैसे कि मत कबीर साहब और गुरू नानक और जगजीवन साहब और पलटू साहब और गरीब दास जीका जो कि इस अर्से सात सौ वर्ष में जा बजा थोड़ा बहुत जारी हुआ ॥

[२९] पंडित और भेष हर एक संत के वक्त में ज़ोर और शोर अपना दिख-लाते रहे और जहांतक होसका ऐसे

जतन करते रहे कि जिसमें असल मत संतों का जो अस्थान प्रणव तक वेद मत के साथ मुअफ़िक़त रखता है जारी न होने पावे क्योंकि उनको अपने रोज़-गार जाते रहने का ख़ौफ़ पैदा हुआ और उन्हों ने नादान और संसारी जीवों के अनेक तरह से भरमाया और भड़का-या इस सबब से ऐसी तरक़्क़ी संतों के मत की जैसा कि चाहिये नहीं हुई ॥

[३०] यह सच है कि अक्सर कुछ जीव अधिकारी संत मतके नहीं हैं याने जो जीव विषई याने भोगी हैं और उनको सच्ची चाह अपने मालिक के मिलने की या अपने जीव के उद्धार की नहीं है उनकी अक़ल इस मत के समझने में हैरान होती है और जोकि पुराने इष्ट पहिले से बंधे हुये हैं उनके छोड़ने और संतों का इष्ट बांधने में

उनको दिक्क़त मालूम होतीहै और चूंकि पंडित और भेष उनको डराते और भ-रमाते हैं इस सबबसे उनका दृढ़ निश्च-य इस मत पर नहीं आता है और संतोंकी यह मौज है कि वे जारी होना आम इस मत का बिना निश्चय किये हुये और बिना समझे हुये भेद के पसंद नहीं फ़र्माते हैं किसवास्ते कि ऐसा अक़ीदा फिर वही सूरत पैदा करेगा जैसा कि आज कल औतार और देवता-ओं की पूजा में हो रही है याने ज़ाहर में लोग इष्ट राम और कृष्ण और महा-देव और बिष्न और शक्ती और ब्रह्म का रखते हैं और हक़ीक़त में धन और इस्त्री और औलाद और नामवरी के आशिक़ और अधीन रहते हैं अपने इष्ट के हुक्म का कुछ ख़याल भी नहीं और न कुछ उसका ख़ौफ़ है और न कुछ उसकी मुहब्बत याने प्रीत उनके

दिल में जगह रखती है—फिर ऐसे इष्ट से चाहे औतार का होवे चाहे देवता का होवे या संतसत्पुर्ष का या परमपुर्ष पुरनधनी राधास्वामी का होवे कुछ हासिल नहीं होसकता है ॥

[३१] और जो इष्ट कि कला और शक्ती याने करामात देखने से बांधा गया है उसके निश्चय का तो बिल-कुल एतबार नहीं होसकता है क्योंकि जबतक कि दलील अक़ली और मज़-हबी से एकबालका निरनय और तहक़ी-क़ नहीं किया है तब तक उसका निश्चय मज़बूत और क़ायम नहीं—और ये हाल आज कल साफ़ नज़र आता है कि बहुत से लोग जोकि ज़ाहर में हिंदू या मुसलमान हैं मगर बातिन याने अंतर में कोई मज़हब नहीं रखते—इसका सबब यही है कि उन्होंने अपने

मत की किताबों को गौ़र और ख़्याल से नहीं पढ़ा और न समझा और न किसी आ़मिल से तहक़ीक़ किया और इस सबब से उन किताबों के बचनों पर चाहे वे रोचक हैं या भयानक उनको निश्चय और एतक़ाद जैसा चाहिये वैसा नहीं आता है और न कोई अपनी उमरभर में जैसे और कामों की तहक़ीक़ात पूरी२ करता है ऐसेही मज़हब की तहक़ीक़ात करताहै अपने अक़्ल और हवास के मुआफ़िक़ ख़्वाह औरों का हाल देखकर या अपने बुज़ु-र्गों से सुनकर हर एक शख़्स चाहे जिसमें अपना इष्ट बांध लेता है और तहक़ीक़ात उसकी बिलकुल नहीं करता है इष्ट सिर्फ़ नाम के वास्ते है इसी सबब से नाक़िस और बुरे कामों की दुनिया में रोज़ व रोज़ तरक़्क़ी है और जो कि किसी का ख़ौफ़ नहींरहा और न कोई

किसीके हाल को पूछता है इस वास्ते लोग रोज़ ब रोज़ नीचे के दर्जों की तरफ़ झुकते चलेजाते हैं ॥

[३२] पंडित और संन्यासी और साधू और मोलवी जो अगुआ और चलाने वाले वेद मत और क़ुरान के थे वह इस वक़्त में आप इस दौलत से बेनसीब हैं और आप सब से ज़ियाद:ह दुनिया के भोग बिलास और लोभ और मान बड़ाई की चाह में फंसगये हैं फिर अब कौन है कि जो इन सब के आगे पंडित और भेख और गृहस्थियों की ग़लती ज़ाहिर करके इनको सीधा रस्ता बतलावे यह काम सिर्फ़ संतोंका है और जो कोई इस वक़्त में उनके बचनों को अच्छी तरह समझ करके उनका अभ्यासयाने साधना करेगा बेशक वह मन के फ़रेब और माया के

जाल से बचजावेगा-नहीं तो-हर शख़्स को अपने २ काम का इख़्तियार हासिल है इस मुआमिले में ज़ोर और ज़बर-दस्ती नहीं होसक्ती है ॥

[३३] संतों की दया में कुछ शक नहीं कि उन्हों ने आज कल के जीवों के वास्ते थोड़े से में खुलासह सच्चे मत और मारग का और सीधा और सहज रस्ता मालिक की प्राप्ती का प्रघट किया याने अगले वक़्त में अभ्यासी मूल चक्र याने गुदा चक्र से अभ्यास शुरू करते थे और बड़ी मुशकिल के साथ बहुत अर्से में कोई छटे चक्र तक और कोई ख़ास २ सहसदल कंवल या त्रिकुटी तक पहुंच कर जोगी या जोगेश्वर गती हासिल करते थे अब संतों ने शुरू अ-भ्यास सहसदल कंवल से कराया बजाय अष्टांग जोग याने प्रनायाम के जिस्में

दम रोकना पड़ता है सहज जोग याने सुर्त शब्द का मारग जारी किया-इस अभ्यास को हर कोई कर सकता है और नफ़ा इसका प्रनायाम और दूसरे अभ्यासों से मिस्ल मंदिर और हठ जोग वगै़रे से बहुत जि़यादह है वल्कि इन सब अभ्यासों का फल सुर्त शब्द मारगी को उसके रस्ते में हासिल होता चला जाता है इसका मुफ़स्सिल हाल आगे बर्णन किया जावेगा ॥

[३४] अब इतना विचारना चाहिये कि जो लोग नाभ चक्र और हृदय चक्र में ध्यान लगाते हैं वह अस्थान असली से किसक़दर दूर हैं याने जो वह अ-स्थान फ़तह भी हो जावें तो जो कुछ कि उनको हासिल होगा वह अक़्स याने-छाया--अस्थान असली की हो-गी सो फ़तह होना उन अस्थानों का

याने हृदय कंवल और नाभ कंवल का भी इस वक्त में बहुत मुश्किल होगया है क्योंकि प्रानायाम या मुद्रा का अभ्यास किसी से बन नहीं पड़ता है और जब कि इनको भेद असथान उलवी का बिलकुल मालूम नहीं हुआ और दर्जात सिफ़ली को ही उन्हों ने दर्जा उलवी और सिद्धांत समझा फिर वह किस तरह धुर असथान पर पहुंच सक्ते हैं और कुल्ल मालिक का पद उनको कब हासिल होसकता है इसी वासते संत जो कि सब से ऊंचे और महा निर्मल और पाक असथान सत्तनाम और राधास्वामी पर पहुचे-फ़र्माते हैं कि दुनिया के लोग सब भूल और भरम में पड़े हैं-मालिक उनका हैं कहीं है और वह कहीं तलाश करते हैं सो यह तो हाल उन लोगों का है जो कि थोड़ी बहुत अंतरमुख पूजा और सेवा और ध्यान क-

रते हैं या षटचक्र के बींधने में लगे हैं और जो बाहरमुखी हैं यानें तीर्थ और ब्रत और मूरत पूजा में अटके हैं वे तो किसी गिंतीही में नहीं हैं याने बिलकुल गफ़लत और अंधेरे में पड़े हैं और जो उसी काम में लगे रहेंगे और खोज असल मालिक का नहीं करेंगे तो सच्चे मालिक का पता और दर्शन हरगिज़ हरगिज़ नहीं पावेंगे ॥

[३५] षटचक्र याने गुदा चक्र से सहसदलकंवल के नीचे तक छय चक्र गिनती में हैं बड़े अफ़सोस की बात है कि जो-मालिक-और करता-ऐसा बड़ा और मेहरबान और दयाल है कि जिसने सब रचना पैदा की और मनुष्य को उत्तम देही दी और तरह २ और क़िस्म २ की चीजें और सूरतें पैदा कीं उसको लोग-पत्थर-या धात-

की सूरत में या पानी जैसे गंगा जमुना नर्बदा में या दरख़्त जैसे तुलसी या पीपल में या जानवरों में जैसे गाय और हनुमान और नाग में थापकर पूजते और ढूंडते हैं-इन सबसे तो प्रत्यक्ष सूरज और चांद और इन्सान खुद आपही बड़ाहै तो मालिक की पैदाकी हुईचीज़ों को खुदा और मालिक समझकर पूजना और असल मालिक का खोज न करना और बल्कि अपने हाथसे बनाई हुई चीज़ों को आपही पूजना किसक़दर गफ़लत और नादानी और बे परवाई ज़ाहर करना है कि उत्तम नरदेही पाकर उसको मुफ़्त बरबाद करके अधमगति को पाना और चौरासी की नीच जोनि और नर्कों में जाना इससे बड़ा गुनाह और पाप जीव की निस्बत और क्या होगा अगर सच्चे मालिक की ख़बर होती तो उसका कुछ खौफ़ और इश्क़ दिल में

पैदा होता और उन चीज़ों में कि जो बनाई हुई आदमी के हाथ की हैं कैसे डर या प्रीत पैदा होसकती है ॥

[३६] जो सतगुर पूरे हैं याने सच्चे मालिक से मिलेहुये हैं या सच्चे साध और फ़क़ीर हैं अगर वे मिलजावें और जो उनकी दया होजावे याने उनकी दृष्टि मेहर की इस जीव पर पड़े तो इस जीव का काम सहज में बनना शुरू होजावे-मगर एक दिक़्क़त इसमें भी है कि यह जीव उनको मिस्ल और खुदमतलबियों के ठग और लोभी और दग़ाबाज़ समझता है और इस सबब से उनकी सरन क़बूल नहीं करता है और जो शख़्स कि हक़ीक़त में भोगी और रागी हैं और दुनिया की गुला-मी कर रहे हैं वे ऐसा मौक़ा देखकरके याने जीवों को मूरख और भूले हुये

जानकर आप मुर्शिद याने गुरू बन
बैठे हैं और रोज़गार अपना खूब जारी
किया है और जिसक़दर उनसे हो
सका इन ग़रीब और भूलेहुये जीवों
को लालच हासिल कराने धन और
इस्त्री और पुत्र और तनदुरुस्ती और
नामवरी का देके कि जिसकी चाह
असली इनके मन में भी लगी हुई थी
धोके और भरम में डाला याने पत्थर
और पानी और दरख़्त और जानवर
पुजवाकर अपना मतलब किया और
तीर्थों और वरतों और होम और
जज्ञ में भरमाया और पुकारकर सुना-
या कि एक व्रत और एक तीर्थही करने
में मोक्ष मिलेगी—यह ख़याल न किया
कि जो अपना रोज़गार चलाया था
तो कुछ मुज़ायक़ा नहीं पर इन बेचारे
ग़ाफ़िलों को सीधा रस्ता तो बतलाते
कि जिस्में इनका भी कुछ काम बनता

सो इस रासते और जुगत की उनको आपही खबर भी नहीं—पढ़ने पढ़ाने और सुनाने में सब ओस्ताद और होशियार हैं श्रीकृष्ण महाराज ने जो ऊधो जी को उपदेश किया उससे साफ़ ज़ाहर है कि हरचंद वह महाराज की सोहबत और ख़िदमत गुज़ारी में बरसों रहा पर यह न होसका कि उसको परमपद में अपने साथ ले जाते सो यही फ़र्माया कि पहिले योगअभ्यास करो तब अधिकारी परमपद के होंगे ॥

ख़याल करना चाहिये कि जिसवक्त़ सच्चे कृष्णमहाराज की सेवा और टहल और संग से ऊधोजी से प्रेमी क़ाबिल पहुंचने पर्मपद के बिना अभयास नहीं हुये तो जो लोग कि कृष्ण महाराज के सरूप की नक़ल पत्थर या धात की बनाकर उसकी सेवा और टहल में अपना वक्त़ ख़र्च कररहे हैं और सहज

योग के अभ्यास और सतगुर भक्ती से बिलकुल गाफ़िल हैं वह कैसे पर्मपद को पहुंचेंगे-और इसपर-भी यह हाल है कि गुसांई और पुजारी से लेकर जात्रियों और पूजने वालों तक कोई बिरला सच्चे दिल से निश्चय सरत का दुरुस्त रखता है नहीं तो दुनिया की सूरत को याने माया और उसके पदार्थों को सब लोग पूजते हैं और पुजवाते हैं ॥

[३७] यही हाल तीर्थों का भी होगया जोकि अगले महात्माओं ने वास्ते सतसंग और दान पुन्य के और एकांत अस्थान में घर से दूर चंद रोज़ बिसराम करने के लिये मुकर्रर किये थे वह अब मेले और तमाशे होगये हरएक वास्ते अपने मन के आनंद और बिलास और दोस्तों की मुलाक़ात और सैर और

तमाशे और ख़रीदने तौहफ़े और अस-बाब के जाता है भजन बंदगी का कुछ ज़िक्र भी नहीं है-अब ऐसे लोगों को यह समझाया जाता है कि ज़रा ग़ौर करके देखो और अक़्ल से बिचारो कि ऐसी सूरत में तीर्थ कब मुक्ति के दाता होसकते हैं-ब्रत का भी थोड़ा बहुत यहीहाल है कि बतौर त्योहार होगये अगले महात्माओं ने तो वास्ते इंद्री और मन के दमन करने और जाग्रन और पूजन और सतसंग करने के मुक़र्रर कियाथा अब यह दिन वास्ते खेलने शतरंज और चौपड़ और गंजफ़ा और सोने रात और दिन और खाने अच्छे २ और क़िस्म २ के मेवे और शीरीनी वग़ैरे के होगये ॥

[३८] जब कि सूरत पुजा में जो कि वासते मज़बूत करने ध्यान और एकाग्र

करने चित्त के अंतर में मुकर्रर हुई थी यह खराबी हुई कि सिर्फ नाम मात्र केवास्ते आना जाना मंदिर का और सिर्फ हार फूल और जल चढ़ाना मूरत पर रहगया और पुजारियों ने उसको अपना रोजगार समझकर मंदिर में खेल और कूद और नाच व रंग और तमाशे और आरायश जारी किये-और सतसंग जो कि मुख्य था उसका कुछ भी ख्याल नहीं किया और वास्ते खुशी खातिर पूजा करनेवालों के नये २ तमाशे और अरायश मंदिरों में कराने लगे और-तीर्थ व्रत-वगैरे में कारखाना बिलकुल उलटा होगया यहांतक कि जो आंज कल कोई तीर्थ को न जोवे और अपने घर पर नाम मालिक का न लेवै तो वह बहुत पापों और कुकर्मों से बच रहता है और उनसे अच्छा है जो कि तीर्थ करते हैं और तीर्थ के अस्थान

पर अच्छे २ पदारथ ताक़त के खाकर तमाशे देखते हैं और बे फ़ायदे कामों में वक्त को ख़राब करते हैं और बड़ा अहंकार अपने दिल में तीर्थ करने का रखते हैं इस वास्ते यह हालत आज कल के समय और मनुष्यों को देख कर संतों को अति कर दया आई हरचंद कि लोगों को सच्चा परमार्थी और खोजी बहुत कम देखा फिर भी अपनी दया और मेहरसे बच- न और बानी के वसीले से सब को उप- देश परमपद का किया और जिस २ ने उनके वक्त में उनके बचन को चित्त से सुना और समझा और उस पर निशचय किया और अभ्यास में लगगया उसको परमपद में पहुंचाया और बाक़ी सब लोगों के वास्ते बानी कथकर रख- गये कि जो कोई उसको पढ़कर समझें गे वह भी क़द्र संतों की जानकर वासते

प्रापती असल मालिक के खोज संत सतगुर पूरे का करेंगे और कर्म और भर्म याने पूजा मूरत और पानी और जानवर और दरख्त और देवताओं और औतारों से हटकर एक सच्चे मालिक के चरणों में जोकि सब का करतार और सब के परे है दृढ़ प्रीत और प्रतीत करके याने उसके चरणों का दर्शन हासिल करेंगे ॥

[९८] थोड़े से नाम पूरे और सच्चे संतों के और सच्चे साध और फ़कीरों के जो पिछले सात सौ वर्ष में प्रघट हुये यहां लिखे जाते हैं—कबीर साहब तुलसी साहब जगजीवन साहब गरीब दास जी पलटू साहब गुरू नानक दादूजी तुलसीदासजी नाभाजी स्वामी हरि दासजी सूरदासजी और रैदासजी और मुसल्मानों में शमसतबरेज़ मौ-

लबी हुस हाफ़िज़ सरमद मुजद्दिद अ-
लफ़सानी इन साहबों के बचन बानी
देखने से हाल उनकी पहुंच और अ-
स्थान का मालूम होसकता है ॥

[४०] संतों और फ़क़ीरों की पहिचा-
नयेही है कि वे हमेशाह इष्ट और अक़ी-
दा सच्चे मालिक का अंतर में दृढ़
करावेंगे—और जाहर मूरत और
तीर्थ और पोथी और किताब में नहीं
भटकावेंगे और न देवता और औतार
और पैग़म्बरों की पूजा में लगावेंगे और
अभ्यास सहज जोग सुर्त शब्द का कि इ-
सके सिवाय दूसरा रस्ता सच्चे मालिक
से मिलने का नहीं है बतलावेंगे और
अपने वक़्त के मुर्शिद कामिल यानी
पूरे सतगुर की सेवा और ख़िदमत
और प्रीत और प्रतीत का उपदेश क-
रेंगे और इस्त्री और पुत्र और धन

और मान व बड़ाई की आमानी रोज़ व रोज़ कम कराके खोजी और अनुरागी के हिरदय में सच्चे मालिक की प्रीत और प्रेम को बढ़ावेंगे और वे आप भी हरवक़ भजन और ध्यान में रहते हैं और अपने सेवकों को भी इसी काम में लगाते हैं और पिछले वक्तों के धर्म और कर्म और भर्म और शक और शुभे और इष्ट दूसरों का सिवाय सच्चे मालिक कुल के दूर करादेंगे और आहिस्तह २ सब बंधनों अंतरी और बाहरी की असल को काट कर जीतेजी याने इसी देह में मालिक के चरणों में पहुंचादेंगे- पर शर्त यह है कि उनके सतसंग और सेवा से हट न जावे और रोज़ व रोज़ उनके चरणों में प्रीत और प्रतीत बढ़ाता जावे और जैसे वे फ़रमावें वैसे अभ्यास करता रहै ॥

—§०§—

[५१] बंधन मुआफ़िक़ बचन वशिष्ठजी के आठ तरह के हैं-पहिला बंधन इज़्ज़त और हुरमत ख़ानदान याने बंस का-दूसरा इज़्ज़त और हुरमत ज़ात का -तीसरा इज़्ज़त और हुरमत ओहदे याने काम और हुकूमत का-चौथा हया याने लज्जिया और ख़ौफ़ नेकनामी और बदनामी जगत का-पांचवां मुहब्बत इस्त्री और पुत्र और धन और माल का——छठा पक्षपात करना झूठे निश्चय और ओछे मत का-सातवां आसा और तृष्णा और जगत के भोग बिलासों की चाह-आठवां ख़ुदी याने अहंकार ॥

[६२] जिस महात्मा के सतसंग और सेवा से यह बंधन रोज़ बरोज़ ढीले और कम होते जावें और प्रीत और प्रतीत सच्चे मालिक के चरणों में दिनर बढ़ती जावे तो यक़ीन करना चाहिये कि वे रफ़्ते२

सब बंधनों से छुटा कर निज पद में पहुंचादेंगे सिवाय इस के और कोई माकूल पहिचान संत और साध का नहीं है और जो कोई यह इरादा करै कि संतों का हाल उनके लक्षन और चाल चलन को देखकर ग्रंन्थों की लिखी हुई बातों से मिलावे या उनसे करामात चाहे या उनको और किसी तरह से परीक्षा और इम्तहान करै तो यह बड़ी भारी गलती और नादानी है किसवास्ते कि इस नाकिस इनसान याने तुच्छ जीव की क्या ताकत है कि अपनी अलपबुद्धी और ओछी अक्ल और समझ से उनके ज्ञान और चाल ढाल को परख सकै इसको तो सिर्फ अपने मतलब की बात पहिले देखनी चाहिये याने उनके दर्शन और बचन से इसक़दर इसके दिल में शौक़ और अनुराग होवे उनकी पहि-

चाल करै श्रौर कभी होनता श्रौर गरी-
बी से उनके सामने आवे श्रौर अहंकार
श्रौर चतुराई से उनके साथ बरताव
न करै श्रौर उनके तौर श्रार तरीक़
श्रौर व्योहार में अपनी अक़्ल नाक़िस
को दख़ल न देवे श्रौर उसपर अपनी
राय याने अपनी समझ न लगावे किस-
वास्ते कि संत जो काम करते हैं चाहे
ज़ाहर में वह लड़कों का खेलही मालु-
म होवे पर वह कभी मसलहतसे ख़ा-
ली न होगा श्रौर ज़रूर उसमें फ़ायदह
श्रौर लाभ सब जीवों का मंज़ूर होगा
जीव की अक़्ल वहां तक पहुंच नहीं स-
कती है कि जहां उसको नफ़ा श्रौर नुक़सान
की समझ आवे—इस सबब से बहुते-
रे जीव अपनी नादानी श्रौर कमफ़ह
मी से उनकी चाल पर ऐतराज़ लाकर
मुफ़्त अपना नुक़सान श्रौर हर्ज करते
हैं याने उनकी संगत से दूर होजाते हैं॥

[४३] संत नहीं चाहते कि बहुत सी जमाअत और भीड़भाड़ दुनियादारोंकी उनके दरबार में होवे वे सिर्फ़ ऐसे शख़्सों को चाहतेहैं जो हक़ीक़त में शौक़ हासिल करने परमपद का रखते हैं और जिसकी चाह दुनिया की है उनकी सोहबत से उनको निहायत नफ़रत है इसी सबबसे वे कोई शक्ती या क़ुदरत ज़ाहरी अक्सर नहीं दिखलाते हैं कि उसको देखकर संसारी जीव बहुत भाव लावेंगे और संतों के और उनके सच्चे सेवकोंके सतसंग और अभ्यास में खलल डालेंगे—जो कोई उनके बचन और ज्ञान को सुनकर निश्चय लाया उसको अलबत्तह करामात अंतरी याने नूर और प्रकाश सच्चे मालिकके दर्शन और जमाल का दिखलाते हैं और कुछ उसके कारोबार में हमेशाह तरफ़्फ़ाह अंदरूनी फ़र्माते रहतेहैं तबवह उनकी

करामात को अच्छी तरह देखता है और समझता है और फिर यक़ीन भी उसका मज़बूत होता जाता है और उनके चर-नों में प्रीत भी रोज़ बरोज़ बढ़ती जाती है ॥

[४४] और जो संत सतगुर ख़ास तौर पर सतसंग जारी फ़र्माते हैं तो उनके दरबार में अकसर फ़क़ीर और मुहोताज भी आते जाते हैं और उनका आना जाना इसवास्ते मुनासिब और जायज़ रक्खाहै कि जो प्रेमी सेवक धन वग़ैरेकीसेवा करें याने दुनिया के पदार्थ और धन उनकी भेट करें तो वे उसको ग़रीबों और मुहोताजों को ख़ैरात करदेते हैं क्योंकि वे आप इन पदार्थों को अपने पास नहीं रखते हैं ॥

[४५] जहां संत सतगुर मौज से सत-

संग जारी फ़र्माते हैं तो दीदहव दानि
स्तह दो चार बातें चालढाल में ऐसी
प्रघट करते हैं कि जिन से दुनियादार
नाराज़ होजावें या तान और शिका-
यत करने लगें ताकि वे और और
अहंकारी लोग सुनकर उनके दर-
बार में न आवें और सतसंग में खल-
ल न डालें—उनके-दरबार में कोई
चौकी पहरा नहीं रहता कि बुरे और
भले की पहचान करके रोक टोक करे
इसवास्ते उनकी निंदा और शिकायत
जो दुनियादार और अहंकारी लोग
करें वही काम चौकीदारी का देती है
याने संसारियों और अहंकारियों को
दूर रखती है—ऐसे शख़्स शर्म और
हया और ख़ौफ़ और तान दुनयादारों
से वहां नहीं जाते और सिर्फ़ ऐसे
शख़्स जो सच्ची चाहवाले याने खोजी
सच्चे और पूरे परमार्थ के हैं वही लोग

दुनयादारोंका डर और लाज छोड़ कर वहां पहुंचते हैं—सिवाय इसके यह लिखा एकतरहकी परीक्षा भी सखोंस यानेशौकीन के वास्ते है यानी फ़ौरन् मालूम होजाता है कि वह शख्स सच्चा परमार्थीहै या नहीं जो सच्चा खोजीहोगा तो वह कभी बदनामी और नेकनामी दुनिया और मूर्खों की तान से खौफ़ न करके ज़रूर वास्ते हासिल करने अपने असली मतलब याने परमार्थ के हाज़िर होगा और जो झूठा है वह वहां नहीं पहुंचेगा ॥

[४६] देखो दुनियादारोंको जो वे दुनिया को सच्चे दिलसे चाहते हैं किसी अस्थान पर अपने मतलब हासिल करने के वास्ते जाने से नहीं रुकते और न ऐसी जगह दीलता करने से उनको शर्म आती है जैसे ब्राह्मण गैरक़ौमों

की ख़िदमतगारी याने सेवा करते हैं और औलादकी बीमारी दूर कराने को भंगीतक के दरवाजे पर जाने से परहेज़ नहीं करते और अपने इष्ट और मज़-हब का खयाल छोड़कर बहुतेरे ऊंची ज़ात वाले शेखसद्दो और सईय्यदों की क़बरों को और अनेक मलीन देवताओं को और भूत पलीत को पूजते हैं-जब दुनियादार अपने दुनिया के काम के वास्ते अपने धर्म और कर्म को छोड़ देते हैं और परलोक के नुक़सान से नहीं डर-ते तो मालिकके चाहने वालों कीसच्ची चाह कैसे साबित होवे जावे ज़रासी निंदा औरमूरखों की तानकोखयाल और खौफ़ करके संतों के दरबार में हाज़िर नहीं होतेइससे मालूम हुआ कि उनको सच्ची चाह नहींहै और दुनिया के कारोबार में इसक़दर दुख नहीं पाया-उसको इसक़दर अपना दुश्मन नहीं समझा

हैं कि इलाज उसके दूर करने का करें और इसक़दर प्यास मालिक के दर्शनों की नहीं लगी है कि लोकलाज और दुनियादारों की लाज को ताक़ पर रखदें तो ऐसे शख़्स संतों के सतसंग के लायक़ नहीं हैं क्योंकि उनको पूरी गरज़ नहीं है कि संतों के हजूर में दीनता के साथ पेश आवें और अपने दुख की दवा लेवें ॥

[४०] और मालूम होवे कि तानऔर तंज़ और निंदा संतों के सेवकों को भी पक्का और दुरुस्त करती है जो निंदा और बदनामी न होवे तो वह जैसे के तैसे कच्चे रहेंगे निंदा और बदनामी निशान सच्चे प्रेम का है और सिवाय आशिकों याने सच्चे भक्तों के दूसरे की ताक़त नहीं कि दुनिया की बदनामी से बे ख़ौफ़ होवें फ़ारसी में कहा है ॥

मलामत शेहनये बाज़ार इश्क़ अस्त ।
मलामत सैक़ले ज़ंगार इश्क़ अस्त ॥
याने निंद्या और हंसी प्रेम के बाज़ार की कोतवाल है और मैल और काई की सफ़ाई करने वाली है—जो गुरू कि दुनिया के चाहने वाले हैं वह दुनिया और दुनियादारों को निहायत दोस्त रखते हैं और उनको प्यार करते हैं और उनकी सब प्रकार से ख़बर रखते हैं और तरक्क़ी और हुरमत चाहते हैं और बड़ा ख़याल इस बातका रखते हैं कि उनके सेवक नाराज़ न हो जावें ताकि उनके रोज़गार और जीविका में ख़लल न आवे बर ख़िलाफ़ इसके संत जो कि सच्चे और पूरे आशिक़ मालिक कुल्ल के हैं ख़्वाहशमंद इसबात के रहते हैं कि दुनियादार उनके सतसंग को न छोड़ें और अपना साया उनके सेवकों पर न डालें इसवास्ते ज़रूर मला-

मत और निंद्या को अजीज़ रखते हैं कि वही काम चौकीदार का देती है और—ऐसे लोगों को उनके दरबार से हटाये रखती है ॥

[४८] और मालूम होवे कि संतों का क़ायदह कुल्ली यह है कि जब कोई उनके पास आवे तो उसको हिदायत और उपदेश या उसके सामने चरचा और ज़िक्र सत्त बस्तु याने सत्यपुर्ष राधास्वामी का करते हैं और बाक़ी औरों को फ़ानी याने नाशमान और ओछा कहतेहैं—इसी बात को नादान और मूरख लोग निंद्या और हजो देवताओं और औतारों और पैग़म्बरों की समझकर उनको निंदक कहते हैं और यह नहीं ख्याल करते कि जो उन्होंने ब्रह्मा बिष्णु और महादेव और देवताओं और औतारों और पैग़म्बरों को ओछा बतलाया तो फिर ता-

रीफ़ किसकीकी और सबसे बड़ा किसको ठहराया—जो उन्होंने तारीफ़ सत्तपुर्ष और परमपुर्ष पूरन धनी राधास्वामी की की तो यहबात मानने जोग्य है और क़ाबिल तसलीम है क्योंकि जोसबसेबड़ा और मालिक कुल्लका है उसकी तारीफ़ करना और उसके चरणोंमें प्रतीत और एतक़ाद दिलाना और उसकी सेवा पूजा के वास्ते उपदेश करना ज़रूरी काम है और निहायत मुनासिब क्योंकि बग़ैर इसके जीव का उद्धार और नजात मुमकिन नहीं फिर समझना चाहिये कि किसक़दर शर्म की बात है कि कुल्ल मालिक की बड़ाई को सुनकर नाराज़ होना और अपनी मूरखता से असल मतलब को न समझ कर बरख़िलाफ़ संतों के बचन के क़दर करने के उसको बुरा समझना और संतों को निंदक ठहराना ॥

[४९] वेद और शास्त्र भागवत और पुरान वग़ैरे ने अवध याने उनर ब्रह्मा और बिष्णु और शिव और देवताओं की लिखी है और औतार भीजो संसार में आये वह भी संसार को छोड़कर चले गये तब उनकी देहरूप का और ब्रह्माबिष्णु और शिव वग़ैरे की देह का नाशमान होना साफ़ ज़ाहरहै और जब यह रूप नाशमान साबितहुये तो उन के इस सरूप की नक़ल को अबिनाशी समझना या उसका इष्ट और अक़ीदा बांधना किस तरह दुरुस्त हो सकता है अगर उनके निज रूप का भेद लेकर उसका ध्यान करते और उसमें इष्ट बांधते तो भी कुछ थोड़ा सा फ़ायदह होता और नक़ली सरूप में तो कुछ भी हासिल नहीं—इससें साफ़ ग़लती अवाम की पाई जातीहै और जो संत उसको दूर करना चाहते हैं तो

लोग अपने अहंकार और मूरखता से उनको निंदक कहते हैं खासकर रोज़-गारी लोग मिस्ल पंडित और भेष के ज़रूर बुराई करने को तईयार होते हैं ॥

[५०] जो कोई यह कहै कि हम औतारों के उस रूप और पद की उपासना करते हैं जो असल रूप है याने जहां से औतार प्रघट हुये हैं तो यह कहना उनका दुरुस्त है पर इस क़दर फिर भी विचार करना चाहिये कि जो उस रूप या पद की पूजा और इष्ट इख़तियार किया तो इस्से उस पद की पूजा और इष्ट क्यों नहीं इख़तियार करते जहां से औतारों का असली पद पैदा हुआ मेहनत और तरीक़ा दोनों पद की पूजा के बराबर हैं पर उनके फल और फ़ायदे में भेद है इसवास्ते सबसे बड़े और ऊंचे पद की पूजा और इष्ट मुनासिब है और यही संतों का इष्ट है और इसी को संत उप

देशकरते हैं इस उपदेश सेयह ग़रज़ नहीं कि और अस्थानों के मालिक से विरोध और ईर्षा इख़्तियार करना चाहिये बल्कि सतपुर्ष राधास्वामी के इष्ट वाले को भी धारना हर एक पद की जो कि उसको रस्ते में पड़ेंगे करनी पड़ेगी बिना इसके वह अस्थान फ़तह न होवेंगे लेकिन इस राह में चलने से पहिले इष्ट अपना धुर और निज अस्थान का दुरुस्त करना चाहिये और हरएक अस्थान के हाल और कैफ़ियत को ब-ख़ूबी समझ लेना चाहिये किस वास्ते कि दुनिया में अटकानेवाले और भरमाने वाले बहुतहैं और ख़ुदा और परमेश्वर और परमातमा और ब्रह्म और पार ब्रह्म और शुद्ध ब्रह्म और सत्तनाम क-हने वाले भी बहुत हैं पर असल में इ-लमी ज्ञान भी इन पदों का जैसा कि चा हिये और उन मुक़ामात का जो कि इन

के रस्तहे में पड़ते हैं तफ़सीलवार नहीं रखते ऐसे शख़्स हमेशाह धोखा खाते हैं और मालूम नहीं होता कि वे किस अस्थान के धनी याने मालिक को ब्रह्म और ख़ुदा और सत्तनाम कहते हैं इसवास्ते संतों ने दया करके मुमोक्षी को पहिले पहिचान अस्थानों की कराई और फिर इष्ट सत्तपुर्ष राधास्वामी का दृढ़ कराया जोकि सबसे ऊंचे और आख़री पद हैं और फिर अभ्यास रस्ते पर चलने का बतलाया—इस तौर से अभ्यासी मंज़िल तक पहुंच सकता है और सब अस्थानों की कैफ़ियत और हक़ीक़त भी जान सकाता है और अपने पूरे और सच्चे मालिक की ठीक२ समझ लेकर और जिसक़दर कि पहिचान उसकी यहां हो सकती है करके अभ्यास शुरू कर सकता है—और जो भेद नहीं मिला और पहिचान और समझ नहीं

आई तो मालिक के चरणों में न तो सच्ची प्रीत पैदा होगी और न उसको रोज़ बरोज़ तरक्क़ी होगी और न धुरलक पहुंच नेकी ताक़त होगी कहीं न कहीं रस्ते में किसी मुक़ाम पर धोका खाकर ठहर जावेगा ॥

[५१] औतारों और देवताओं के मालिक न होने की निसबत तो इसक़दर कहना ही काफ़ी है कि ये बाद रचना के कोई द्वापर और कोई त्रेता जुग में प्रघट हुये-तब गौर करना चाहिये कि इन के प्रघट होने से पहिले यानेसतजुग में किसकीपूजा होती थी और किसके वसीले से लोग परमपद हासिल करते थे-सो उस वक़्त में उपासना ख़ास हिरनगर्भ कि जिसको प्रणव याने ओंकार कहते हैं जारी थी और उसी का ज़िक्र वेद के उपनिषिदों में लिखा है-फिर क्या वजह

कि उस उपासना को छोड़कर इस वक़्त में लोग मूरत और तीरथ में उलझ गये गंगाजी भी भागीरथ के समय से जारी हुई पहिले नहीं थी तो उस समय में कौन सा तीरथ क़ायम था ग़रज़ यह कि यह जितनी पूजा अब इस समय में जारी हैं नई प्रघट की हुईं द्वापर त्रेता और कलयुग की हैं-असल पूजा मालिक कुल्ल की है कि जो संतों के मत के मुआफ़िक़ सब इख़्तियार कर सक्ते हैं— पर औतार और पैग़म्बरों की पूजा उसी देश में जारी होगी जहां वे पैदा हुये और दूसरी जगह उनको न कोई जानता है और न मान-ता है ॥

[५२] और जो कि औतारों और पैग़-म्बरों ने जो अपने वक़्त में अपने असल पद को जहां से वे आये थे मालिक क़रा-र दिया या ख़ुद आप को मालिक का

भेजा हुआ या उसका प्यारा बतलाया और लोगों से अपनेतईं पुजवाया या अपना इष्टबंधवाया तो यह बात गल़त न थी पर इस सूरत में सिर्फ़ उन्हीं लोगों का गुज़ारा हुआ जो कि उनके वक़्त में मौजूद थे उनको अपनेपद की मुक्ति उन्हों ने बख़्शी पर जोलोग कि उनके बाद उनके मत में आये उन्हों ने सिर्फ़ टेक उनके नामकी बांधली और उनके तन मन की हालत नहीं बदली तो इस टेक से कभी मुक्ति प्रापत नहीं होसकती यही हाल संतों के इष्ट वालों का भी समझना चाहिये किजो जो शख़्स कि संतों के रूबरूआये और उनके चरणों में सेवा और भक्ती की और उनसे उपदेश लिया वह बेशक अधिकारी मुक्ती के हुये और जो पीछे हुये और उन्हों ने सिर्फ़ इष्ट या टेक संतों की बांधली और अपने वक़्त का

पूरा गुरू याने संत या कि पूरा साध न खोजा और जो मारग याने रस्ता और तरीका अभ्यास का कि संतों ने मुकर्रर फ़र्माया है उसपर न चले तो वह भी और मत वालों की तरह से अधिकारी मुक्ती के नहीं होसकते जैसा कि और लोग मूरत या तीरथ और पोथी और ग्रंथों की पूजा में लगेहैं ऐसेही जोसंतों के घरके जीवभी पूजा समाध और झंडा और ग्रंथ वेग़रे में लग गये और संतों के निज स्वरूप और उनके पद का भेद और हाल रसते का और तरीक़ अभ्यास का मालूम नहीं हुआ और बाहरमुखियों की तरह सिर्फ़ समाधि और ग्रंथ वग़ैरे की टेक बांध ली तो वे भी और मतों के बाहरमुखी पूजा करनेवालों की तरह करम और भरम में अटक गये और मुक्ती की प्रापती उनको भी नहीं हुई—असल संतपंथी

वह है कि जो उनके हुक्म के मुआ-
फ़िक़ अभ्यास करै और रस्ते की मं-
ज़िलें पार करके अस्थान सत्तपुर्ष रा-
धास्वामी में पहुंचे— या चलना उस
रस्ते पर शुरू कर दे तो वह वे शक
एक दिन सच्ची मुक्ति को प्रापत होजा-
वेगा— खुलासह यह है-- कि जो पि-
छले महातमाओं या औतारों या पैग़-
म्बरों या देवताओंका सिर्फ़ इष्ट धारन
करने को उनका मत समझैगा उसका
कभी छुटकारा नहीं होगा ॥

[२३] जो सच्चा खोजी है उसको
चाहिये कि अपने वक़्त के पूरे संत या
पूरे साध का खोजकरै याने पूरे सतगुर
जहां मिलें उनका संग करै और उन्हीं में
सब देवता और औतार और महातमा
और संत और साध पिछलों को मौजूद
समझकर तन मन से सेवा और प्रीत

और प्रतीत करके अपना काम उनसे बनवावे-जैसे कि पिछले बादशाह चाहे बड़े मुंसिफ़ और दाता हुये पर उनके हाल सुनने से या उनके नाम लेने से हमको दौलत और हुकूमत और ओहदा नहीं मिल सकता है जो हम को उसकी चाह है तो चाहिये कि अपने वक़् के बादशाह से मिलें तब अलबत्ते काम हमारा बनेगा नहीं तो ख़राबी और हैरानी के सिवाय और कुछ हासिल नहीं होगा मौलवी रूम कहते हैं
चूंकि करदी ज़ाते मुर्शिदराक़बूल।
हम ख़ुदा दरज़ातश आमद हमरसूल॥
याने पूरे सतगुर और मालिक में भेद नहीं है और मुरशिद में और सतगुर में मालिक और औतार सब आगये याने जो मालिक से मिलना चाहते हो तो फ़ुक़रा याने संतों में सतगुर क खोज करना चाहिये और सह स-

हूर नहीं कि संत कपड़े रंगे हुये को क-
हतेहोवें संत उनको कहते हैं जो सच्चे
मालिक से सत्यलोक में पहुंचकर मिल-
गये चाहे वह गृहस्थमें होवें या विरक्त
चाहे ब्राह्मण होवें या और कोई जात में
होवें मालिक का दीदार दुनिया में और
कहींनहीहै या तो अपने अंतर में या पूरे
साध और पूरे संत में जो कि कुल्ल ज-
गत के कुदरती गुरू हैं और खोजने
वालों को इन्हीं दो अस्थान पर दर्शन
मालिक का प्रापत होगा और मूरत तीर्थ
ब्रत और चारधाम और मंदिरों में कहीं
पता और निशान उसका नहीं मिले-
गा मोलवी रूम कहते हैं—

मसजिदे हस्त अंदरून औलिया।
सिजदहगाहे जुमलैहसत आंजाखुदा॥

याने महातमाओं के अंतर में मंदिर
और मसजिद हैं और वहीं जो कोई
मालिक और खुदा का सिजदा करना

चाहे या मत्था टेके और यह भी कहा है कि-गुफ़तपैगम्बर कि हक़ फ़रमूद ह अस्त

मन न गुंजमहेच दर बालावो पस्त ॥

दर दिले मोमन बिगुंजम ईं अजब ।

गर मरा ख़्वही अज़ां दिलहा तलब

याने खुदा ने पैगम्बर साहब से कहा कि मैं कहीं नहीं रहता हूं न आसमान में और न ज़मीन में पर अपने प्रेमी भक्तों के हृदय में रहता हूं जो मुझ को चाहे वहां जाकर उनसे मांगे-इस वास्ते हरएक सच्चे चाहनेवाले मालिक के को मुनासिब है कि अपने वक्त का सतगुरु खोजकर उनसे उपदेश लेवे और उन्हीं के चरणों में तन मन धन से सेवा और प्रीत और परतीत करे थोड़ेही अरसे में उसका काम बन जावेगा—संस्कृत में भी कहा है--गुरुर ब्रह्मा गुरुर विष्णु गुरुरदेवमहेश्वरा । गुरू एव पारब्रह्म तस्मै श्रीगुरुवेनमः ॥

श्रीकृष्ण महाराज ने श्री भागवत और गीता में लिखा है कि जो कोई मुझसे मिला चाहे और मेरी सेवा और प्रीत करना चाहे तो मेरे जो प्रेमी जन साध और भक्त हैं उनकी जो सेवा करेगा वह मेरी सेवा है और मैं उससे प्रसन्न होऊंगा और वही मेरा प्यारा है जो मेरे सच्चे भक्तों से प्रीत करता है और न मैं आकाश लोक में रहता हूं और न मैं पताल लोक में रहता हूं और न मैं स्वर्ग लोक में रहता हूं और न बैकुंठ लोक में रहता हूं जो साध जन मेरे प्रेमी हैं उनके हृदय में मेरा निवास है ॥

[५४] और मालूम होवे कि संत सतगुर ने जो नर स्वरूप धारन किया है वह दिखलाने के वास्ते है पर असली सरूप उनका मालिक के सरूप से मिला हुआ है किसवास्ते कि वह हरवक्त सच्चे मालिक याने सत्तपुर्ष के आनंद

में मगन रहते हैं और सच्चे खोजी को जब तक कि अपने अंतर में निज स्वरूप के दर्शन प्रापत न होवें तब तक मुर्शिद याने सतगुर केही सरूप को मालिक का सरूप समझे और उनके चरणों में प्रीत और प्रतीत बढ़ाता जावे और जब उसको अंतर में निज दर्शन प्राप्त हुआ फिर वह सच्चे मालिक याने पूरे सतगुर के चारणों में मिलगया और सतगुर का सरूप होगया और उसी का काम पूरा हुआ इस्से समझना चाहिये कि जिसका काम बना है या बनेगा अपने वक़्त के सतगुर को प्रीत और सेवा और सतसंग से बना है—और पिछले संत और गुरू व औतार और पैग़म्बार व देवता उपदेश नहीं कर सकते और न अपना निज रूप दिखा सकते हैं इस सबब से उनमें खोज़ी को सच्ची प्रीत और प्रतीत नहीं होसकती है और

जो किसी को प्रीत सच्ची भी हुई तो
वह जैसा है वैसाही रहेगा अलबत्तह
थोड़ी सफ़ाई अंतर की होजावेगी लेकि-
न रूह याने सुर्त का अस्थान नहीं
बदलेगा याने चढ़ाई सुर्त की नहीं होगी
फिर ऐसी मेहनत और दिक़्क़त से जो
कुछ प्राप्त हुआ तो रूह याने सुर्त तो
बदस्तूर अस्थान मलीन पर ठहरी
रही यह सफ़ाई क़ायम नहीं रहैगी
किस वास्ते कि इस अस्थान पर माया
का चक्कर चलरहा है जब ज़ोर करैगा
तबही वह शख़्स अपनी प्रीत और
प्रतीत से गिरजावेगा और भोगों के
सवाद और रस में फसजावेगा और
ये मुमकिन नहीं है कि किसी को निज
सरूप का ज्ञान हासिल होवे या उसके
बिकार बिलकुल दूर हो जावें जबतक
कि सतगुर पूरे की सेवा और सतसंग
करके उनकी दया और मेहर हासिल

नहीं करैगा—बिना वक्त के सतगुरू के बहुत से संसय और शुभे हैं कि उनकी इस मनुष्य को खबर भी नहीं पड़ती और यह अपने मन में जानता है कि मेरे कोइ संसय बाक़ी नहीं रहा पर जब संतों के सतसंग में आवे तब मालुम पड़ै कि किसक़दर संसेय और शुभे बाक़ी हैं और सच्चा प्रेम और परतीत हासिलहोना किसक़दरमुशकिलहै और धुर पद किसक़दर दूर और दराज़ है खुलासह यह कि सच्चा प्रेम और परमार्थ का परापत होना बिना कृपा और मदद अपने वक्त के पूरे सतगुर के किसी तहर मुमकिन नहीं है-औतार-भी जो दुनिया में आये उनको भी गुरू धारन करना पड़ा और सुखदेवजी से ज्ञानी जिनको माता के गर्भ में ज्ञान प्राप्त हुआ था वे उपदेश गुरू के क़दम न वढ़ा सके और खुद नारदजी ने

जिनको ताक़त वैकुंठ तक आने जाने की हासिल थी तो भी बग़ैर गुरू धारन किये हुये वहां बिसरास पाने की गति नहीं हुई फिर इस जीव की क्या ताक़त है कि बिना मेहर मुर्शिद याने सतगुरु पूरे अपने वक़्त के सच्चे परमारथ के रस्ते में क़दम उठा सके ॥

[५५] बाज़े वेद और शास्त्र और ग्रंथ को गुरू मानते हैं और इसमें शक नहीं है कि उनके देखने से बहुतसा हाल मालूम होता है पर जो कोई सिर्फ़ इनके पढ़ने और सुनने में रहा और खोज सतगुर का न किया तो वह भी नादान और मूरख है किस वासते कि जो भेदऔर तरीक़ाअभ्यासका सतगुरवक़्त से मालूम हो सकता है वह लिखनेमें नहीं आसकता है और न उसका ज़िक्र पोथियों और शास्त्र में लिखा है सिर्फ़ उसमें

इशारे किये हैं और वह गवाही के वास्ते काफ़ी हैं बाक़ी गुरू और मुर्शिदपर रक्खा है पोथी पढ़नेसे बिद्याआवेगी पर रस्ता सच्चे मालिक से मिलने का नहीं मालूम होगा इसवास्ते पोथी और शास्त्र मदद-गार हैं और दुरुस्ती ब्यौहार की थोड़ी बहुत उनके पढ़ने और समझने से होसक्ती है याने उनमें इतना मालूम हो जावेगा कि यह कामबुरा है और यह काम अच्छा है और जो कोई दर्दी और पर मा-र्थी है वह बुरे काम को छोड़ता जावेगा और जो अच्छा काम है उसको करना शुरू करेगा-परमन का नास होना और कुल बिकारों का दूर होना बिना मेहर और दया सतगुर पूरे के नहीं होसकता है और जब तक दिल याने मन बाक़ी है तबतक तुख़्म याने बीज बुराई और बिकारों का मौजूद है अगर इस दरख़्त की डाली और पत्ते झड़गये तो क्या

जबतक बीज मौजूद है तो जब कभी मा-
या के भोग और उनके स्वादों का रस
मिलैगा तो डाली और पत्ते सब हरे
हो जावेंगे और नई नई डालियां पैदा
हो जावेंगी इस वास्ते समझना चाहिये
कि वेद और शास्त्र और पोथी से कुछ
भेद मालिक का और गवाही वास्ते
सतगुर की पहिचान के मिल सकती है
और कुछ बुराई और भलाई और पाप
और पुन्य का तमीज़ भी होजवेगी सि-
वाय इसके और ज़ियादह फ़ायदह उन
से नहीं होसकता है और असल और
सच्चे परमार्थ का हासिलहोना तो
सिर्फ़ मुर्शिद याने सतगुर पूरे से होगा
और ऐसे गुरू का खोज करना सच्चे खोजी
को ज़रूर है-जो पिछलों की टेक बांध
कर चुप होरहे वह सच्चे ख़ुबाहशमंद
मालिक से मिलने के नहीं हैं और इस-
वास्ते वह उसका दर्शनभीनहींपावेंगे ॥

[५६] सतगुर पूरेका खोज करके धार-न करना चाहिये और पूरे सतगुरू वही हैं जो सत्तलोक में पहुंचकर सत्यपुर्ष से मिल रहेहैं—उन्हीं को संत कहते हैं और वे जब मिलेंगे तब सिवाय सुर्त शब्द मारग के दूसरा उपदेश नहीं करेंगे और घट में रस्ता और भेद अस्थानों का लखावेंगे और सुर्त याने रूह को सतगुर के सरूप और शब्द के आसरे अंतर में चढ़ाने की ताकीद करेंगे और उनके सतसंग और बानी में भी इसी भेद का ज़िक्र और महिमा सतगुर सत्तपुर्ष और उनके शब्द स्वरू-प की और हाल रस्ते और कैफ़ियत अनुराग और प्रेम का और बैराग बग़ैरे की बर्णन होगी और जहां कहीं सतसंग में क़िस्से कहानी और लीला पिछलों की बर्णन होवे या सिर्फ़ बैराग पर ज़ोर दिया जावे और अंतर का

भेद या जुगत मन के अस्थिर करने और चढ़ाने का कुछ ज़िक्र भी न होवे तो संतों के बचन के अनुसार उसका नाम सतसंग नहीं है क्योंकि सतसंग के अर्थ ये हैं कि जहां कहीं सत्त याने सत्यपुर्ष का संग होवे सो संत खुद सत्य-पुर्ष सरूप हैं उनका संग सतसंग है और जो उनकी बानी और बचन हैं उनमें या तो महिमा सत्यपुर्ष राधास्वामी और उनके संत सतगुर सरूप की बर्णन की है या जुगत उनके निज रूप और निज धाम के प्रापती की या ज़िक्र प्रेम और प्रतीत का उनके चरणों में और उनके शब्द की धुन में या उस हालतका जो अनुरागी अभ्यासी के रस्ते में मुकाम २ पर पहुंचने पर हासिल होती है बर्णन किया है तो ऐसे बानी और बचन का सुनना और उसको बिचारना और उसको धारन करना और अंतर में

उनके चरण अथवा शब्द में मन और सुर्त को जोड़ना यह सतसंग है--और मालूम होवे—कि हर मत के पिछले ग्रंथों में जगह २ निहायत महिमा सत संग की करी है कि ज़रा से सतसंग से भी कोट जन्म के पाप कटते हैं और जीवका कल्याण होता है सो इसकी पहिचान जो कोई चाहै सतगुर के संगमें याने चाहे उनके चरणों में रहकर वानी बचन सुने और दर्शन करे और चाहे उनके अभ्यास में मन और सुर्त को जोड़कर परखलेवे सो जोकोई ऐसी पहिचान करेगा उसको आप इस बात की सचैाटी की प्रतीत हो जावेगी और वह आपदेखलेगा कि थोड़े दिनों के संग से और थोड़े अरसे अंतर में संतों की जुगत की कमाई करने से क्या फल प्रापत होता है ॥

—§०§—

[५७] बड़ा अफ़सोस आता है कि आज कल बहुत से जीव ऐसे लोगों की बड़ी महिमा समझते हैं जो कि तप करते हैं याने पंच अगन तपते हैं या हाथ सुखाये फिरते हैं या जल में खड़े रहते हैं या मेख़ और कीलों पर बैठते हैं या रात दिन मैदान में बिरहना याने नंगे बैठे रहते हैं या खड़े रहते हैं या और किसी तरह अपनी देह को दुख देकर तमाशा दिखाते हैं या अन्न की गिज़ा छोड़ कर सिर्फ़ दूध पीते हैं या रात भर या दिन भर पाट करते रहते हैं या गुफा में बैठकर सुमरन और ध्यान करते हैं या जंगल और पहाड़ में जाकर बसते हैं या मौन धारन करते हैं और किसी से नहीं बोलते हैं या और अनेक तरह के पा-खंड दिखाते हैं--इन लोगों की जाहरी हालत बड़ी आश्चर्य रूप दिखाई देती

है कि उससे देखने वाले के चित्तमें उन-
की बड़ी महिमा समाती है पर जो उनसे
चरचा या बचन किये जावें तो हाल
उनका मालूम पड़े कि किस मतलब से
या कौनसी चाह लेकर या किस मजे
के वासते या किस वजह से यह
काम उन्हों ने इख़्तियार किये हैं तब
असल हाल उनका दरियाफ़्त होजा-
वेगा कि वह सच्चे परमार्थी हैं या कप-
टी हैं या पाखंडी-अब समझना चाहि
ये कि सच्चा परमार्थी कौन है और
कपटी और स्वार्थी कौन है—सच्चा
परमार्थी वह है जो कुल्ल काम वासते
इस मतलब के करता है कि सच्चे मा-
लिक का दर्शन मिले और वह उसपर
इस क़दर मेहरबान होवै कि निज धाम
में बासा देवे ताकि हमेशह का आनं-
द प्रापत होवै और आवा गवन के
सुख दुख से छूटजावे सिवाय इसके

दूसरी चाह इसके अंतर में नहीं है— और कपटी और स्वार्थी और पाखंडी का यह हाल है कि जो काम वे करें इस मतलब से करें कि जिसमें उनकी मान और प्रतिष्ठा और पूजा होवे और राज और धन और भोग मिलें और सब लोग उनकी अस्तुति करें और बड़ा मानें चाहे इसलोकके भोग और मान की चाह होवे चाहे स्वर्ग व बैकुंठ और ब्रह्म लोक की इन दोनों में कुछ बहुत फ़र्क़ नहीं है क्यों कि एक जगह के भोग जल्दी नास होते हैं और दूसरी जगह के देर बाद नाश होते हैं और चाहे कोई स्वर्ग और बै-कुंठ और चाहे ब्रह्म लोक में पहुंचे और मृत्युलोक में रहे दोनों जगह काल और माया के पेट में है सच्ची मोक्ष नहीं होसकती वह बारम्बार ज-न्मेंगा और मरेगा और दुख सुख भो-

गना पड़ेगा कृष्ण महाराजने अर्जुन को इशारा तरफ़ एक चींटे के करके कहा कि यह बहुत बार ब्रह्मा होचुका है और बहुत बार इंद्र और इसी तरह और २ बड़ी२ गती पा चुका है अब इस जनम में चींटा हुआ है—अब समझना चाहिये कि जब ब्रह्मा और इंद्र चौरासी के चक्कर से नहीं बचे फिर जो जीव कि उनके लोक की आसा बांधकर अभ्यास करते हैं वह कैसे अमर होंगे और चौरासी के चक्कर से कैसे बचें-गे इस वास्ते जो कोई कि ऐसे कर्म कर रहे हैं जैसे होम और यज्ञ और तीर्थ और बरत और मूरत पूजा और चार धाम परिक्रमा—और जो जीव कि भक्ती कर रहे हैं जैसे भक्ती सूर्ज और चंद्रमा की या गनेश और शिव और बिष्णु और ब्रह्मा और शक्ती की या औतार सरूप ईश्वर की उन सब की गत ईश्वर के

लोक याने वैकुंठ से ज़ियादह नहीं
होसकती और ऐसी भक्ती करके
अपने २ उपाश के लोक में याने सूरज
लोक चंद्रलोक स्वर्गलोक शिवलोक
बिष्णुलोक शक्तिलोक ब्रह्मलोक और
बैकुंठ लोक वगैरे में पहुंच कर और
वहां कुछ अरसे बास करके फिर मृत्यु
लोक में जन्मेंगे और फिर चौरासी के
चक्कर में आवेंगे और जो कोई और
छोटे देवताओं की भक्ती कर रहे हैं
उनका तो कुछ ज़िक्रही नहीं है वह तो
इसी मृत्युलोक में उसका फल पाकर
याने कुछ माया का सामान या सि-
द्धी और शक्ती हासिल करके फिर चौ-
रासी के चक्कर में आवेंगे ॥

[५८] ऐसे लोग जो कि ब्रह्म ज्ञानी
अपने को कहते हैं आज कल बहुत हैं
और अपने को सबसे उत्तम जानते हैं

ब्रह्मज्ञान हकीकत में इन सब अभ्यासों से जिनका जिक्र पीछे हुआ बहुत बड़ा है पर जो सच्चा होवे और जो पोथियां पढ़कर ज्ञान हुआ उसका नाम बिद्या ज्ञान है उससे मोक्ष कभी हासिल नहीं होगी क्योंकि ज्ञान के ग्रंथों में जगह २ लिखा है कि तत्त्व ज्ञान मन उबासना नास याने जबतक कि मन और बासना का नाश न होगा तबतक तत्त्व याने मालिक का ज्ञान हासिल न होगा और मन और बासना का नाश बिना जोगाभ्यास के मुमकिन नहीं है फिर जब तक कि जोग की साधना नहीं करै तो वह ज्ञान बाचक है इसक़दर तो हर एक शख़्स जिसको बिद्या हासिल हुई कह सकता है और समझ सकता है फिर इससे क्या बड़ाई हुई और मन और इंद्रियों का क्या दमन हुआ आज कल जो अपने तईं ब्रह्मज्ञानी कहते हैं जो उनसे पूछा जावै

कि कहो क्या साधना करके तुमने ज्ञान पाया तो नाराज़ होजाते हैं बाज़ कहते हैं कि पिछले जन्म में करआये जो यह बात सही होती तो उनको साधना की जुगती की ख़बर होती याने याद ज़रूर होनी चाहिये थी क्योंकि ब्रह्मज्ञानी और ब्रह्म में कुछ भेद नहीं है यह कहा है कि ब्रह्म वित ब्रह्मय एवभवती और दूसरा इज़ अलमअलफ़क़र फ़हुवअल्लाह फिर सूफ़ी या ज्ञानी कोसब हालतों की ख़बर होना चाहिये और इन ब्रह्म-ज्ञानियों का यह हाल है कि इनको अपने मन और इंद्रियों की भी ख़बर नहीं कि वे क्या २ काम उनसे कररहेहैं ऐसी सूरत में अपने को ज्ञानी कहना और ब्रह्म मानना यह उनकी बड़ी भूल मालूम होती है और इसका फल वही है जो कर्मियों को मिलैगा याने चौरासी का चक्कर भोगना पड़ेगा ॥

[५९] जो पिछले वक्तों में ज्ञानी हुये जैसे कि व्यास और वशिष्ट और राम और कृष्णा वे सब जोगेश्वर ज्ञानी थे और परकाशक थे और चारों साधन उनके पूरे हुयेथे और इसवास्ते वे यह कैद लगा गये कि जिस्में यह चार साधन नहीं हैं वह ज्ञानी नहीं होसक्ता बल्कि ज्ञान के ग्रंथों के पढ़ने का अधिकारी भी नहीं है और वह चार साधन यह हैं पहिला बैराग दूसरा बिबेक तीसरा षटसम्पती इसमें छयसाधन हैं पहिला सम दूसरा दम तीसरा उपरती चौथातितिकशिया पांचवां सरधा छठा समाधानता—और चौथा ममोक्षता आज कल के ज्ञानियों में इनमें से एक साधन भी नजर नहीं आता उन्हों ने घर त्यागने को बैराग समझा और पोथी पढ़ने और बिचारने को बिबेक और खटसंपती को भी ए

सोहि अपने में घटालिया कि देर अ-
वेर भूख प्यास की बरदाश्त है सर्दी
गर्मी की भी थोड़ी बहुत बरदाश्त कर-
लेते हैं कभी इंद्री और मन भी वक़
पढ़ने और बिचारने पोथियों के रुक
जाती हैं और ज्ञानियों से मिलना और
ज्ञान के ग्रंथों के पढ़ने और पढ़ाने के
शोक़ को ममोक्षता समझलिया जब
यह समझ है तो अब उनसे क्या कहा
जावै इस मूरखता पर अफ़सोस आता
है कि मेला और तमाशह और सैर
देशांतर की और नामवरीके वास्तेभंडारे
करने और झंडा खड़ा करके गोलबांधने
वगैरे की तो इनके चित में एेसी लाग
हैकि रेल केखर्चके और भंडारेखर्च के लि-
ये अदनार गृहस्थियों केरूबरूदीन हो-
कर और राजों और साहूकारों से रुपया
लेकर जोड़ते हैं और फिर अपने तईं
वैरागवान कहते हैं इससे ज़ाहर है

कि उनको बैराग के सरूप और अव-
धी की जरा भी खबर नहीं है और
पोथियां प्रढने और पढ़ाने का शैाक
नित्य बढ़ता जाता है तो आश्चर्य आ-
ता है कि यह कैसा ब्रह्म आनंद इनको प्रा-
पत हुआ कि जिससे ज़रा भी मन इनका
नहीं बदला और जो पूछो तो कहते हैं
कि यह काम हम उपकार के वास्ते क-
रते हैं यह कहना उनका साबित करता
है कि उनको यहभी मालूम नहीं है कि
उपकार किसका नाम है- जोकोई ज्ञा-
नी है-वह जीवें के कल्याण करने के
लिये समर्थ होना चाहिये जीवें को
बंद से छुड़ाकर मोक्ष पद में पहुंचाना
इसका नाम उपकार है और बिद्या
पढ़ाकर लोगें को अहंकारी बना-
ना और खाना खिलाना और मंदिर
और बाग़ और धर्मशाला बनाना
और सदाबर्त लगाना इसका नाम उ-

पकार नहीं है ऐसे उपकार के वास्ते
तो साहूकार और राजे पैदा किये गये
हैं न कि ब्रह्मज्ञानी—ब्रह्मज्ञानी को तो
चाहिये कि जीवों को उनके मनऔर
इन्द्रियोंके बंधन से छुडाकर उनके निज
स्वरूपको लखाना और उसमें पहुंचानां
ताकि आवा गवन से रहित होजावें
औरकष्ट और क्लेश की निवृती होजावे
सो यह बेचारे क्या करें उन्होंने अपने
जीव का कलियान तो कीयाही नहीं
दूसरे का किया कलियान करेंगे न मा-
लूम किया दुख पडे या किया आफत
और घरकी लड़ाई या झगड़े ने घेरा
याकि आलस और सुसती ने दवा लि-
या कि घर बार छोड़दियो और मु-
फ़त में खाना और कपड़ा हासिल क-
रने और अपनी मान और बड़ाई और
पुजवाने की आसा लेकर भेष लेलि-
या और जब यह बात उनको थोड़ी

बहुत प्राप्त होगई तब अपने तईं बड़ा आदमी और उत्तम पुर्ष या कि खुद ब्रह्म सरूप मानलिया और लोगों का धन खैंचना और कोठियां चलाना या रुपैया जमा करके ब्याज लेना और ब्योपार करना शुरू किया ताकि और जियादह नामवरी पैदा करैं और दस बीस सौ पचास साधू घेरकर उन्हें खाना खिलाकर उनसे सेवा करावें और अपनी सवारी में उनको अर्दली बनाकर निकालें और मेलों में हाथी घोड़े पालकी और नालकी जमा करके और इधर उधर से निशान नक्कारे मांगकर शाही निकालते हैं—अब गौर करने का मुकाम है कि क्या ऐसे लोग ब्रह्मज्ञानी होसकते हैं कि जिनके मन में यह हिर्स और हविस भरी हैं और जब उनकी यह ख्वाहशें पूरी होती हैं तब महामगन होते हैं और औरों पर तान और अह-

कार करते हैं और अपने तईं महात्मा पंडित और विद्यावान् और महंत कहलाते हैं और गृहस्थियों से मदद लेकर एक दूसरे गोल पर अपनी रौनक़ और जलूस दिखाकर मान बड़ाई चाहते हैं यह तो अहंकार और मान में भूल गये और मन और माया के चक्कर में ऐसे फसे कि अब निकल नहीं सकते और जो कोई उनको यह कसरें उनके ज्ञान की जतावे तो उससे नाराज़ होकर लड़ने को तईयार होते हैं और उसको अभक्त और नास्तिक और सख़्त और सुस्त कहते हैं ॥

[६०] अब गौर करना चाहिये कि ऐसे ज्ञानियों में और तीर्थ और मूर्त पूजा करने वालोंमें क्या फ़र्क़ किया जावे बल्कि यह बेहतर हैं कि वे अनजान हैं और समझाये से समझ सकते हैं और

वे जो ज्ञानी हैं जान बूझकर माया की तरफ़ मुतवज्जह होते हैं और समझाने वाले को नादान और ईर्षवान कहकर उसका बचन नहीं मानते सबब इसका यह है कि पूरा गुरू दोनों में से एक को भी नहीं मिला जो सतगुर मिलते तो इनसे भक्ती मारग की रीत से सुर्त शब्द जोगका अभ्यास कराते तब कैफ़ि-यत आप खुल जाती याने पहिले सफ़ाई मन का और प्रेम प्रापत होता और फिर सरूपका दर्शन इनको अंतर में मिलता और आनंद उसका आता तब इस मृत्युलोक के भोगों की बासना और आसा न उठाते और ऐसे रगड़ों और झगड़ों में जिसमें कि अब यह लोग फसे मालूम होते हैं न पड़ते ॥

[६१] यही हाल ग्रिहस्थियों का जिनको ऐसे बाचक ज्ञानीयों का संग हुआ दिखलाई देता है ज़बान से तो अपने

तईं ब्रह्म बताते हैं और वरताव और रहनी जो उनकी देखो तो संसारियों से कुछ कम नहीं मालूम होती है और अपनी समझ बूझ का अहंकार दिल में ज़ियादह मालूम होता है यह अहंकार सब पापों का मूल है जिसको अहंकार आया वही नीचे गिरा फिर जैसे यह और जैसे इनके ओस्ताद सिखाने वाले भेष और पंडित दोनों काल और कर्म और माया के चक्कर में पड़े हैं और अयंदह अपनीर कर्नी का फल भोगेंगे इस रीत से उनका उद्धार या मुक्ति नहीं होसकती है ॥

[६२] आज कल बिद्या का विस्तार बहुत है और ब सबब हासिल होने इल्म और अक्ल के बाहरमुखी पूजा हर एक को ओछी और फ़ज़ूल नज़र आती हैं और इसमें कुछ शक भी नहीं कि वे सब

नक़ल हैं और उनसे कुछ भी फ़ायदह
हासिल नहीं होता मगर इन पर यह
उपाशना और अभ्यासकी जिसमें तन
और मन पर दबाओ और ज़ोर पड़ता
है तलाश बहुत कम है और न उसकी
मेहनत और दिक़्क़त किसीको गवारा
होती है इस वास्ते कुल्ल मतों के बिद्या
वान ज्ञान मत को पसन्द करके उ-
सपर एतक़ाद लाते हैं- और बाचक
ज्ञानी या सूफ़ी या ब्रह्म ज्ञानी बनते
चले जाते हैं पर अपनी हालतको ज़
राभी नहीं परखते और न दूसरेसे पर
खातेहैं और बिद्या और बुद्धी कीदली-
लों से लोगों को क़ायल माकूल करने
को तईयार रहते हैं ग़ौर का मुक़ाम
है कि जब तक काम और क्रोध
और लोभ औरमोह और अहंकार
मौजूद हैं तबतक पूरण ब्रह्म पद कैसे
प्रापत हो सकता है अगर दोचार

ग्रंथ पढ़कर समझ लेनेका नाम ब्रह्म ज्ञान है तो ऐसे ब्रह्म ज्ञानी बनने में क्या मेहनत पड़तीहै हर एक शख्स जिसको किसी क़दर विद्या और बुद्धी हासिल है वही ज्ञान केग्रंथ पढ़ सकता है पर सफ़ाई अंतर की मन औरइन्द्री को रोक कर और बात है यह बिना जोगअभ्यास के हासिल होना नामुमकिन है ॥

[६३] जोकोई इन ज्ञानियों से कहे कि ज़रा अभ्यास में बैठो और अपने सरूप में लगो तो मन चंचल उनको ज़रा भीबैठने नहीं देता है जो सुर्त शब्द जोग का अभ्यास संतों की रीति से करते तोअपनी परख होती और मन चंचल कीख़बर पड़ती सो सुर्त शब्द जोगकी ख़बर नहीं और न योग अभ्यास की चाह है बल्कि उसकी ज़रूरत भी न-

हीं समझते हैं और इनमें से बाजों ने अभ्यास क्या मुक़र्रर किया है कि जो कुछ कि पोथियों में पढ़ा है उसका बिचारना और अपने तईं सबसे न्यारा ख्याल करना--कि मैं मन नहीं-तन नहीं इन्द्रीनहीं-पदारथनहीं-मैं माया से अलेहदह हूं-अजन्मा हूं और अलिप्त हूं-और ऐसा हूं और वैसा हूं-और इसी ख्याल करने को अभ्यास माना है और इसी गुनाबन में जो ज़रा निश्चलता मनको हुई उसी को आलम आनंद समझा है-ऐसा आनंद तो शेख़चिल्ली को भी हासिल हुआ था जब उसने यह ख्याल किया कि मैं फ़लाने देश का राजा हूं और ऐसा २ मेरा मकान है और ऐसा जलूस है और जब आंख खोली तो कुछ भी नहीं देखा ॥

[६४] गौर करके देखा जाता है तो ऐसाही हाल इन ज्ञानियों का मालूम

होता है कि अपने को ब्रह्म सरूप और सतचितआनंद सरूप कहते हैं और जब किसी ने कडुवा या तान का बचन कहा तो क्रोध करने को तईयार हैं और जब कोई अच्छा पदारथ देखा या सुना तो उसके लेने और देखने को तईयार हैं और जो किसी ने अस्तुत करी तो उससे मगन और राजी हैं और जो किसी ने निंद्या करी तो उस- से नाराज़ होतेहैं और लड़ने और झगड़ा करने को तईयार हैं और मन की चंचलता करके एक जगह एक देश में कभी नहीं ठहरा जाता जो आतम आनंद आया होता तो क्या यह दशा होती कि देश व देश मारे २ फिरते और सैर और तमाशा देखने के लिये हरएक से खर्च मांगते फिरते और तीर्थों और मंदिरों में करानियों के संग टक्करें मारते---एक शख़्स

जिसके पास कुछ दाम नहीं हैं और जब उसको दो चार हज़ार रुपये मिलगये तो उसी रुपये से अपना कारोबार चलाकर एक जगह आनंदसे चुप होकर बैठ रहता है और जो किसी को कोई नौकरी मिलगई तो फिर कहीं तलाश को नहीं जाता है और उसी के आनंद में मगन रहता है और अट-क और भटक छोड़ देता है—यह कैसे ब्रह्म सरूप ज्ञानी कि अपने को ब्रह्म और आत्मा वतलाते हैं और फिर उनको इसक़दर भी ब्रह्म और आतमा का आनंद न मिला कि दो चार बरस भी एक जगह बैठकर उसका रस लेते और मेला और तमाशा और बाग़ और मकानात और देशान्तर की सैर के लिये मारे २ न फिरते ऐसी हालत से उनकी साफ़ ज़ाहर है कि उनका ज्ञान विद्या ज्ञान याने बातों का

ज्ञान है असली ज्ञान नहीं है और आतम आनंद या ब्रह्म आनंद जिसकी वे ऐसी बड़ाई और सिफ़त करते हैं उनको ज़रा भी प्रापत न हुआ ॥

[९५] असली ज्ञान उसका नाम है कि ब्रह्म का दर्शन साक्षात होजावे उस का रस ऐसा है कि गृहस्थआश्रम क्यासा-त वलायत के राज परठोकर मारता है पर वह रस मिलना चाहिये-संतों के मत में ब्रह्म नाम ईश्वर के लक्ष सरूप का है और यह लक्ष सरूपही माया सबल है पर वेदान्ती ब्रह्म के लक्ष सरूप को शुद्ध और ईश्वर सरूप को बाच और माया सबल कहते हैं मगर संत जोइन दोनों सरूप के परे पहुंचे फ़र्मा-ते हैं कि ब्रह्म के दोनों सरूप याने बाच और लक्ष माया सबल हैं याने एक जगह माया प्रघट है और दूसरी जगह

याने लक्ष से बहुत बारीक और गुप्त है ॥

[६६] अब मालूम होवेकि कुल्ल औतार दर्जे आला के और जोगेश्वर ज्ञानी और जितने कि देवता और पैगम्बर और औतार दर्जे अदना के हैं ईश्वर के लक्ष सरूप याने ब्रह्म से ख़ुवाह उस के वाच सरूप से प्रघट हुये-इस सबब से जो कोई कि उसके वाच सरूप के उपाशक हैं या उसके लक्ष सरूप के ज्ञानी हैं वे सब माया और काल की हद्द से बाहर नहीं हुये और इसी वजह से जन्म मरन से नहीं बच सकते ॥

[६७] संत सतगुर का मारग सब से ऊंचा है और वह उपाशना सच्चे मालिक याने सत्तपुर्ष राधास्वामी की जो ब्रह्म और पारब्रह्म के परे हैं बतलाते हैं ता-कि जीव माया की हद्द से परे होजावे

सच्चे साध की गति दसवें द्वार याने सुन्न पद तक है और वही जोगेश्वर ज्ञानी है और जो कोई कि इस मुकाम के नीचे रहे उनका दर्जा पूरे साध से कम है इसवास्ते हर एक शख़्स को जो कोई अपना सच्चा उद्धार चाहे मुनासिब है कि संतों का इष्ट याने सत्यपुरुष राधास्वामी का इष्ट धारन करे यह नाम राधास्वामी कुल्ल मालिक ने आप प्रघट किया है-जिस किसी को इस नाम का भेद मिलजावे और वह राधास्वामी की सरन लेकर इस नाम का संतों की जुगत याने तरीक़ के मुआफ़िक़ जाप करे या अंतर यह सुमरन करे या अपने अंतर में नाम की धुन सुने तो ज़रूर उसका उद्धार होगा और यह बात चंद रोज़ के अभ्यास में उसको आप अपने अंतर में-साबित होजावेगी॥

[६८] यह ज़िक्र ऊपर होचुका है कि

कुल्ल औतार और जोगेश्वर ज्ञानी और पैगम्बर और जोगी ज्ञानी वग़ैरे मुक़ाम दसवें द्वार यात्रिकुटी या सहसदलकंवल से प्रघट हुये और चारों वेद नाद याने प्रणव से त्रिकुटी के मुक़ाम पर प्रघट हुये और देवता जैसे ब्रह्मा बिष्णु महादेव सहसदलकंवल के नीचे से प्रघट हुये इसवास्ते इन सब का दर्जा संतों के और सत्तपुर्ष के दर्जे से नीचा है याने संतोंकी बड़ाई इन सब से ज़ियादह है यह सब संतों के आधीन हैं और संत सिर्फ़ सतपुर्ष राधास्वामी के आधीन हैं इसी सबब से संत और फ़क़ीरों का बचन और बानी वेद और शास्त्र और क़ुरान और पुरानपर फ़ाइक़ है याने इनसे ऊंचाहै-वेद और क़ुरानऔर पुरान-बतौर क़ानून वास्ते बन्दोबस्त दुनिया के हैं इकमें अव्वल मतलब प्रवृती यानेदुनियाके बन्दोबस्त

और क़याम याने ठहराव का है और थोड़ासा ज़िक्र निर्वृती याने नजात का है और संतों के बचन में असली मतलब निवृती याने मोक्ष का ज़िक्र है इसवास्ते उनकी बानी और बचन सब आसमानी किताबों पर फ़ाइक़ हैं और यही बड़ाई संतों की है क्योंकि वेद और कुल्ल किताबें आसमानी उस अस्थान से प्रघट हुई हैं जहां से तीन गुन और पांच तत्त्व पैदा हुये और माया याने क़ुदरत ने ज़हूरा किया और संतोंका बचन उस अस्थान से प्रघट हुआ जहां माया का नाम व निशान भी नहीं है इसवास्ते वह सिर्फ़ निर्वृती का ज़िक्र करते हैं और यह निरवृती और प्रवृती दोनों का ज़िक्र करते हैं बल्कि प्रवृती का ज़िक्र कसरत से किया है याने वेद में अस्सी हज़ार कर्म कांड के श्लोक हैं यह प्रवृती है और सो

लह हज़ार उपाशना कांड और सिर्फ़ चार हज़ार निबृती याने ज्ञान कांड के श्लोक हैं यही हाल थोड़ा बहुत कुरान और दूसरी आस्मानीं किताबों का है कि तवारीखी हालात बहुत मज़कूर हैं और तरीका अभ्यास और शिनाख़्त मालिक कुल्लका बहुत कम बयान किया है—खुद श्रीकृष्ण महाराज ने अर्जुन से गीता में कहा है कि वेद की हद्दसे जो कि तीन गुन से मिला हुआ है न्यारा हो याने उसके ऊपर असथान हासिल कर श्लोक यह है [त्रिगुनबिषयावेदानिसत्रिगुन । भवेत्अर्जुनः] और ऐसा भी कहा है कि जबतक शख्स बर्णाश्रमके कर्म और धर्म याने उपाशना में फसा है तबतक वह वेदका दासहै याने उसको वेद के कहने पर चलना चाहिये और जब वह माया और तीन गुन की हद्द से निकल गया

तब वेद के सिर पर उसके चरण हैं याने वह वेद के कर्ता का कर्ता है और इसका हुकम वेद के हुकम के ऊपर है- इश्लोक भी लिखा जाता है वर्णाश्रम अभिमानेना । सुर्लदास भवेत्नरः ॥ व- र्णाश्रमविहीनश्च । सुर्तपादोथमूर्द्धनिः ॥ इस तरह मुसलमान फ़क़ीर कामिल भी शरे के पाबंद नहीं बलकिशरे के हुकम पर उनका हुकम है ॥

[६८] यह क़ौल उन संतों के याने सच्चे और पूरे आशिकों के हैं जो कि सत्तलोक में पहुंच कर सच्चे मालिक और खुदा से मिले और वहां से देखते हैं कि बेशुमार त्रिलोकियां और बेशु- मार ब्रह्मांड और हर एक ब्रह्मांड में अलहदे २ ब्रह्म व ईश्वर और माया और शक्ती याने दुनियादारों का खुदा और उसकी कुदरत और बेशुमार औ-

तार और बेशुमार ब्रह्मा और बिष्णु और महादेव और देवता और पैग़म्बर और औलिया और अम्बिया और कुतुब और फ़रिश्ते और जोगेश्वर और ज्ञानी और ऋषीश्वर और मुनीश्वर और सिद्ध और जोगी और इंद्र और गंधर्ब हैं ऐसे जो संत हैं वह कब इनकी तरफ़ दृष्टिलावेंगे और कब उनके हुक्म के पाबन्द होंगे हर एक त्रिलोकी का एक २ धनी याने मालिक है जिसको ब्रह्म और ईश्वर याने मया सबल कहते हैं अस्थान इसका त्रिकुटी है और सहसदलकंवल है ऐसे २ बेशुमार ब्रह्म और ईश्वर उस परमपद याने सत्तपुर्ष राधास्वामी के पैदा किये हुये हैं—सिर्फ़ संत इस पद में पहुंचे हैं और दूसरे की ताक़त नहीं है लेकिन जो कोई उनके बचन पर निश्चा लावे और उनसे प्रेम प्रीत करै और उनका

सतसंग करै उसको भी माया के जाल से अपनी कृपा से निकाल कर सत्तपुर्ष राधा स्वामी के चरणों में पहुचाते हैं ॥

इति

ग़लत नामा ॥
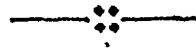
सफ़ा	सतर	ग़लत	सही
१	५	ईत्तला	इत्तला
४	१	हौ	हो
५	१	एसे	ऐसे
५	३	देखती	दीखती
५	५	एसे	ऐसे
५	८	हौ	हो
८	५	स्तंगी	सतसंगी
८	६	रखनाज़ रूरहै	रहता है
१५	१	इसलिये	लेकिन
१५	२	सतसंग निज	सतसंगतो निज
२२	११	ईस	इस
२५	६	एसा	ऐसा
२७	१५	जी	जो

सफ़ा	सतर	ग़लत	सही
२६	१३	स्त्री	इस्त्री
३०	१६	दाया	दया
३४	५	हें	हैं
३७	७	पुजा	पूजा
३६	६	हैं	है
४४	२	नहें	नहीं
४४	११	क़ावू	क़ाबू
४७	६	सथान	अस्थान
४७	८	तोऔर	और
५२	४	सतुत	अस्तुत
६५	८	बह पुरे	वह पूरे
६८	१३	करै	करें
७६	१०	क्योंका	क्योंकि
८१	१८	जेबतक	जबतक
८५	१२	छाड़ने	छोड़ने
८६	५	भस्म	सब भस्म
८८	१६	मी	भी

सफ़ा	सतर	ग़लत	सही
८८	१	गुरुरुत्रों	गुरुत्रों
८८	६	इस तरह षर	इसतरह पर
६०	११	काइ	कोई
६३	१४	टहरते	ठहरते
१०	१	सुनत	सुनते
११३	५	ग़लीती	ग़लती
११७	१७	क्यौंकि	क्योंकि
११८	१	बरनह	वरनह
१२०	१७	भैद	भेद
१२५	३	संहार	सिंघार
१२८	१२	भो	भी
१३०	१६	बहुतेर	बहुतेरे
१३५	१२	नन	मन
१४३	१३	भक्तो	भक्ती
१४८	१८	निर्मलले	निर्मले
१५१	१०	भोगबाता	भुगवाता
१५५	१८	चलंगे	चलेंगे

सफ़ा	सतर	ग़लत	सही
१५७	१३	अैधीन	आधीन
११०	११	अैपनी	अपनी
११२	१	उत्तम	आतम
१७५	६	कर	करे
१७९	४	पुरा	पूरा
१८१	६	मंजर	मंजूर
१८२	७	प्रेम	प्रेम
१८३	१२	प्रथीवी	प्रथवी
१८३	१४	यहां	यह
१८४	६	उतरौंगे	उतरेंगे
१८७	८	बैराठ	बैराट
१९०	१५	फिछलों	पिछलों
१९८	६	इस्त्री	उसइस्त्री
१९९	९	नन्हीं	नहीं
२०१	६	रूप अस्थान	रूपवअस्थान
२०५	१५	औरदूसरे की बड़ाईकीबर्दाश्तनहींरखता	

ग़लत नामा ॥

सफ़ा	सतर	ग़लत	सही
२	२	जोहर	जौहर
४	१५	भो	भी
६	३	यानं	याने
८	५	उसके	उसी
८	६	उसी	उसके
८	१८	उसके	और उसके
६	१३	इसी क़दर	इस क़दर
२०	१३	शार	सार
२०	१८	दया	दयाल
२२	१	पहुंच सकता है	और किसीतरह से नहीं पहुंच सकता है
[illegible]	१६	परम	प्राण
[illegible]	२	जयोत	जोत
२५	५	जयोत	जोती सरुप

सफा	सतर	ग़लत	सही
२५	८	काराई	कराई
२६	१५	वहरूप	वहअसल
२७	१४	बह	वह
२८	२	ख़ासक	ख़ासकर
२९	१	जुदा२	उनके जुद
३१	१	हृदय	हृदय
३२	९	किय	शुरूकिया
३५	७	किसी	और किस
३९	१२	मुकाक़	मुक़ाम
४०	७	के	को
४३	१३	बुजुर्गी	बुज़ुर्गों
४३	१६	इष्ट	ऐसा इष्ट
४४	४	औरे	और
४४	१२	सबके	सबकी
४५	२७	हसिल	हासिल
४५	१७	बजाय	और बज
५२	१०	होंगे	होगे